

गोलापूर्व जैन

» वर्ष : 14 » अंक : 51-53 » जुलाई 2018-मार्च 2019 (संयुक्तांक) » मूल्य : 15 रु.

गोलापूर्व महासभा के शताब्दी वर्ष में श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में नैमित्तिक अधिवेशन



अखिल भारतवर्षीय दि. जैन गोलापूर्व महासभा का 14वाँ परिचय सम्मेलन एवं शताब्दी समारोह



प्रकाशक : अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा, सागर (म.प्र.)

शिरोमणि संरक्षक



परम संरक्षक



विशिष्ट संरक्षक



गोलापूर्व जैन

(त्रैमासिक)

■ वर्ष : 14 ■ अंक : 51-53 ■ जुलाई 2018-मार्च 2019 ■ मूल्य : रु. 15 ■ आजीवन : रु. 501

॥ संस्थापक संपादक ॥

स्व. पं. मुन्नालालजी रांधेलीय व्यायतीर्थ

(1893-1993, सागर)

॥ परामर्श प्रमुख ॥

डॉ. शीतलचंदजी जैन

जयपुर (मो. 09414783707)



॥ मार्गदर्शक ॥

डॉ. नेमिचंदजी जैन

खुरई (मो. 09406538295)

॥ प्रबंध सम्पादक ॥

सुरेश जैन मारौरा

इंदौर

(मो. 8878102700)

श्रीयांश जैन

सागर

(मो. 9827006337)



॥ प्रधान सम्पादक (मानद) ॥

राजेन्द्र जैन 'महावीर'

सनावद

(मो. 9407492577, 7869049749)

ई-मेल : rjainmahaveer@gmail.com



॥ सह सम्पादक (मानद) ॥

श्रीमती (डॉ.) रंजना पटोरिया

कटनी

(मो. 9827279009)

॥ प्रकाशक एवं प्रधान कार्यालय ॥

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा

(रजिस्ट्रेशन नं. 06/09/01/06188/07)

द्वितीय तल, तीर्थकर परिसर, डॉ. पं. पञ्चलाल जैन साहित्याचार्य मार्ग

कट्टरा बाजार, सागर (म.प्र.), फोन : 07582-243101

ई-मेल : golapurvmahasabha@gmail.com

महासभा की सदस्यता शुल्क

■ शिरोमणि संरक्षक	: 1,00,000.00
■ परम संरक्षक	: 51,000.00
■ विशिष्ट संरक्षक	: 31,001.00
■ गौरव संरक्षक	: 21,000.00
■ संरक्षक	: 11,000.00
■ विशिष्ट सदस्य	: 5,101.00
■ सहयोगी सदस्य	: 2101.00
■ आजीवन सदस्य	: 501.00
■ वार्षिक सदस्य	: 240.00

अनुरोध

कृपया महासभा के उपरोक्तानुसार श्रेणी में सदस्य बनें एवं जिन सम्माननीय सदस्यों की सदस्यता राशि/विज्ञापन राशि बकाया है, कार्यालय में शीघ्र भेजकर सहयोग प्रदान करें।

आवश्यक : ● लेखक के विचारों से सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ रचनाएँ कागज के एक ओर हाशिया छोड़कर स्वच्छ हस्तलिखित अथवा टाइप की हुई आना चाहिए। समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भिजवाना आवश्यक है। आयोजनों तथा अन्य अवसरों के समाचार संक्षेप में भेजें। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ अपनी रचनाएँ, लेख, कविता, कहानी, समाचार एवं समीक्षार्थ पुस्तकें राजेन्द्र जैन 'महावीर', 217, सोलंकी कॉलोनी, सनावद, जिला खरगोन (म.प्र.) 451111, ई-मेल rjainmahaveer@gmail.com, पर भेजें। (पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र सागर ही रहेगा।)

लेआउट/डिजाइन : नितिन पंजाबी, वी.एम. ग्राफिक्स, इंदौर (मो. 098931-26800)

निवेदन पाठकों से

'गोलापूर्व जैन' पत्रिका के पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका को स्थायित्व प्रदान करने के लिए आजीवन रु. 500 या वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 50 कार्यालय में नकद या ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित करते रहने की कृपा करें। घर में होने वाले मांगलिक कार्यों में घोषित दान भेजें। -संपादक



हम गौरवशाली हैं जो गोलापूर्व जैन हैं

किसी भी संस्था के 100 वर्ष पूर्ण होना बड़े ही हर्ष व गौरव का विषय होता है। पुरातत्व का एक नियम है कि जिस किसी भी भवन को जो किसी उत्कृष्टता कला, इतिहास को दर्शाता हो और उसे सौ वर्ष हो जाए तो वह प्राचीनता को प्रमाणित करने व सहेजकर रखने की धरोहर हो जाती है। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा भी आज सौ वर्ष पूर्ण करने के बाद समाज के लिए धरोहर ही है, जिसे सहेजने, संभालने, संवारने की जिम्मेदारी वर्तमान पीढ़ी की है। हम महासभा को अपनी धरोहर के रूप में पुष्टि-पल्लवित कर आने वाली पीढ़ी के हाथों में सौंपे जैसे कि पूर्वजों ने हमें समृद्ध और शक्तिशाली विरासत हमें सौंपी है।



जब मैं गोलापूर्व महासभा के इतिहास को देखता हूँ तो पाता हूँ कि इसकी नींव जैन जगत के गाँधी व श्रेष्ठ चिंतक सर्वमान्य व्यक्तित्व क्षुल्लक श्री गणेशप्रसादजी वर्णी के आशीषों तले हुई, उनके पावन आशीर्वाद के तले, उनके सान्त्रिध्य में महासभा के अधिवेशन भी सम्पन्न हुए हैं तो निश्चित है कि यह संस्था बहुत ही महान उद्देश्य को लेकर गठित हुई थी और आज भी अपने उद्देश्यों के प्रति समर्पित है। गोलापूर्व होने का गौरव इसलिए भी होता है कि इस कुल में जन्मे अनेक श्रावक श्रेष्ठियों ने बुंदेलखंड के अनेक तीर्थों को विश्व विख्यात बनाया है जिनमें सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि, नैनागिरि, बहोरीबंद, अहारजी सहित अनेक तीर्थ हैं। पटेरियाजी (गढ़ाकोटा) तो हमारे समाज श्रेष्ठी ने अपनी एक दिन की कर्माई में बना दिया था। यह हमारी समाज की दानशीलता का अभूतपूर्व प्रमाण है कि हमारे तीर्थों को अपनी चंचला लक्ष्मी के माध्यम से हमने उन्नत कर श्रेष्ठ कार्य किया है। बीसवीं शताब्दी में दिगंबर मुनि आचार्य बनकर हमारे समाजजनों ने त्याग, तपस्या, ध्यान, योग का विशाल व्यक्तित्व बनाया है। गौरव होता है कि हमारे कुल गौरव, जिनके नाम से हम गोलापूर्व माने जाते हैं, आचार्य गोललाचार्यजी हमारे आदर्श हुए हैं। (जिनका सम्पूर्ण इतिहास विवरण हम अगले अंक में प्रकाशित कर रहे हैं।) समाधिस्थ मुनिश्री क्षमासागरजी के योगदान को स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया जाएगा।

वर्तमान में अनेक आचार्य दिगंबर मुनि, आर्थिका माताजी सर्वाधिक संख्या में अपने आत्मकल्याण में लगे हैं। समाधिस्थ आर्थिका विशुद्धमती माताजी के गौरव को हम कैसे विस्मृत कर सकते हैं। वर्तमान के प्रभावी आचार्य हमारे गौरव हैं। दीक्षा के बाद उनकी जाति, उपजाति, गोत्र कुल, सब दिगंबर हो जाता है। लेकिन हमारी उपजाति में जन्मे हैं तो हम उनका गौरव इसलिए करते हैं कि हम उनके 'नमनपथगमी' बनें। देश के ज्येष्ठ व श्रेष्ठ विद्वानों में हम पाते हैं कि स्वर्गीय बाबा दौलतरामजी वर्णी, डॉ. पत्रालालजी साहित्याचार्य, पं. दरबारीलालजी कोठिया, प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचंदजी 'पुष्ट', संविधान निर्माण समिति के सदस्य श्री रत्नलालजी मालवीय (मलैया), पं. नीरजजी जैन सहित ऐसे अनेक बुद्धिजीवी समाजजनों की श्रृंखला है जहाँ से हमें गर्व का अनुभव होता है।

गोलापूर्व जैन होने का गौरव हमें हमेशा होना चाहिये। महासभा ने अपने शताब्दी वर्ष में बहुत बड़ा कार्य किया। श्रवणबेलगोला में नैमित्तिक अधिवेशन किया जिसमें सैकड़ों समाजजन एकत्रित हुए और सम्मेलन में वात्सल्य वारिधि, राष्ट्रगौरव आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज संसंघ व उपस्थित त्यागियों के साथ परम पूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारकीर्तिजी भट्टाचार्क महास्वामीजी का सान्त्रिध्य मार्गदर्शन व आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यश्री ने व स्वामीजी ने भरपूर आशीर्वाद दिया व कहा कि हमारा सौभाग्य है कि गोललाचार्यजी के बंशज इतनी बड़ी संख्या में यहाँ आए हैं व उनके नाम पर उनकी उपजाति है।

सागर में सम्पन्न हुआ शताब्दी वर्ष समारोह भी अद्भुत था। जिसे देखकर समाज की समृद्धशाली परम्परा का ज्ञान होता है। गोलापूर्व जैन समाज का भी विस्तृत विश्लेषण किया जाए तो हम पाएँगे कि समाज, धर्म, राजनीति, साहित्य, सेवा, समर्पण, त्याग, तपस्या, दान, तीर्थ रक्षा, सामाजिक सेवा सहित सभी क्षेत्रों में सिरमौर है। सभी क्षेत्रों के प्रमुखजन जो नेतृत्व करते हैं वे हमारे अपने हैं। वही तीर्थों पर श्रेष्ठ सेवाएँ प्रदान करने वाले भी हमारे अपने गोलापूर्व समाज पत्थर से पानी निकालने वाला रहा है। मेहनत के दम पर अपना स्थान बनाने में हमारे समाजजन आज देश ही नहीं विदेश में भी छायाति कमा रहे हैं। 'क्वालिटी' हमारी पहचान है, निष्ठा हमारा धर्म है, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा हमारा कर्म है। किसी भी कर्म के लिए अपना सौ प्रतिशत देना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। फिर भी कुछ बातें हैं जिन्हें हम संगठन के माध्यम से दूर करते हुए समाज को और अधिक उन्नतशील बना सकते हैं।

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा जो अपने सौ वर्ष पूर्ण कर चुकी है, का विस्तृत इतिहास हमारे पास है। एक रोड मेप बन जाए हमारे युवाओं का, बच्चों का, महिलाओं का समाज हित में उपयोग हो, उन्हें आगे बढ़ाने की सोच हमारे पास हो तो हम और आगे जा सकते हैं। आज शताब्दी वर्ष के समाप्तन परम मैं गोलापूर्व जैन पत्रिका के यशस्वी संस्थापक सम्पादक परम श्रद्धेय स्व. पं. मुनिश्रीलालजी राधेलीय न्यायतीर्थ (सागर) को सादर नमन करना चाहूँगा जिन्होंने संस्था को जीवित रखने व सबको जोड़ने वाली पत्रिका का सम्पादन उस समय किया जब किसी भी तरह के साधन-संसाधन उपलब्ध नहीं थे। उन सभी दिवंगत भव्यात्माओं को नमन व श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं सभी समाजजनों से आग्रह करना चाहता हूँ कि हम गौरव करें कि हम गोलापूर्व जैन हैं।

आइये, संकल्प करें कि हम अपने गोलापूर्व समाजजन को महासभा से जोड़कर अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को पूर्ण करेंगे व अपने पूर्वजों की धरोहर को सहेजेंगे, संवरेंगे, इन्हीं भावनाओं के साथ।

मिटा सके जमाना, जमाने में दम नहीं।

हमसे है जमाना, जमाने से हम नहीं॥

● राजेन्द्र जैन 'महावीर'



महावीर जयंती पर विशेष

भगवान महावीर का जैनत्व



» सुबोध मलौया

वैशाली नगर, सागर (म.प्र.) मो.: 9893620732

भगवान महावीर ने अपने उपदेशों में समस्त प्राणीमात्र की आत्मा की शुद्धता, आचरण की पवित्रता पर सबसे अधिक बल दिया। बौद्धिक सहिष्णुता अर्थात् दूसरों के दृष्टिकोण को समझना, उनके जीवन-दर्शन का महत्वपूर्ण अंग रहा है। महावीर के महान सिद्धांतों का प्रभाव जैनेतर भारतीय धर्मों पर भी परिलक्षित होता है। उनके सिद्धांतों में निहित सार्वजनीन एवं कल्याणकारी भावनाओं के कारण ही इसा की दूसरी शताब्दी में आचार्य समंतभद्र ने उनके इस तीर्थ को 'सर्वोदय' नाम दिया।



भगवान महावीर के पूर्व 23वें तीर्थकर पार्श्वनाथ का जन्म ईसा से लगभग 900 वर्ष पूर्व माना जाता है इससे पूर्व 22 तीर्थकर हुए।

भगवान महावीर ऐतिहासिक चरित्र के रूप में आज भी सर्वमान्य हैं। उनके चरित्र पर युग-युगांतर में अलौकिकता, पौराणिकता, ईश्वरीय भगवंता, दिव्यता के आवरण युगीन संदर्भ में डाले गए हैं। महावीर यथार्थवादी थे-उत्कृष्ट यथार्थवादी। उनकी यथार्थवादी प्रतिमा पौराणिक युग में चमत्कारों, अतिशयों और देवी घटनाओं से लद गई। मध्य युग में एक तपस्या मूलक छवि उपस्थापित हुई। लोक-मानस ने उन्हें अतिवादी माना। आधुनिक युग में उनके प्रामाणिक एवं विश्वसनीय मानवीय रूप को अंकित कराने का प्रयास रहा है। महावीर ने अनेकांत के द्वारा जैन धर्म को युगानुकूल रूप दिया। 24वें तीर्थकर भगवान महावीर और प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव के बीच का समय असंख्यात वर्षों का है। भगवान महावीर जैन धर्म के तीर्थ प्रवर्तक कहे गए हैं अतः यह सुविदित है कि जैन तीर्थकरों की परंपरा अति प्राचीन है। प्राचीन शिलालेख, भगवान महावीर की प्राचीनतम मूर्तियाँ, बौद्ध-त्रिपिटक ग्रंथ, जैन साहित्य-आगम-प्राकृत- संस्कृत- अपभ्रंश- प्राचीन हिंदी साहित्य में महावीर-जीवन- चरित्र विषयक सामग्री प्राप्त होती है। भगवान आदिनाथ, भगवान नेमिनाथ, भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान महावीर, ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनकी ऐतिहासिकता निर्विवाद रूप से स्वीकार की गई है। सामान्यतः किसी व्यक्ति की ऐतिहासिकता का निश्चय करने के लिए अभिलेखीय और साहित्यिक साक्ष्य महत्वपूर्ण होते हैं।

महावीर-जीवन-वृत्त का मूल आधार- स्तंभ जैन आगम है। उपलब्ध समस्त जैन साहित्य के उद्गम का मूल भगवान महावीर की वह दिव्य वाणी

भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थकर थे। एक कालजयी व्यक्तित्व, जिनके सिद्धांत व साधना किसी भी काल के थेपेडे में निष्प्रभावी नहीं होते वह सदा काल शाश्वत एक जैसे रहते हैं। महापुरुष विश्व की महान विभूति होते हैं जो मानव मात्र के कल्याण के लिए अपने जीवन को अर्पित कर देते हैं, उनके समर्पण की भावना उन्हें महापुरुषों की श्रेणी में उपस्थित कर देती है। तीर्थकर किसी देवी-देवता के अवतार नहीं, वे तो सामान्य पुरुष होते हैं। तीर्थकर न किसी को शाप देते हैं न आशीर्वाद। यह उनकी सदेह वीतराग अवसरा की संस्कृति है।

अत्यंत प्राचीन काल से ही जैन मत के प्रवर्तक तीर्थकरों की एक लंबी परंपरा चली आ रही थी, ऋषभदेव इस परंपरा के प्रथम तीर्थकर माने जाते हैं और भगवान महावीर चौबीसवें अंतिम तीर्थकर थे। भगवान महावीर का जन्म ईसा पूर्व छठी शताब्दी पहले (गौतम बुद्ध से कुछ वर्ष पहले) हुआ था।

» सुंदरता सर्स्ती है चरित्र महँगा है। घड़ी सर्स्ती है लेकिन समय महँगा है।

है, जो बारह वर्ष की कठोर साधना के पश्चात् केवल ज्ञान की प्राप्ति होने पर लगभग 42 वर्ष की अवस्था में (ई.पू. 557 वर्ष) श्रावण कृष्ण प्रतिपदा के दिन ब्रह्म मुहूर्त में राजगृही के बाहर स्थित विपुलाचल पर्वत पर प्रथम बार निःसृत हुई थी और तीस वर्ष तक निःसृत होती रही थी।

भगवान महावीर ने अपने उपदेशों में समस्त प्राणीमात्र की आत्मा की शुद्धता, आचरण की पवित्रता पर सबसे अधिक बल दिया। बौद्धिक सहिष्णुता अर्थात् दूसरों के दृष्टिकोण को समझना, उनके जीवन-दर्शन का महत्वपूर्ण अंग रहा है। महावीर के महान सिद्धांतों का प्रभाव जैनेतर भारतीय धर्मों पर भी परिलक्षित होता है। उनके सिद्धांतों में निहित सार्वजनीन एवं कल्याणकारी भावनाओं के कारण ही ईसा की दूसरी शताब्दी में आचार्य समंतभद्र ने उनके इस तीर्थ को 'सर्वोदय' नाम दिया। इस सर्वोदय नाम को गाँधी और आचार्य विनोबा के प्रयासों से बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई है। 527 ई.पू. पावापुर में 72 वर्ष की आयु में भगवान महावीर ने निर्वाण प्राप्त किया। यह दिन आज भी दीपावली के रूप में सोल्लास मनाया जाता है।

महावीर स्वामी ने सती प्रथा और पशु बलि की निर्दयता और हिंसा का तांडव देखा तब उन्होंने अपने प्रभावपूर्ण उपदेशों से जगह-जगह होने वाली सती प्रथा तथा पशु बलि जैसे क्रूर कर्मकांडों को बंद कराया।

जैन धर्म किसी एक संप्रदाय का धर्म नहीं है, जैन धर्म को जो अंगीकार करता है वही जैन है। अहिंसा के मूल मंत्र को जैन धर्मावलंबी अपने सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा कायम किए हुए हैं और यही उनकी अमूल्य धरोहर है। जैन दर्शन में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है फिर चाहे वह वैचारिकी हिंसा हो अथवा क्रियात्मक हिंसा; यही अहिंसा का सिद्धांत है। सहिष्णुता, जैन विचारधारा का एक विशिष्ट गुण माना जाता है। भारत के राजनीतिक इतिहास में जैन राजाओं द्वारा अत्याचार या उत्पीड़न का कोई उदाहरण नहीं मिलता, उस समय भी जबकि अन्य धर्मावलंबियों की धार्मिक कटूता ने जैन मुनियों एवं जनसाधारण पर अत्याचार किए। हिंदू संस्कृति में अहिंसा एवं सहिष्णुता का सिद्धांत जैनों की ही महान देन है। इस तथ्य की अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि जैनों ने भारत के अन्य किसी भी संप्रदाय से अधिक सफलतापूर्वक धार्मिक सहिष्णुता का पालन किया है।

भगवान महावीर की महानता से समस्त जैन साहित्य अलंकृत है। भगवान महावीर ने केवल ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् अपनी दिव्य ध्वनि द्वारा

लोक मंगल की भावना से जो हितोपदेश दिया, उसे गणधरों ने सूत्र बद्ध किया। केवली, श्रुत केवलियों ने महावीर के सिद्धांतों एवं चरित्र का अवधारण (स्मृति) एवं संरक्षण किया और उसके पश्चात् सारस्वताचार्य, प्रबुद्ध आचार्य, परंपरा पोषक आचार्यों एवं लेखकों ने महावीर चरित्र के विशाल वाङ्मय की आगम के रूप में हमें प्रदान किया। वस्तुतः महावीर की दिव्य ध्वनि से उद्भुत आगम आदि साहित्य दीप स्तंभ के समान है।

समय के उलटफेर और राजनीतिक उथल-पुथल के कारण वैशाली खंडहरों में बदल गई। हमने तो उसे भुला भी दिया किंतु हर्ष की बात है कि वैशाली ने अपने योग्य पुत्रों को नहीं भुलाया। यहाँ के जैन अवशेषों में एक उर्वर भू-खंड अभी भी शेष है जो यहाँ के नाथ क्षत्रिय परिवार के अधिकार क्षेत्र में है। जहाँ तक इस परिवार के लोगों की स्मृति जाती है, इस भू-खंड पर कभी खेती नहीं की गई क्योंकि उनकी प्रत्येक पीढ़ी यह विश्वास करती आ रही है कि भगवान महावीर का जन्म इसी स्थान पर हुआ था, इसलिए यह पूजनीय स्थान है, इस पर हल नहीं चलाना चाहिए। भारत के धार्मिक इतिहास में यह विशिष्ट घटना है कि इस परिवार के लोग 2500 वर्ष के लंबे समय से इस स्थान की गरिमा और महावीर की स्मृति को अक्षुण्ण रखे हुए हैं।

हमारे पूर्वज जिन संस्कृति के प्रति कितने

श्रद्धावान थे जिन्होंने अनेक विपरीत परिस्थितियों के पश्चात् भी इन जिनबिंबों का निर्माण करवाकर जैनत्व की पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने में अपना महान अविस्मरणीय योगदान दिया। काल के कूर चक्र ने मुस्लिम आक्रान्ताओं के हाथों से जिनबिंबों का भंजन कर जैन संस्कृति को नष्ट करने का असफल प्रयास किया। इस अमूल्य विरासत के संरक्षक के प्रति हमारी बढ़ती उदासीनता और उपेक्षा चिंता का विषय है। जैन संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में हम और आप सभी मिलकर ऐसा सार्थक प्रयास करें जिससे हमारी जैन संस्कृति की पहचान अक्षुण्ण बनी रहे और जैन संस्कृति के प्रति हम गर्वित हो सकें। अहिंसा को अब नारों या जयकारों तक ही सीमित नहीं रखना है उसके जय घोष को प्रत्येक व्यक्तियों के जीवन तक पहुँचाना है। आगम के द्वारा जो संदेश दिया गया हम उसका अनुसरण करें, हम उस दिशा में पुरुषार्थ करते हुए आगे बढ़ें; निश्चित ही हम अपने जीवन को एक सार्थक उपलब्धि देंगे। यदि हमें भी कुछ बनना है तो जीने का अंदाज बदलना होगा और वह भी कल नहीं आज बदलना होगा।

जैनत्व के प्रति हम समर्पित हैं... और रहेंगे। ■



महावीर जयंती : 17 अप्रैल 2019

भगवान महावीर की अहिंसा से आतंकवाद का खात्मा संभव

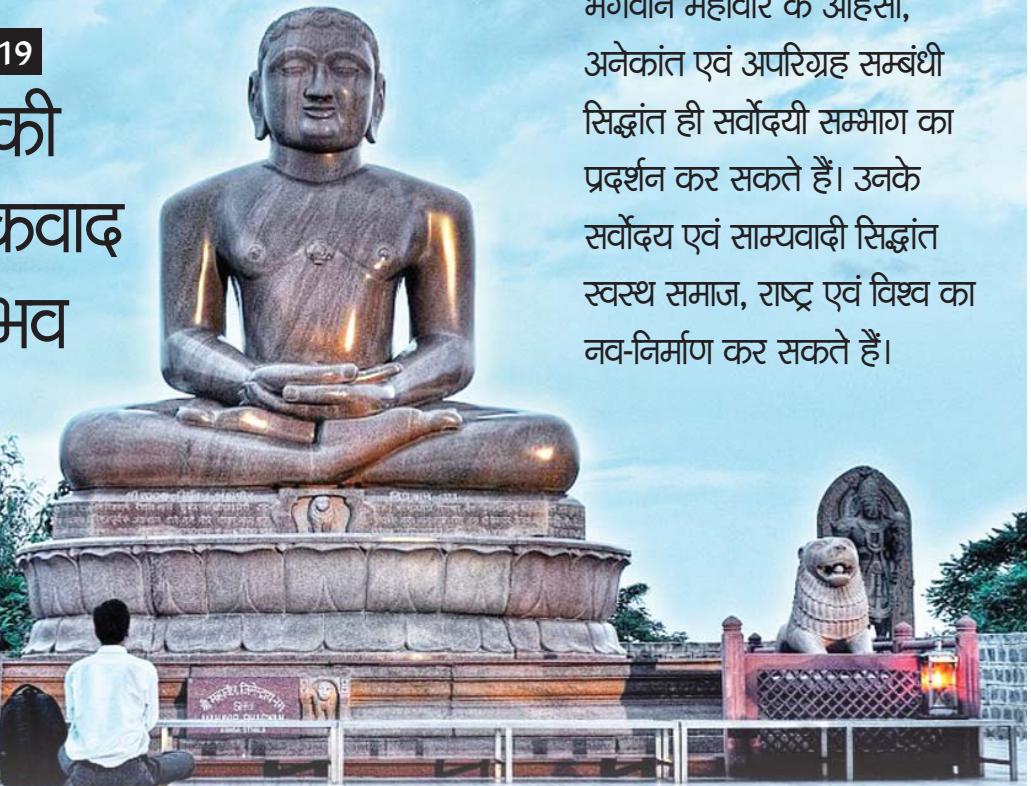


» डॉ. सुनील जैन 'संचय'
ललितपुर (म.प्र.)
मोबाइल : 9793821108

जैन परम्परा के 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर हैं भगवान महावीर। आपको वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर के नाम से भी जाना जाता है। इसा से 599 पूर्व कुण्डलपुर में गजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला की एक मात्र सन्तान के रूप में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को आपका जन्म हुआ था। 30 वर्ष तक राजप्रासाद में रहकर आप आत्म स्वरूप का चिंतन एवं अपने वैराग्य के भावों में बृद्धि करते रहे। 30 वर्ष की युवावस्था में आप महल छोड़कर जंगल की ओर प्रयाण कर गये एवं वहाँ मुनि दीक्षा लेकर 12 वर्षों तक घोर तपश्चरण किया। तदुपरान्त 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पदविहार कर आपने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्म का उपदेश दिया। इसा से 517 वर्ष पूर्व कार्तिक अमावस्या को उषाकाल में पावापुरी में आपको निर्वाण प्राप्त हुआ। भगवान महावीर सहज साधक थे। किसी प्रकार के प्रदर्शन या उपचार का उनकी दृष्टि में कोई मूल्य नहीं था। भगवान महावीर जन साधारण के बीच रहे और साधारण रूप में रहे। समता भगवान महावीर की साधना का उद्देश्य था और वही फलश्रुति बन गयी। उन्होंने किसी भी परिस्थिति में अपने समत्व को धूमिल नहीं होने दिया। सल्कार और तिरस्कार के मध्य उनके संतुलन का सेतु प्रकम्पित नहीं हुआ। अनुकूलता और प्रतिकूलता उनके मन को प्रभावित नहीं कर सकी।

भगवान महावीर के दर्शन के तीन सिद्धांत अहिंसा, अनेकांत और

भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह सम्बन्धी सिद्धांत ही सर्वोदयी सम्भाग का प्रदर्शन कर सकते हैं। उनके सर्वोदय एवं साम्यवादी सिद्धांत स्वस्थ समाज, राष्ट्र एवं विश्व का नव-निर्माण कर सकते हैं।



अपरिग्रह बहुत-सी आधुनिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। इन्होंने 'अनेकांत सिद्धांत' का आदर्श लेकर मानवतावाद की जड़ मजबूत की। विचारों की टकराहट से ही विभिन्न धर्मों में परस्पर द्वेष किया जाता रहा है। भगवान महावीर ने अनेकांत दृष्टिकोण द्वारा इसका समाधान किया है। इसके अन्तर्गत जिसमें सत्याग्रह, व्यापकता, उदारता, सहिष्णुता, अहिंसा, एकता आदि गुण प्रकट होंगे, वह विकास करता हुआ नर से नारायण बन जायेगा। भगवान महावीर ने हमें अनेकांत दृष्टि देकर वस्तु के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराया है। साथ ही साथ हमारे भीतर वैचारिक-सहिष्णुता और प्राणीमात्र के प्रति सदभाव का बीजारोपण भी किया है। इस तरह का उपदेश सार्वभौमिक और विश्व शांति की ओर ले जाने वाला है।

भगवान महावीर सामाजिक क्रांति के शिखर पुरुष थे। महावीर का दर्शन अहिंसा और समता का ही दर्शन नहीं है बल्कि क्रांति का दर्शन है। उन्होंने एक उत्तर और स्वस्थ समाज के लिए नये मूल्य-मानक गढ़। उन्होंने प्रगतिशील विचारों को सही दिशा ही नहीं दी बल्कि उनमें आये ठहराव को तोड़कर नई क्रांति का सूत्रपात किया। वर्तमान युग में नैतिकता का पतन जिस वेग से हो रहा है, उसकी कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। बहुमुखी अध्ययन की इस विभीषिका में भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह सम्बन्धी सिद्धांत ही सर्वोदयी सम्भाग का प्रदर्शन कर सकते हैं। उनके सर्वोदय एवं साम्यवादी सिद्धांत स्वस्थ समाज, राष्ट्र एवं विश्व का नव-निर्माण कर सकते हैं।

भगवान महावीर का जीवन मानवीय मूल्यों की स्थापना की एक अनवरत और शाश्वत ज्योति की कहानी है। वे मानते हैं जीवन को समान

सुख और दुख की अनुभूति होती है। उन्होंने बताया कि धर्म आराधना में जाति, वर्ग, लिंग आदि के भेद के लिए कोई स्थान नहीं है। उन्होंने साम्राज्यिकता और जातीयता को दूर किया। अहिंसा परमो धर्म जैसे महान मूल्य की स्थापना कर भगवान महावीर ने कहा कि सदाचार और नैतिकता का जीवन व्यतीत करते हुए व्यक्ति स्वयं ईश्वरत्व को प्राप्त कर सकता है। दूसरों की भलाई करने, पीड़ितों की रक्षा करने, सहायता करने और पददलितों को सन्मार्ग की राह दिखाने को ही वे धर्म की आन्तरिक क्रियायें मानते थे।

भगवान महावीर के उपदेशों को आज नए संदर्भों में देखने की आवश्यकता है। हम जहाँ-तहाँ खनिजों की खोज में पृथ्वी को खोद रहे हैं, जल और वायु को प्रदूषित कर रहे हैं, पर्यावरणविद् स्थावरों की इस हिंसा से चित्तिं हैं। विकास के नाम पर विलासता बढ़ रही है और साथ ही अमीर और गरीब के बीच की खाई भी बढ़ रही है। बड़े कष्टों को कौन कहे! हम तो अहंकार पर छोटी-सी चोट पड़ने पर संसार को सिर पर उठा लेते हैं। पचासों बातें हैं, महावीर जन्म कल्याणक पर उनमें से कोई पांच बातें ही तो ग्रहण करें। ऐसा करके हम अपना आत्मकल्याण कर सकेंगे। अहिंसा और अनेकांत महावीर के उपदेशों का मर्म थे। उन्होंने किसी भी जीव की हत्या न करने, किसी को पीड़ा न पहुंचाने, किसी को दास न बनाने, किसी को यातना न देने और किसी का शोषण न करने का उपदेश दिया। द्वेष और शत्रुता, लड़ाई-झगड़े और सिद्धांतहीन शोषण के संघर्षत विश्व में जैनधर्म का अहिंसा का उपदेश न केवल मनुष्य के लिए बल्कि जीवन के सभी रूपों के लिए एक विशेष महत्व रखता है। इसमें करूणा, सहानुभूति, दान, विश्वबंधुत्व और सर्वक्षमा समाविष्ट हैं। अनेकांत और उसका मर्म अहिंसा प्रतिकूल चिंतन और विचार जागृत होने पर सहिष्णु बने रहने का उपदेश देता है। भगवान महावीर के मुख्य पांच सिद्धांतों में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह मुख्य थे। अहिंसा उनका मूलमन्त्र था यानी 'अहिंसा परमो धर्म' क्योंकि अहिंसा ही एकमात्र ऐसा शास्त्र है जिससे बड़े से बड़ा शत्रु भी अस्त्र-शस्त्र का त्याग अपनी शत्रुता समाप्त कर आपसी भाईचारे के साथ पेश आ सकता है।

महावीर ने अहिंसा को बड़े व्यापक अर्थ में लिया है। प्राणियों का वध करना ही उनकी दृष्टि में हिंसा नहीं है वरन् जिन कारणों से दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुंचती हो, कष्ट और दुख पहुंचता हो वह सब हिंसा है और ऐसा कोई कर्म न करना जिससे किसी को शारीरिक या मानसिक आघात पहुंचता हो अहिंसा के अंतर्गत आता है। संसार के प्रथम और अंतिम व्यक्ति हैं भगवान महावीर, जिन्होंने अहिंसा को बहुत की गहरे अर्थों में समझा और जिया। महावीर अहिंसा के दृढ़ उपासक थे, इसलिए किसी भी दिशा में विरोधी को क्षति पहुंचाने की वे कल्पना भी नहीं करते थे, उसको भी नम्रता और मधुरता से ही समझाते थे। महावीर स्वामी का सबसे बड़ा सिद्धांत अहिंसा का है, जिनके समस्त दर्शन, चरित्र, आचार-विचार का आधार एक इसी अहिंसा सिद्धांत पर है। उनका कहना था अहिंसा ही सुख शांति देने वाली है। अहिंसा ही संसार का उद्धार करने वाली है।

महावीर स्वामी ने अपने समय में जिस अहिंसा के सिद्धांत का प्रचार किया, वह निर्बलता और कायरता उत्पन्न करने के बजाय राष्ट्र निर्माण और संगठन करके उसे सब प्रकार से सशक्त और विकसित बनाने वाली थी। उसका उद्देश्य मनुष्य मात्र के बीच शांति और प्रेम व्यवहार स्थापित करना था, जिसके बिना समाज कल्याण और प्रगति की कोई आशा नहीं रखी जा

सकती। सचमुच महावीर अहिंसा के महान साधक एवं प्रयोक्ता थे। महावीर की अहिंसा जीवों को न मारने तक सीमित नहीं थी। उसकी सीमा सत्य-शोध के महाद्वार का स्पर्श कर रही थी। इसीलिए महावीर स्वामी की मूल शिक्षा अहिंसा है।

भगवान महावीर स्वामी ने अहिंसा का जितना सूक्ष्म विवेचन किया है। वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। महात्मा गांधी ने अहिंसा के बल पर ही अपने देश को स्वतंत्रता दिलायी। अहिंसा केवल निषेधात्मक ही नहीं होती, अपितु विधेयात्मक भी होती है। तीर्थकर महावीर के प्रत्येक उपदेश में अहिंसा निहित है। उन्होंने अहिंसक क्रांति के बल पर विश्वबंधुत्व और विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त किया। बाह्य हिंसा की अपेक्षा यदि मानसिक हिंसा दूर हो जाय तो अहिंसक क्रांति का मार्ग आसानी से प्रशस्त हो सकता है। सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना ही आधुनिक युग की सच्ची अहिंसा है। अहिंसा सभी धर्मों का मूलाधार है। कोई भी धर्म हिंसा की आज्ञा नहीं देता। अहिंसा की रक्षा के लिए हमारी प्रत्येक क्रिया निर्मल होनी चाहिए। भगवान महावीर की पहले की अपेक्षा आज अब अधिक जरूरत है। वाणी में स्याद्वाद, विचारों में अनेकांतवाद, आचरण में अहिंसा का पालन ही महावीर ने श्रेष्ठ धर्म बताया। वैचारिक हिंसा से यदि बचा जाय तो अहिंसा का मार्ग प्रशस्त होता है। भगवान महावीर के समय सबसे बड़ी बुराई वैचारिक मतभेद की पनपी थी और आज भी दुनिया इसी कारण आतंक से संघर्ष कर रही है। इसके लिए महावीर ने स्याद्वाद और अनेकांत का अमोघ सूत्र दिया, जिससे यह बुराई समाप्त हो सकती है। आतंकवाद के सफाये के लिए आज महावीर स्वामी की अहिंसा की परम आवश्यकता है। भगवान महावीर अपने आचरण व व्यवहार के बल से तीर्थकर कहलाए। आज जरूरत इस बात की है कि शत्रुता का अंत हो जाए और विश्व में शांति स्थापित हो, क्योंकि बैर से बैर कभी नहीं मिटता। मैत्री और करूणा से ही मानव के मन में, घर में, नगर और देश तथा विश्व में शांति और सुख अमनचैन की धारा बहती है।

आज देश, विश्व बड़े बुरे दौर से गुजर रहा है, हम बड़े-बड़े बमों, आणविक शक्ति से देश में शांति की स्थापना का सपना पाल बैठे हैं। मैं दृढ़ निश्चय से कह सकता हूँ विश्व को आतंकवाद जैसी भयंकर बुराई पर काबू पाने के लिए तीर्थकर महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा एवं अनेकांत-स्याद्वाद के सिद्धांत को अपनाये तो सारथक हल निकल सकता है। अहिंसा के महानायक भगवान महावीर ने जल, वृक्ष, अग्नि, वायु और मिट्टी तक में जीवत्व स्वीकार किया है। उन्होंने अहिंसा की विशुद्ध व्याख्या करते हुए जल और वनस्पति के संरक्षण का भी उद्घोष किया। जल के मितव्ययता पूर्ण उपयोग और वनस्पति की सुरक्षा की बात कही। उनके सिद्धांतों पर चलकर हमें वृक्ष बचाओ, संसार बचाओ उक्ति को अमल में लाना होगा। प्रकृति व पर्यावरण के विरुद्ध चलने से भूकंप, सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोपों का हमें सामना करना पड़ रहा है। अतः महावीर स्वामी के सिद्धांतों को आत्मसात कर पर्यावरण व प्रकृति की सुरक्षा का संकल्प हमें लेना होगा। भगवान महावीर का मार्ग आज के युग की समस्त समस्याओं, मूल्यों की पुनः स्थापना, जीवन में नैतिकता का समावेश, भोगवादिता, संग्रह तथा हिंसा से बचने के लिए सही रास्ता है। महावीर का सदेश आज राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों में उपयोगी है। भगवान महावीर आदर्श पुरुष थे। उन्होंने मानवता को एक नई दिशा दी है। उनके बताये हुये अहिंसा, सत्य आदि मार्गों पर चलकर विश्व में शांति हो सकती है। ■



भगवान महावीर की 2618वीं जयंती पर विशेष हमने जिंदगी भर कुछ न किया...!

» राजेन्द्र जैन 'महावीर'

217, सोलंकी कॉलोनी, सनावद (म.प्र.)
मो.न. 9407492577

किसी मशहूर कवि की पंक्तियाँ है - 'हमने जिंदगी भर कुछ न किया, सिर्फ सोचते रहे। धूल चेहरे पर जर्मी थी, आईना पौँछते रहे।' क्या इस तरह की हालत हमारी वर्तमान में हो रही है। जैन जगत में आज जहाँ देखो वहाँ से जो खबरें आ रही हैं वे चिंतनीय-निंदनीय व शर्मनाक हैं। जैन समाज का भारत देश में जो स्थान है वह रहा है वह किसी से छुपा हुआ नहीं है। आज यह समाज जिस दौर से गुजर रहा है वह दौर निराशाजनक है। हम पहले दिग्म्बर-श्वेताम्बर में बंटे, वर्तमान में जितने मंदिर हैं, जितने आचार्य, मुनिराज, विद्वत्जन हैं उनके नाम पर बटे हैं। पहले हम मुनियों-आचार्यों के नाम पर एक थे, आज सबके मुनि-आचार्य, आर्थिका अलग-अलग हैं। जिस नगर में जितने विद्वत्जन हैं उनने ही गुट उनके समर्थक व विरोधी हैं। विरोधी ऐसे हैं कि राजनीतिक दल तो एक हो जाते हैं लेकिन ये भक्तजन कभी एक नहीं होते हैं। और बड़े मजे की बात यह है कि यह सब एकता के लिए ही हो रहा है। आयोजन शक्ति प्रदर्शन के केन्द्र बन गए हैं। प्रत्येक आयोजन की कमेटी अलग होती है। भोजन-टेन्ट-आवास-बैण्ड बाजे-भीड़ आयोजन की सफलता का पैमाना हो गया है।

मेरी यह सोच है कि आयोजन के बाद यह निकलकर आए कि आयोजन-प्रयोजन-प्रवचन से इतने लोगों ने जैनधर्म के सिद्धान्तों को अंगीकार करने का निर्णय लिया है तो आयोजन की सार्थकता है, प्रभावना के नाम पर सब लोग जिन्हें जिस माध्यम से मौका मिलता है वे सब केवल



और केवल अपनी ही भावनाएँ थोपने का कार्य करते नजर आ रहे हैं।

भगवान महावीर ने भी क्या इस तरह ही प्रभावना की होगी?

प्रख्यात लेखक डॉ. जयकुमार जलज जी ने तो लिखा है कि 'महावीर के जीवन में कोई हड्डबड़ी नहीं है। उनका जीवन भागता हुआ नहीं, ठहरकर सोचता हुआ, शांत, तटस्थ और चीजों के बिना किसी पूर्वग्रह के समझने के लिए प्रस्तुत होता हुआ है। जीवन में कोई नाटकीयता नहीं, कोई तमाशा नहीं।' वे लिखते हैं 'दूसरों के लिए उपादान बनने की कोशिश एक प्रकार ही हिंसा है।'

'भगवान महावीर किताबी आदमी नहीं है। वे अकेले तत्वज्ञान को मुक्ति के लिए पर्याप्त नहीं मानते, उनका ज्ञान अनिवार्यतः जीवन से जुड़ा हुआ है। वे मानते हैं कि अगर ज्ञान सम्यक है तो वह जीवन में उतरेगा ही, जैसे पानी अपने आप ढ़लान की तरफ चल देता है।'

यही तक नहीं वे लिखते हैं कि 'अकेला ज्ञान मुखौटा है तो अकेला आचरण भी मुखौटा है। और मुखौटा सदैव दुःख का कारण बनता है। मनुष्य का सबसे बड़ा दुःख ही यह है कि वह हर वक्त एक मुखौटे में रहता है, जो वह है नहीं वह दिखना चाहता है।'

'भगवान महावीर का बुनियादी चिंतन' में लिखी एक-एक बात बताती है कि भगवान महावीर की मंशा क्या थी और हम कहाँ से कहाँ आ गए हैं। बड़ा दुःख होता है कि प्रत्येक आयोजन जो प्रभावना के नाम पर सम्पन्न हो रहा है वह समाज में दुर्भावना फैला रहा है। आखिर इसके लिए जिम्मेदार कौन है?

क्या हमारा धर्म विकृत हो गया या इसके अनुयायी भगवान महावीर के मन में अपनी बात डालकर इसे विकृत कर रहे हैं। बड़ी दुविधा की स्थिति है। हम तुलनात्मक रूप से देखे तो पाते हैं कि -

1. हमारा सामाजिक ताना-बाना छिन्न-भिन्न हो गया है।
2. विगत 20-25 वर्षों में पंथवाद के नाम पर सिर फुटव्हल की स्थिति निर्मित हुई है।
3. प्रत्येक ग्राम नगर में मंदिर निर्माण की बाढ़ आई हुई है।
4. तीर्थक्षेत्रों पर नवनिर्माण अत्याधुनिक सुविधाएँ व लकड़ी जीवन की सारी सुविधाएँ हैं जो जैन आगमानुकूल नहीं कहीं जा सकती हैं।

5. शिक्षा संस्थान बढ़ रहे हैं लेकिन वे अपने पंथ की कट्टरता में एक ऐसा वर्ग पैदा कर रहे हैं जो धर्म के नाम पर झगड़ सकता है शांत नहीं रह सकता है।

6. भगवान महावीर ने जो 'निर्वाण' का पथ बताया उसे इस तरह से प्रस्तुत किया जा रहा है कि 'निर्वाण' नहीं

पहले 'निर्माण' करें, जैसे 'निर्माण' के माध्यम से ही मोक्ष होगा।

7. मंदिरों-तीर्थों से पुजारी-मैनेजर गायब है, मिल नहीं रहे है, मिल रहे है तो अजैन है जिनकी निष्ठा तीर्थों-मंदिरों के प्रति नहीं पदाधिकारियों के प्रति ज्यादा है।

8. प्रत्येक तीर्थ पर अभिषेक-शांतिधारा की बोली और पुण्य कमाने की होड़ ने आमजनों की श्रद्धा को नुकसान पहुँचाया है।

9. मुनि-आर्थिका माताजी के विहारों में पैदल चलने वाले समास हो गए है।

10. मुनि-आर्थिका संघों में चौका लगाने वाले अधिकांशजन किराये के लगाना पड़ रहे है।

11. बड़े-बड़े शहरों में एक-दो संत का निर्वाह भी मुश्किल हो रहा है।

12. धर्म के नाम पर, मंदिरों के नाम पर बंटते हम लोग जीवन्तजनों से वह व्यवहार कर रहे हैं जो क्षम्य नहीं है।

13. चारित्रिक शिथलाचार की खबरें आम हो रही है। जिनकी खबरें नहीं छपी हैं उनके बारे में समाज को मालूम है लेकिन कोई बोलता नहीं है, पकड़े जाने पर बोलते हैं। पुराने किस्से चटखारे लेकर सुनाये जाते हैं।

14. वाणी का, परिग्रह का, आचरण का, चर्या का शिथलाचार तो मानों क्षम्य जैसा हो गया है। इस पर रोक न होने से ही शिथलाचार का लेवल बढ़ रहा है।

15. पुरस्कारों के नाम पर विद्वान-पत्रकार-लेखकों-वक्ताओं-शोधकर्ताओं को सम्मानित कर अपने 'अंडर' में करने की प्रवृत्ति चरम पर है।

16. जो मोबाइल बच्चों को देने का निषेध करते हैं वहाँ स्मार्टफोन अनिवार्य अंग बनता जा रहा है।

17. अब विद्वत् गोष्ठियाँ, सम्मेलन विद्वानों की योग्यता पर नहीं, अपने-अपने गुट व स्वयं की प्रशंसा सुनने के लिए होते हैं, साथ ही उनके ठेके दिये जाने लगे हैं।

18. लगभग हर संघ, मुनिराज-आर्थिकाजी की अपनी एक पत्रिका है, आम निष्पक्ष पत्र-पत्रिकाएँ प्रायः बंद होती जा रही हैं क्योंकि उनके पाठकों में निरन्तर कमी आ रही है।

19. प्रभावी साधु कैसा भी हो वह एकल विहारी हो, आर्थिका-ब्रह्मचारिणी दीदी के साथ हो उन्हें कोई संस्था-विद्वान-पदाधिकारी बोलने नहीं जाते, जो प्रभावी नहीं है उसपर सब अंगुली उठाते हैं, यह दोहरा मापदण्ड है।

20. सारा खेल 'अर्थ' पर निर्भर हो गया है जिसके पास आर्थिक समृद्धि है चाहे वह संस्था हो, साधु हो, श्रावक हो, विद्वान हो, लेखक हो उसे सब छूट है क्योंकि वह अर्थ से सब मेनेज कर लेता है।

21. नवीन तीर्थों की स्थापना में ज्यादा जोर है प्राचीन तीर्थों पर कब्जे हो रहे हैं, पुजारी-मैनेजर मिल नहीं रहे हैं।

22. अहिंसा परमो धर्म की जय बोलने वाले हम लोग दूरस्थ अंचलों में स्थित तीर्थों के पुजारी-मैनेजर को जो वेतन देते हैं उतना अध्यक्ष-महामंत्री के घर पर दूध का प्रतिमाह बिल आता है। शोषण की पराकाष्ठा तीर्थों पर देखी जा सकती है।

23. आयाजनों में बैण्ड-टेन्स-मंच-माला-माईक-स्वप्रशंसा हेतु लाखों

रूपये खर्च करने वाले हम लोगों का क्या उद्देश्य है यह समझ में ही नहीं आता है।

24. कहने को तो हम 24 तीर्थकरों की जय बोलते हैं लेकिन उनमें भी भेदभाव व अपनी आकांक्षा के लिए उन्हें किसी भी मनोकामना की पूर्ति के लिए बता देना, यह कार्य तेजी से बढ़ रहा है।

लिखने को तो बहुत कुछ है, भगवान महावीर की जयंती पर उनकी प्रशंसा ही लिखना चाहिये, लेकिन मैने प्रयास किया है कि भगवान महावीर का जीवन वह नहीं था जैसा आजकल हो रहा है। किसी कवि ने दो लाइनों में सब कुछ स्पष्ट कर दिया है -

सत्य अहिंसा, दया प्रेम से,

अपना बस इतना ही नाता है।

दीवालों पर लिख देते हैं,

दीवाली पर पुत जाता है॥

विचारणीय है, भगवान महावीर के सिद्धान्त ही थे कि अहिंसा के दम पर महात्मा गांधी ने भारत आजाद कराया। विश्व में सबसे ज्यादा प्रांसंगिकता है तो आज भगवान महावीर के सिद्धान्तों की। लेकिन आज बड़ा दुर्ख होता है कि 'हम भगवान महावीर को तो बहुत मानते हैं लेकिन उनकी बातों को बिल्कुल नहीं मानते हैं।' आखिर कब तक यह चलेगा। हम हमेशा लड़ते ही रहते हैं। लड़ाई अहंकार की है। विचार करने की आवश्यकता है कि बच्चों को 'मेरी भावना' का पाठ सिखाया जाय या 'समयसार' की गाथाएँ रटाइ जाए। आज समयसार तो कण्ठस्थ हो रहा है लेकिन 'मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे' गायब हो रहा है। धार्मिक सहिष्णुता गायब हो रही है। तेरह-बीस, मुनि-मुमुक्षु की खाई ऐसी हो रही है कि विवाह संबंध भी अब इस कारण टूट व जुड़ रहे हैं। एक ऐसे समाज का निर्माण हो रहा है कि हमें ऐसा लड़का चाहिये जिसके घर 'चौका' न लगता हो, अब बताईये 'चौका' मतलब द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की शुद्धि होता है, जहाँ 'चौका' की बात ही न होती हो ऐसा घर क्या जैन का हो सकता है।

आयोजनों की अंधी दौड़ में उलझा जैन समाज महावीर जयंती पर प्रदर्शन करता है, जुलूस में जगह-जगह ठंडाई से स्वागत और प्लास्टिक डिप्पोजल फेंके जाते हैं जिनमें लाखों चीटिंग्यां पैरों तत्ते मरती हैं और हम 'जियो और जीने दो', 'अहिंसा परमो धर्म' की जय बोलते हुए आगे बढ़ जाते हैं। बड़ा ही विचारणीय है।

'महावीर ने तो कॉटॉनों को भी नरमाई से छुआ।'

लोग बेदर्द हैं कि फूलों को भी मसल देते हैं।'

भगवान महावीर या अन्य किसी भी महापुरुष की जयंती हम इसलिए मनाते हैं कि उन्होंने जो विचार दिये उन पर विचार हो, लेकिन मूर्तियों को पूजने व विचारों को मलमल की पोटली में रखकर आरती उतारने का कार्य तेजी से हो रहा है। विचार अब जुलूस की भव्यता, दो मीठे, दो नमकीन, भोजन की शानदार व्यवस्था, ड्रेस-अप, सजावट पर ही हो रहा है। अहिंसा-दया-करुणा-प्रेम-स्नेह का भाव गायब है इसलिए जिन चीजों को सामान्य तौर पर खाने को मना किया जाता है वे रेडिमेड वस्त्रों, चॉकलेट, बिस्किट, आईस्क्रीम, कच्चे दूध की ठंडाई, बाजार की मिठाई अब जुलूस की प्रभावना में बॉटी जा रही है, क्या सन्देश जा रहा है। जिस धर्म के व्यक्ति की यह प्रामाणिकता रही है कि उसके व्यक्तव्य को न्यायालय में इसलिए मान्य

किया जाता था कि वह 'जैन' है। आज हमने मात्र 50-100 वर्षों में अपनी क्या स्थिति बना ली है, इसके लिए सब जिम्मेदार है।

आज जैनियों की संख्या बढ़ाने के लिए तो विचार हो रहा है लेकिन मिटती हुई 'साख' को बचाने के लिए विचार कहाँ हो रहा है। भव्य आगवानी, भव्य आयोजन, भव्य भोजन, भव्य प्रदर्शन, भव्य पाण्डाल, भव्य ड्रेसअप में उलझे हम लोग अपने मनुष्य भव की भव्यता को भूलते जा रहे हैं और गाते रहते हैं, - भव वन में जी भर धूम चूका, कण-कण को जी भर-भर देखा-यदि विचार करें तो पाएँगे यह सब मृगतृष्णा है, जिसकी पूर्ति कभी नहीं होगी।

भगवान महावीर की जयंती पर 2618 वर्ष बाद भी यदि मन रही है तो उनके विचारों की शाश्वतता के कारण अन्यथा कई आए और कई चले गए।

आइये -

विचारों को आदर्श बनाये। भव्य आयोजन नहीं, भव्य स्वयं को बनाये।

भगवान महावीर ने हर किस्म के भेदभाव, आडम्बर और कर्मकाण्ड का विरोध किया है। आज क्या जरूरी है क्या गैर-जरूरी है इसमें फर्क करना जरूरी है।

आचार्यश्री विद्यासागरजी का कथन है -

'तन' के काले को तो 'मोक्ष' मिल सकता है, लेकिन 'मन' के काले को मोक्ष कभी नहीं मिल सकता।

आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी कहते हैं -

आचरण सहित ही जीवन है, उसके बिना जीवन व्यर्थ है।

आचार्यश्री ज्ञानसागरजी कहते हैं -

श्रद्धा की अभिव्यक्ति आचरण के माध्यम से होती है।

आचार्यश्री ज्ञानसागरजी कहते हैं -

जीवन को जागृति मय बनाओ, बिना जागृति के मनुष्य भव बेकार है। कथन है -

हमारा विचार और आचरण न बिगड़े।

विचार बिगड़ेगा तो आचरण बिगड़ जाएगा।

ऐसे कई कथन हैं जिन्हें हमारे आचार्यों, महापुरुषों ने अपने अनुभव से



कोई भी बाहर का डॉक्टर बुन्देलखण्ड के गांवों में आकर प्रेक्टिस नहीं कर सकता। क्यों?

क्योंकि, बुन्देलखण्ड के मरीज की बीमारी बुन्देलखण्ड के डॉक्टर के अलावा कोई समझ ही नहीं सकता। जैसे :- छाती में आंधी सी उठत है, आंखें गड़त हैं, पेट जरत है, मूँह पिरात है, पेट भड़भड़ात है, डकार आवत है, कान सनसनाट है, पेट गुडगुड़ात है, माथो भनात है, हाथ-गोड़े झुनझुनात।

ऐसी-ऐसी बीमारियां सुनकर अच्छे से अच्छे एमबीबीएस डाक्टर्स को भी अपनी डिग्री पर शक होने लगता है कि, साला कहीं ये चैप्टर छूट तो नहीं गया?

गर्व से कहिये कि हम बुन्देलखण्ड के हैं।

क्योंकि, हमारे बुन्देलखण्ड में

1. सूरज निकलता नहीं 'भुन्सारे' हो जाता।

2. यहाँ के लोग कपडे धोते नहीं 'फींच' लेते हैं।

3. हमारे यहाँ के लोग अपने बालों की कंधी नहीं करते, 'बार ऊँच'

बोला है, आईये हम उनके साथ चले। वर्ष 2019-2020 बहुत ही महत्वपूर्ण वर्ष है। यह वर्ष चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की मुनि दीक्षा का शताब्दी वर्ष है। इस वर्ष उनकी परम्परा के पद्मार्थीश आचार्य वर्द्धमानसागरजी महाराज ने अपनी मुनिदीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण किये हैं।

विगत वर्ष में हमारा सबसे बड़ा आयोजन गोमटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामीजी का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। आचार्यश्री विद्यासागरजी की मुनिदीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण हुए। 2019-20 में वात्सल्य रत्नाकर आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज की समाधि के पच्चीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। बहुत ही महत्वपूर्ण वर्ष है। इस महत्वपूर्ण वर्ष की महावीर जयन्ती पर यह वर्ष 'विचार वर्ष' के रूप में मने और यह सन्देश जाए कि हम केवल चरण नहीं, आचरण पूजते हैं। हम व्यक्ति नहीं गुणों के पूजक हैं।

'न देह साथ है न गेह साथ है'

मनुष्य की अर्चना गुणों के साथ है।'

आईये! गुणग्राही बनें गुणों की सुगंध से अपनी भक्ति को बढ़ाये। इसीलिए मुझे लिखना पड़ा है कि -

'हमने जिंदगी भर कुछ नहीं किया

सिर्फ़ सोचते रहे।

धूल चेहरे पर जर्मी थी

आईना पौछते रहे।'

आइये! चेहरे की धूल को साफ करें क्योंकि -

'हम आईने दिखाते हैं, दग चेहरों के।

जिसे खराब लगे, सामने से हट जाए॥'

सभी से क्षमा भाव के साथ, महावीर जयन्ती पर ध्यान रहे -

'हमनें सिद्धान्तों के ऊँचे महल तो खड़े कर लिए।

आचरण की पगड़ण्डी का निर्माण नहीं किया॥'

हम सब महावीर के मार्ग पर चलें, विचार कर चलें, चिंतन के साथ चलें। बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। ■

लेते हैं।

4. हमारे यहाँ जब कोई बच्चा रोता है तो हम उसे चुप नहीं करते 'मौंगा' देते हैं।

5. हम लोग किसी को मारते नहीं 'कुचर' देते हैं।

6. यहाँ जब पानी पिरता है तो कीचड़ नहीं होता 'खपचरों' मच जाते हैं।

7. यहाँ कोई किसी से नाराज नहीं होता, 'बस फूल' जाता है।

8. यहाँ कोई फलतू नहीं धूमता, 'इते-उते फिरत' रहता है।

9. खाने के बाद हमारा पेट नहीं भरता, हम 'अफर' जाते हैं।

10. हम दौड़ते नहीं 'कुर्ख' ÷ लगाते हैं।

11. हमारे यहाँ साम नहीं होता 'कुबेरा' हो जाती है।

12. हमारे यहाँ नहाते नहीं 'सपरलेत' हैं।

अपन एकड़ी बात के तो घमण्ड में है।

के अपनौ घर बुन्देलखण्ड में है॥।

घाम लगे ना ठंड,

जय हो बुन्देलखण्ड।



पूज्य ज्ञानमती माताजी की नैनागिरि यात्रा



» सुरेश जैन (आई.ए.एस.)
भोपाल (म.प्र.)
मोबाइल : 9425010111



भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ जी कोविद ने 22 अक्टूबर 2018 को ऋषभदेवपुरम में स्टेच्यु ऑफ अहिंसा के दर्शन किए। माताजी के चरण स्पर्श कर विश्व शांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन किया। ज्ञानमती जी ने अपने द्वारा ऋषभदेव पुरम में निर्मित भगवान ऋषभदेव से अश्रूपूरित नेत्रों से भगवान ऋषभदेव विश्वशांति वर्ष में 10 नवम्बर, 2018 को विदा लेकर भगवान पार्श्वनाथ के समवसरण स्थल नैनागिरि की ओर मंगल विहार किया। उन्होंने 5 दिसंबर, 2018 को इन्दौर में प्रवेश किया और भोपाल-सागर-दमोह-कुण्डलपुर- बक्स्वाहा-बम्हौरी मार्ग से होते हुए 19 जनवरी, 2019 को नैनागिरि में प्रवेश किया और अपना त्रिदिवसीय प्रवास (19, 20 एवं 21 जनवरी, 2019) किया। 21 जनवरी को प्रातः नैनागिरि में निर्माणाधीन सिद्ध मंदिर को शीघ्र पूर्ण करने के लिए पदाधिकारियों, प्रबंधकों और पुजारियों को अपना मंगल आशीर्वाद दिया और सहस्र वर्ष प्राचीन भगवान ऋषभदेव की सुंदरतम प्रतिमा के दर्शन कर दलपतपुर के लिए प्रस्थान किया।

भगवान ऋषभदेव की सर्वोच्च प्रतिमा के दर्शन कर ऋषभदेवपुरम (मांगीतुंगी) महाराष्ट्र से भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या की लंबी सांस्कृतिक यात्रा करते हुए जनवरी की कड़कती ठण्ड में पूज्य ज्ञानमती माताजी 19 जनवरी 2019 को प्रातः बुन्देलखण्ड के प्राचीनतम प्रमुख तीर्थ नैनागिरि पहुँची। नैनागिरि में माताजी की आगवानी 500 से अधिक ग्रामीण महिलाओं ने अपने सिर पर मंगल कलश और दीपक रखकर, 700 से अधिक छात्रों ने माताजी के आगे-आगे पुष्प वृष्टि करते हुए और नये पुराने वाद्य यंत्र बजाते और नृत्य करते ग्वालाओं ने की। माताजी का स्वागत सागर संभाग के संभागीय आयुक्त श्री मनोहर दुबे, आई.ए.एस., न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन, डॉ. भागचन्द्र जी भास्कर, नागपुर, नैनागिरि तीर्थ के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.), सागर के सुप्रसिद्ध अधिवक्ता श्री अरविन्द रवि एवं श्री विजय कुमार मल्थू बाबा जैन, सागर, महाप्रबंधक श्री मनोज कुमार

जैन, डॉ. संगीता जैन, भोपाल इंजीनियर सुरेन्द्र सिंहई, श्रीमती वर्षा सिंहई, एडवोकेट, नई दिल्ली और प्राचार्य श्री सुमति प्रकाश जैन, नैनागिरि तथा तीर्थ के सभी पदाधिकारियों ने किया।

सर्वप्रथम सिंहई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन विद्यालय के सुविकसित परिसर में माताजी सहित सार्विकाओं का चरण वंदन किया गया। नैनागिरि के छात्रों ने चलती-फिरती सरस्वती देवी का स्वागत किया। नारी शक्ति की जीवंत प्रतिमा को शत-शत वंदन और अभिनंदन किया। अपनी शैक्षणिक सफलताओं के लिए आशीर्वाद प्राप्त किया। माताजी की यौवन सुलभ क्षिप्र गति, सतत जागरूकता और सर्वव्यापी संतुलित चिंतन ने छात्रों को अत्यधिक प्रभावित किया। माताजी की शौर्य और पराक्रम की कहानियों ने उन्हें प्रेरित किया। माताजी विद्या और बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी है। विद्यालय परिवार ने उनसे नैनागिरि विद्यालय में सरस्वती जी की सुन्दर और आकर्षक प्रतिमा का निर्माण कराने में सहयोग देने के लिए प्रार्थना की है। जैन सांस्कृतिक जगत के उभरते सितारे डॉ. जीवन प्रकाश जैन एवं प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन ने छात्रों को अपना मार्गदर्शन दिया।

माताजी ने नैनागिरि तीर्थ पर पूर्वी प्रवेश द्वार (बक्स्वाहा) की ओर से 19 जनवरी, 2019 को प्रवेश किया। उन्होंने सिद्धक्षेत्र परिसर में भी पूर्वी द्वार से 19 जनवरी, 2019 को प्रवेश किया और पश्चिमी द्वार से 21 जनवरी, 2019 को दलपतपुर की ओर प्रस्थान किया। इस प्रकार उन्होंने नैनागिरि में सूर्य की किरणों की भाँति आध्यात्मिक प्रकाश विकीर्ण करने का अनोखा ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत किया। नैनागिरि स्थित संत भवन में जैन संस्कृति

के शाश्वत मूल्यों की सर्वोच्च संरक्षिका पूज्य माताजी के समीप बैठकर जन-जन को उनकी शक्तिशाली आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव हुआ है। माता ज्ञानमती जी ने जैन संस्कृत के सर्वतोमुखी विकास में आदर्श भूमिका का निर्वाह किया। सम्यकदर्शन, ज्ञान और चारित्र की त्रिवेणी माताजी ने अपने प्रवचन में घोषणा की कि देव भक्ति से सम्यकदर्शन, शास्त्रभक्ति से सम्यकज्ञान और गुरुभक्ति से सम्यकाकृत्रि की प्राप्ति होती है।

भगवान पार्श्वनाथ के मंदिर में बैठकर बाबा दौलतराम जी वर्णी ने वर्ष 1902 में गोमटसार (प्राकृत) का हिन्दी पद्य में छंदोदय के नाम से अनुवाद किया। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा यह ग्रन्थ गत वर्ष ही प्रकाशित हुआ है। श्री सुरेश जैन द्वारा यह छंदोदय पूज्य माताजी एवं श्री मनोहर दुबे, आयुक्त, सागर संभाग को भेंट किया गया। श्री दुबे ने आश्वस्त किया कि वे जैन तीर्थ नैनागिरि के चतुर्मुखी विकास के लिए अपनी ओर से ठोस प्रयास करेंगे।

नैनागिरि जैन तीर्थ के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन ने पूज्य ज्ञानमती माताजी और चन्दनामती माताजी को शिलाखण्ड में उल्कीर्ण डॉ. पन्नालाल जी साहियाचार्य, सागर द्वारा लिखित नैनागिरि वंदना और पण्डित शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी द्वारा विरचित नैनागिरि स्तुति का अवलोकन कराया और उनसे निवेदन किया कि वे भी हमें नैनागिरि में विराजे भगवान पार्श्वनाथ और जैन तीर्थ पर अपनी छोटी सी रचना दें। ज्ञानमती जी और चन्दनामती जी ने रात्रि में ही संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी में रचनाएँ तैयार कर प्रातःकाल ही पारस चैनल पर प्रसारित कीं और अपनी हस्तलिखित प्रतियाँ सुरेश जी को प्रदान की।

यह सराहनीय और प्रत्येक संत के लिए अनुकरणीय है कि 20 जनवरी 2019 को प्रातः नैनागिरि में भगवान पार्श्वनाथ की शांतिधारा करते समय माताजी ने आचार्य विद्यासागर जी के स्वास्थ्य लाभ की कामना की। यह उल्लेखनीय है कि आचार्य विद्यासागर जी 40 वर्ष पूर्व वर्ष 1978 के चातुर्मास में नैनागिरि में विराजे इन्हीं तदकार भगवान पार्श्वनाथ की कृपा से स्वस्थ हुए थे।

नैनागिरि के पार्श्वनाथ मंदिर में उनके बैठने के लिए भव्य मंच बनाया गया था किन्तु उन्होंने बताया कि यह मंच भगवान पार्श्वनाथ के चरणों से दो इंच ऊँचा है। अतः वे मंच पर नहीं बैठती और पाटे पर ही नीचे बैठ गई। उन्होंने प्रत्येक आगंतुक को भव्यात्मा जैसे सम्माननीय शब्द से संबोधित किया। निश्चित ही उनकी यह विनम्रता जिनेन्द्र भगवान, जिनशासन एवं जिनवाणी के प्रति उनकी अटूट भक्ति एवं समर्पण समर्पण का ही प्रतीक है। अभिषेक के उपरांत 20 जनवरी, 2019 को भगवान ऋषभदेव की विश्व प्रसिद्ध सर्वोच्च प्रतिमा की जननी दिव्यशक्ति भारतगौरव गणिनी ज्ञानमती माताजी के पावन सानिध्य, प्रज्ञात्रमणी आर्थिकारत्न चन्दनामती माताजी के मार्गदर्शन और न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन की अध्यक्षता में स्वस्ति श्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति जी स्वामी द्वारा विश्व शांति अहिंसा वर्ष में नैनागिरि पर्वत पर “माता ज्ञानमती ध्यान केन्द्र” का लोकार्पण किया गया।

दोपहर में श्री गणेश प्रसाद वर्णी सभागार में बुन्देलखण्ड के प्रत्येक नगर और ग्राम से पथारे जैन समाज के 2500 से अधिक प्रतिनिधियों ने माताजी की वंदना की। श्रद्धेय स्वस्ति श्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने अयोध्या में आयोजित महामस्तकाभिषेक में कलश लेने के लिए सबको आमंत्रित किया। उन्होंने आग्रह किया कि 21 मार्च 2019 को पूरा

बुन्देलखण्ड अयोध्या पहुँचकर भगवान ऋषभदेव की विशाल मूर्ति का अभिषेक करें। ज्ञानमती माताजी की नैनागिरि वंदना की स्मृति को स्थाई स्वरूप देने के लिए आदि ब्रह्मा भगवान ऋषभदेव की एक हजार वर्ष प्राचीन मूर्ति शीघ्र ही वेदी पर विराजमान की जावेगी। इस वेदी पर भक्तामर स्तोत्र के आवश्यक उद्धरण अंकित किए जावेंगे।

द्रोणागिरि और नैनागिरि क्षेत्र के युवा नेता श्री पवन घुवारा, श्री अशोक क्रान्तिकारी, श्री आशीष जैन, श्री पाईप, सागर और उनके साथियों ने नैनागिरि पर्वत पर अचानक ही माताजी से सिद्ध शिला चलने के लिए निवेदन किया। वे युवती की भाँति सिद्ध शिला दर्शन के लिए तुरंत तेज गति से चल दी। दुर्गम क्षेत्र में स्थित सिद्ध शिला पर बैठकर सिद्धों की आराधना की। सप्तार्थियाँ ने अपनी योग साधना की। चालीस हजार वर्ष पुराने शैलचित्रों के समीप शिलाओं पर स्थित तीर्थकरों के अकृत्रिम चरणों की वंदना की। सिद्ध शिला की यह अचानक यात्रा पूज्य माताजी के का अनुपम बल का असाधारण उदाहरण है। नैनागिरि के आचार्य वरदत्त और द्रोणागिरि के आचार्य की भूमिका को विश्वपटल पर प्रभावी ढांग से प्रस्तुत किया। नैनागिरि की सिद्धशिला पर स्थित सिद्धों के चरण चिन्हों की प्राण प्रतिष्ठा की। उन्हें पूज्य घोषित किया। ऐसा प्रतीत होता है कि सभी तीर्थकरों की देवियाँ उन्हें स्वस्थ रखती हैं। प्रसन्न रखती हैं। उन्हें सब कुछ सुलभ कराती है। अनेक अदृश्य आध्यात्मिक शक्तियाँ 86 वर्ष की आयु में भी नैनागिरि के गहन वन और पहुँच विहीन क्षेत्र में स्थित सिद्धशिला जाने के लिए उन्हें प्रेरित करती है। उनका पथ प्रशस्त करती है। वे भीषणतम शीतलहर में जन-जन को कुन-कुनी और गुन-गुनी ऊषा प्रदान करते हुए बुन्देलखण्ड के तीर्थों की वंदना कर रही हैं। महिलाओं और बालिकाओं को अक्षय ऊर्जा प्रदान कर रही है।

आचार्य शांतिसागर जी वर्ष 1929 में बीस तीर्थकरों की सिद्धभूमि शिखरजी की यात्रा पर जाते समय अपने सप्तर्थियों के साथ नैनागिरि पथारे थे। 90 वर्षों बाद उनकी जीवंत प्रतिनिधि बनकर पूज्य ज्ञानमती माताजी ने बुन्देलखण्ड के प्राचीनतम सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र नैनागिरि दिनांक 19, 20 एवं 21 जनवरी, 2019 को अपने संघ के साथ पथारकर उनकी यात्रा को जीवंत किया। जन-जन को अपना मंगल और प्रभावी आशीर्वाद दिया। आकाश के छिलमिलाते सप्तर्थियों की भाँति हम इन सप्तर्थियों का पूरी आत्मीयता और श्रद्धापूर्वक स्वागत करते हैं। अभिनन्दन करते हैं। माताजी बुन्देलखण्ड के तीर्थों की यात्रा करते हुए मार्च, 2019 में भगवान ऋषभदेव प्रभृति पाँच तीर्थकरों (भगवान अजितनाथ, भगवान अभिनन्दननाथ, भगवान सुमतिनाथ तथा भगवान अनन्तनाथ) और भगवान राम की जन्म भूमि अयोध्या पहुँच रही है। अयोध्या में वे भगवान ऋषभदेव के महामस्तकाभिषेक और आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव को अपना सानिध्य प्रदान करेंगी।

नैनागिरि यात्रा के कुछ दिन पूर्व खुरी में दिगंबर समाज की तेरह पंथी और बीस पंथी परंपराओं के शीर्षस्थ आध्यात्मिक संतों - पूज्य माताजी और आचार्य विद्यासागर जी - का मधुर मिलन हुआ। ज्ञानमती माताजी ने इस अवसर पर कहा कि भारत में जैन समाज अल्पतम अल्पसंख्यक है, इसलिए हमें संगठित होने की आवश्यकता है। भले ही मतभेद रहे लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि साधु समाज संगठित होकर धर्म की प्रभावना करें। सभी साधुओं के मूलगुण 28 ही हैं और उनका पालन सभी पिच्छीधारी संत करते हैं। हम सभी के मूल आराध्य भगवान महावीर ही हैं। आचार्य श्री

शांतिसागर जी महाराज हम सबके आद्य आचार्य हैं। जैन शासन में कहीं कोई मतभेद नहीं है। अंतर है तो मात्र पूजा पद्धतियों में हैं और दोनों पूजा पद्धतियों को जैन आगम समान रूप से स्वीकार करता है। अतः अपनी विशेष पूजा पद्धति अपने और अपने परिवार तक ही सीमित रखें। हम सब मिल जुलकर रहें और सांप्रदायिक वैमनस्य की विदाई करें। वरिष्ठतम् एवं शीर्षस्थ माताजी द्वारा प्रसारित आध्यात्मिक और सामाजिक समन्वय और एकता का जयघोष करें। Henry Ford says "Coming together is a beginning; keeping together is progress; working together is success." It is, indeed, this mantra of working together that has brought Poojya Mata Ji to Nainagiri and Bundelkhand.

माताजी ने बुन्देलखण्ड के तीर्थों की यात्रा के समय आध्यात्मिक एकता के सराहनीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। वे राहतगढ़ से सागर का सीधा रास्ता छोड़कर केवल और केवल आचार्य श्री विद्यासागर जी के दर्शन करने के लिए खुरई गईं। इसके पूर्व इन्दौर में आचार्य अनेकांत सागर जी और भोपाल में आचार्य निर्णयसागर जी के दर्शन किए। बाँसा तारखेड़ा में आचार्य श्री उदारसागर जी के दर्शन किए। दमोह में निर्णयपक मुनि योगसागर जी की वंदना की। वेला में आचार्य सिद्धांतसागर के दर्शन किए। अहार जैन तीर्थ पर आचार्य विनिश्चयसागर जी को नमोस्तु किया। वयोवृद्ध एवं वरिष्ठतम् गणिनी आर्थिका होते हुए भी छह आचार्यों और उनके संघस्थ मुनिवरों को पूरी विनम्रता और आत्मीयता के साथ नमोस्तु किया। उन्हें अपने द्वारा विरचित षट्खण्डागम टीका की सभी प्रकाशित पुस्तकें भेट की। उनकी सामाजिक सेवाओं की सराहना की। पूज्य चंदनामती माताजी ने बुन्देलखण्ड की पूजन रची। यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 1987 में वरिष्ठतम् माता ज्ञानमती जी से प्रेरणा लेकर नैनागिरि में बुन्देलखण्ड की 12 बहिनों ने आचार्य विद्यासागर जी से आर्थिका दीक्षा ली थी।

200 से अधिक जैन पुस्तकों की लेखिका और पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत प्रज्ञानमणी आर्थिका श्री चंदनामती माताजी उल्कृष्ट लेखन एवं मधुर गायन की विशिष्ट प्रतिभा से ओतप्रोत है और असाधारण कर्मठता एवं संकल्पशक्ति की धनी है।

चंदनामती जी के मिठास भरे शब्द हमारी आत्मा को झकझोरते हैं। चंदनामती जी की मधुर वाणी युवतियों को उमंग और आकांक्षा के रचनात्मक बिंब और प्रतिबिंब दे रही है। लंबे बोरिंग प्रवचन से दूर रहकर

वे उन्हें आत्मीयता से ओतप्रोत संक्षिप्त और प्रभावी शब्दों में आधुनिक और वैज्ञानिक ढंग से आगे बढ़ने और ऊपर उठने का पाठ पढ़ा रही है। उन्हें पूरे प्यार के साथ खुश रहने, प्रसन्न रहने और सदैव मुस्कराते रहने की सीख देती है। नैनागिरि की यात्रा के अवसर पर चंदनामती जी ने बम्हौरी, सुनवाहा और बक्स्वाहा में बालिका मण्डल का गठन किया। बम्हौरी बालिका मण्डल ने 20 जनवरी को नैनागिरि में अपनी प्रस्तुति दी। ये बालिकाएँ स्वयं अपने रचनात्मक कार्य करती हैं। ऐसे कार्यों को करने की विधि सीखती है। सर्जन बनती हैं। इन्वेटर बनती हैं। चंदनामती जी नैनागिरि एवं समीपस्थ ग्रामों में बच्चियों के भावनात्मक और रचनात्मक विकास के लिए ठोस प्रयास कर रही है। उनमें अच्छे पारिवारिक और सामाजिक रिश्ते निभाने की क्षमता बढ़ा रही है। उन्हें ऊँची उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर रही है। उनमें सामाजिक और भावनात्मक अच्छी प्रवृत्तियाँ पैदा कर रही है। उनमें नेतृत्व और वक्तृत्व शक्ति विकसित कर रही है। उनकी प्रतिभा पारस टी.व्ही. चेनल के माध्यम से पूरे देश में उभर रही है। उन्हें प्रेरणा दे रही है। प्रोत्साहित कर रही है। उन्हें वे ऐसा सब कुछ सिखा रही है जो स्कूल की कक्षा में सिखाया या पढ़ाया नहीं जाता है। उनके अभिभावकों को प्रेरित कर रही है कि अपनी पुत्री के विवाह के समय उसे छोटी सी धार्मिक पुस्तिका भेंट में अवश्य दें।

दिव्य आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत भीषण शीत में नैनागिरि पथारी। माताजी के दर्शन करते समय हमें विलक्षण अनुभव हुआ था। हमारे शब्द मौन हो गए थे। हमारी लेखनी थम गई थी और हमारी भावनाएँ नृत्य करने लगी थी। माताजी की संकल्प शक्ति, विद्वत्ता, गुणवत्ता, मितव्ययिता, आत्मीयता और विनम्रता को शत्-शत् प्रणाम। ऋषभनाथ की सर्वोच्च प्रतिमा की जननी माताजी को हम आचार्य मानतुंग के निम्नांकित शब्दों में अपनी वंदामि समर्पित करते हैं :-

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयति पुत्रान्।

नान्यः सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता॥

सर्वा दिशो दधति भानु सहस्ररश्मिं।

प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्॥

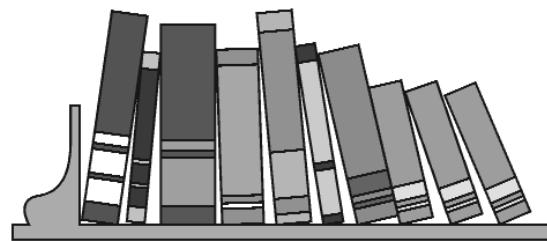
ऋषभादिक चैबीस तीर्थकरों से प्रार्थना है कि पूज्य ज्ञानमती जी को सभी आवश्यक शक्तियाँ प्रदान करें जिससे कि वे हम सबको मातृत्व से ओतप्रोत अपना स्नेह और अपनी आध्यात्मिक शक्तियाँ प्रदान करते हुए सिद्ध पथ पर सदैव सफलतापूर्वक आगे बढ़ती रहें। ■

गणिनी आर्थिका ज्ञानमती माताजी को वाग्मादेवी सम्मान

सागर। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा द्वारा गणिनी आर्थिका ज्ञानमती माताजी को वाग्मादेवी सम्मान उनकी बुन्देलखण्ड यात्रा के दौरान सागर प्रवास पर श्री गौराबाई दि. जैन मंदिर, कटरा सागर के प्रांगण पर आयोजित धर्मसभा में दिया गया। साथ ही ब्र. श्री रविन्द्र कीर्तिजी महाराज को भी सम्मानित किया गया। धर्मसभा में पूज्य माताजी ने कहा कि भगवान ऋषभदेव के समय से ही पंथ परम्परा प्रारंभ हुई थी जो असि, मसि, कृषि के रूप में प्रारंभ हुई थी। लेकिन कालान्तर में यह

समाज व्यवस्था के लिए गोत्र परम्परा में प्रारंभ हुई जो समाज की एक समग्र व्यवस्था है। इसमें भेद नहीं होना चाहिये। यह परम्परा जो कि गोलापूर्व समाज जैसी परिवार विकास के साथ-साथ जैन समाज के विकास को मददगार होती है।

इस अवसर पर अध्यक्ष संतोषजी घड़ी, महामंत्री सुभाषजी चौधरी, देवेन्द्र लुहाड़ी, मंत्री श्रेयांस जैन संत सेल्स, सुरेन्द्र युरेकिया, मनोज बंगेला सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।



सभी शास्त्रों में मिलता है स्याद्वाद

» प्रो. वीरसागर जैन

जैन दर्शन के स्याद्वाद सिद्धांत का सबसे अधिक दुर्गम पक्ष है- एक ही वस्तु में परस्पर विरुद्ध दो धर्मों के अस्तित्व की स्वीकृति। इसी पर लोगों को सर्वाधिक आपत्ति होती है। यही पक्ष लोगों के गले नहीं उतरता। परन्तु जरा ध्यान से देखा जाए तो यह बात बिलकुल कठिन नहीं है, असम्भव तो है ही नहीं, क्योंकि उनमें अपेक्षाभेद है। जैनाचार्यों ने एक ही वस्तु में परस्पर विरुद्ध दो धर्मों का अस्तित्व एक ही अपेक्षा से नहीं स्वीकार किया है, अपितु उनमें अपेक्षा-भेद बताया है, इसलिए इसमें कहीं कोई आपत्ति नहीं आती। दर्शनशास्त्र में ही नहीं, भारतीय विविध विद्याओं के सभी शास्त्रों में अपेक्षाभेद से परस्पर विरुद्ध धर्मों का एकत्र अस्तित्व स्वीकार किया गया है, जिससे सारा जगत् सुपरिचित भी है। यथा -

- ज्योतिषशास्त्र में एक ही तिथि को (नक्षत्र, वार आदि को भी) एक अपेक्षा से शुभ भी कहा है और अन्य अपेक्षा से अशुभ भी।
- गणितशास्त्र में एक ही संख्या/मान को एक अपेक्षा से कम भी कहा है और अन्य अपेक्षा से अधिक भी; एक ही रेखा को छोटी भी कहा है और बड़ी भी।
- भूगोल में एक ही स्थान को एक अपेक्षा से दूर भी कहा है और अन्य अपेक्षा से पास भी; पूर्व में भी कहा है और पश्चिम में भी, उत्तर में भी कहा है और दक्षिण में भी।
- भौतिक शास्त्र में एक ही वस्तु को एक अपेक्षा से ठोस कहा है और अन्य अपेक्षा से द्रव भी; आकर्षक भी कहा है और विकर्षक भी; सूक्ष्म

- पाकशास्त्र में एक ही वस्तु को एक अपेक्षा से भक्ष्य/हितकारी भी कहा है और अन्य अपेक्षा से अभक्ष्य/अहितकारी भी; एक ही खीर मीठी भी है और फीकी भी।
 - साहित्य में एक ही कहानी को काल्पनिक और यथार्थ दोनों माना जाता है; पात्रों के नाम-ग्राम आदि काल्पनिक होते हैं, परन्तु अन्य सारा चित्रण यथार्थ होता है।
 - संगीतशास्त्र में एक ही स्वर को उच्च भी कहा है और निम्न भी।
 - आयुर्वेद में एक ही वस्तु को औषध भी कहा है और विष भी।
 - छंदशास्त्र में एक ही छंद के प्रयोग को गुण भी कहा है और दोष भी।
 - न्यायशास्त्र में एक ही साधन को हेतु भी कहा है और हेत्वाभास भी।
 - नीतिशास्त्र के अनुसार एक ही व्यक्ति शत्रु भी है और मित्र भी; योग्य भी है और अयोग्य भी।
 - राजनीतिशास्त्र के अनुसार विरोधी दल का सदस्य सरकार का विरोधी भी है और सहयोगी भी।
 - नाट्यशास्त्र के अनुसार राम का अभिनय करनेवाला व्यक्ति राम है भी और नहीं भी।
 - चित्रकला के अनुसार चित्रित मयूरादि मयूरादि हैं भी और नहीं भी।
 - व्याकरण के अनुसार एक ही वर्ण समान भी है और असमान भी।
- इसी प्रकार अन्यत्र भी स्वयं समझ लेना चाहिए। सभी शास्त्र अपेक्षाभेद से विरोधी धर्मों का एकत्र अवस्थान मानते हैं। जैन दर्शन का स्याद्वाद सिद्धांत भी इसी बात को गहराई से स्पष्ट करता है, अतः वहाँ कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है। ■

मत परेशान रहिये, मस्त रहिये-व्यस्त रहिये क्योंकि...

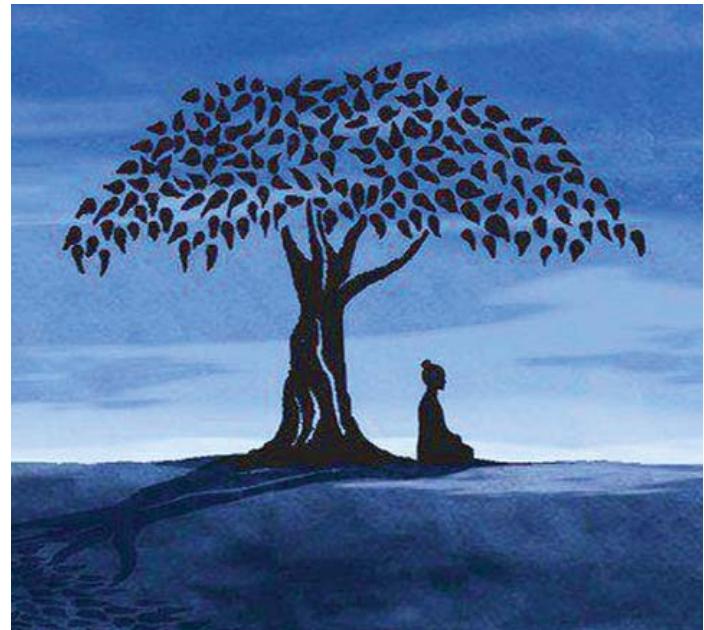
- पैंतीस साल की अवस्था में 'उच्च शिक्षित' और 'अल्प शिक्षित' एक जैसे ही होते हैं।
- पचपन साल की अवस्था में 'रूप' और 'कुरुप' एक जैसे ही होते हैं। (आप कितने ही सुन्दर क्यों न हों झुर्रियां, आँखों के नीचे के डार्क सर्कल छुपाये नहीं छुपते)
- साठ साल की अवस्था में 'उच्च पद' और 'निम्न पद' एक जैसे ही होते हैं। (चपरासी भी अधिकारी के सेवा निवृत्त होने के बाद उनकी तरफ देखने से कतराता है)
- सत्तर साल की अवस्था में 'बड़ा घर' और 'छोटा घर' एक जैसे ही होते हैं। (घुटनों का दर्द और हड्डियों का गलना आपको बैठे रहने पर मजबूर कर देता है, आप छोटी जगह में भी गुज़ारा कर सकते हैं)
- अस्सी साल की अवस्था में आपके पास धन का 'होना' या 'ना होना' एक जैसे ही होते हैं। (अगर आप खर्च करना भी चाहें, तो आपको नहीं पता कि कहाँ खर्च करना है)
- नब्बे साल की अवस्था में 'सोना' और 'जागना' एक जैसे ही होते हैं। (जागने के बावजूद भी आपको नहीं पता कि क्या करना है)। जीवन को सामान्य रूप में ही लें क्योंकि जीवन में रहस्य नहीं हैं जिन्हें आप सुलझाते फिरें। आगे चल कर एक दिन हम सब की यही स्थिति होनी है इसलिए चिंता, टेंशन छोड़ कर मस्त रहें स्वस्थ रहें। यही जीवन है और इसकी सच्चाई भी। ■



भक्तामर महिमा का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण



» डॉ. श्रीमती सुजाता जैन आदित्य
मुंबई (महाराष्ट्र)
मो. 9870952514



'भक्तामर' शब्द जब कानों में पड़ता है तो भगवान आदिनाथ का स्वरूप आँखों के सामने आ जाता है। भक्तामर स्तोत्र की महिमा अतुलनीय है। यह स्तोत्र मार्त्रिक शक्तियों से संपन्न है। भक्तामर स्तोत्र का पठन पाठन करने से जीवों को मानसिक, वाचनिक, कायिक एवं आत्मिक शांति प्राप्त होती है। इस स्तोत्र के पाठ से कई असाध्य शारीरिक व्याधियों, मानसिक परेशानियों एवं आर्थिक समस्याओं अर्थात् किसी भी प्रकार की रुकावट जीवन में आगे बढ़ने से रोके उसका अंत हो सकता है। भक्तामर स्तोत्र की शक्तियों के विषय में आचार्य कहते हैं कि एक-एक अक्षर में इतनी शक्ति होती है कि यदि उनका उच्चारण किया जाये तो वह वायुमंडल के एक लाख योजन तक प्रभाव डाल सकता है। इन तरंगों का हमारे मन पर कितना प्रभाव पड़ेगा यदि हम स्तोत्र का उच्चारण करें तो? मनोविज्ञान भी धर्म से अद्वृता नहीं है। विश्व में जहाँ तक धर्म फैला हुआ है वह मानव के मन के कारण ही संभव हुआ है। मानव मन ने धर्म के सहारे अपनी हर समस्या का हल खोजा है और उसमे सफलता प्राप्त कर स्वयं के प्रति स्वयं को ललकारा है। मनोविज्ञान में मानव मन का अध्ययन ही तो किया जाता है। मानव मन के दो प्रमुख पहलुओं को यदि हम जान लें तो हमें धर्म पर भी विश्वास होने लगेगा। वे दो पहलू हैं- चेतन मन एवं अवचेतन मन।

चेतन मन सिर्फ 12% ही काम करता है। यह हमें धर्म से परिचय मात्र करवाता है। अवचेतन मन जिसे हम जानते ही नहीं वह 88% काम करता

है, यदि इसका सदुपयोग किया जावे तो हम जान सकते हैं कि जिस धर्म से हम परिचित हैं उसमें अनंतानंत शक्तियाँ छुपी हुई हैं। बस अब हमें अपने मन के इन्हीं दो पहलुओं पर काम करना है। 12% काम करने वाले से ऊपरी जानकारी प्राप्त करके 88% वाले अवचेतन मन से वह काम करवाने हैं।

भक्तामर स्तोत्र में आचार्य मानतुंगाचार्य जी ने स्वयं के अवचेतन मन का पूर्णतः उपयोग करके 1008श्री आदिनाथ भगवान की स्तुति की। कहा जाता है कि प्रत्येक श्लोक की रचना पूर्ण होते ही उनकी एक-एक बेड़ी टूटने लगती। कुछ इसी तरह हम जिस समस्या में घिरे हैं यदि अपने अवचेतन मन को यह संदेश पहुँचायें कि हमारे जीवन में सभी कुछ अच्छा चल रहा है -हे भगवान हम पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखिएगा। तो वे समस्याएँ भी घुटने टेक देती हैं और हमें विजय प्राप्त होती है। हमें अपने जीवन में आने वाली परेशानियों से लड़ने के लिये धर्म के मनोवैज्ञानिक रूप का सहारा लेना होगा। यह सहारा हमारे अंदर ही है, बस उसे जगाने भर की देर है। यह सहारा है आपका स्वयं का अवचेतन मन। अवचेतन मन को जगाने के लिए एवं अपने जीवन को सरलतम बनाने के लिए बस कुछ नियमों को अपनी दिनचर्या में सम्मिलित कीजिए - जैसे हमें प्रतिदिन दिन में 3 बार सुबह, दोपहर, शाम स्वयं से कहना है कि मैं और मेरा परिवार सुखी, संपन्न एवं निरोगी है। इस प्रक्रिया को करते ही आपके अंदर एक ऊर्जा का संचार होगा और आप धर्म के मनोवैज्ञानिक पहलु को समझने लगेंगे। ■

विश्व पुस्तक मेले में जैन साहित्य पर संगोष्ठी

दिनांक 13 जनवरी 2019 को दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर हमने भारतीय ज्ञानपीठ की ओर से 'जैन साहित्य का अवदान' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय और लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के प्रो. मदनमोहन अग्रवाल, प्रो. इच्छाराम द्विवेदी,

प्रो. जयकुमार उपाध्ये आदि अनेक विद्वानों ने जैन साहित्य के विषय में बहुत ही सारगर्भित विचार प्रकट किये।

इस अवसर पर वहाँ अनेक सामान्य नागरिक और पत्रकार भी उपस्थित हुए और उन्होंने मुझसे संक्षेप में सरलता से जैन साहित्य का महत्व बताने को कहा। मैंने उनको

जो कुछ कहा, वह उन्हें बहुत लाभदायक प्रतीत हुआ, अतः मैंने उसे यहाँ सभी के लाभार्थ लिपिबद्ध कर दिया है। आशा है कोई सुधी विद्वान् इन बिन्दुओं को व्यवस्थित और विस्तृत करेगा, ताकि आधुनिक युग के सभी लोगों को जैन साहित्य का महत्व ठीक से समझ में आ सके।



एसिडिटी, गैस, कब्ज की समस्या एवं

आसान समाधान



» डॉ विशाल जैन

लेप्रोटकोपिक सर्जर्ज एवं वेट लॉस रेशलिस्ट, ग्लोबल एसएनजी हॉस्पिटल, इंडॉर
मो. 9893773266

आज की आधुनिक जीवन शैली में पेट रोग संबंधी प्रॉब्लम्स काफी बढ़ रही है जिसमें एसिडिटी गैस कब्ज की समस्या प्रमुख है जो अमूमन हर घर में पाई जाती है। इसके प्रमुख कारणों में आधुनिक भागदौड़ वाली जीवन शैली और हमारी अनियन्त्रित लाइफ स्टाइल ही है। मरीज अपनी मर्जी से बिना डॉक्टर की सलाह के स्वयं मेडिकल स्टोर से एसिडिटी एवं गैस की दवाइयाँ खरीद कर खाते रहते हैं जो कि नुकसानदेह भी हो सकती है। कुछ सरल उपाय अपनाकर हम इस समस्या से स्थाई रूप से समाधान पा सकते हैं। अगर फिर भी आवश्यक हो तो योग्य चिकित्सक की सलाह से ही दवाई लें एवं अपने मन से या इंटरनेट की सलाह से कोई भी दवाई लेने का प्रयास ना करें।

पेट रोग के सामान्य लक्षण

- छाती में जलन व दर्द
- मुँह में खट्टा पानी आना
- जी मचलना, उल्टी होना
- मुँह में कड़वापन, मुँह में छाले
- पेट फूलना, पेट में जलन
- बदहजमी, गैस, गोला चढ़ना
- सिर दर्द एवं भारीपन
- कब्ज
- मल त्यागने में ज्यादा समय लगना
- रोज पेट साफ न होना
- बार बार शौच के लिए जाना एवं खुलासा ना होना
- गुदाद्वार में दर्द होना
- जलन या खुजली होना
- शौच में ब्लड जाना
- मस्से या बवासीर होना

» जो नहीं है वह सिर्फ एक खबाब है पर जो पाया है वह तो लाजवाब है।

पेट गैस एवं कब्ज के रोगियों के लिए इलाज में दवाइयों के अलावा आहार एवं दिनचर्या की महत्वपूर्ण भूमिका है। नीचे सुझाए गए उपाय आपको अपनी समस्या से स्थाई समाधान दिलवाने में सहायक है क्योंकि अक्सर यह देखा गया है कि मरीज जब तक दवाइयाँ लेता है वह ठीक रहता है एवं दवाइयाँ बंद करने पर पुनः पहले जैसी स्थिति में पहुँच जाता है। अगर आप अपनी समस्या से छुटकारा पाना चाहते हैं तो सुझाए गए निर्देशों का पालन करें जो कि काफी सरल एवं आसानी से करने योग्य हैं।

- एसिडिटी और गैस की समस्या व्यर्थ का टेंशन करने एवं एंग्जायटी से बढ़ती है अतः अपना मन शांत रखने का प्रयास करें।
- ज्यादा चिल्लाने एवं चिड़चिड़ापन के कारण यह समस्या में इजाफा होता है, कूल शांत चित रहें।
- अनावश्यक जल्दी बाजी ना करें।
- अपनी दिनचर्या नियमित करें एवं खाने-पीने का टाइम टेबल बना लें।

पेट के रोगियों के लिए आहार संबंधी जानकारी

- खाली पेट ना रहें, हर 3 से 4 घंटे में कुछ कुछ खाते रहें।
- सामान्यतः दिन में दो बार खाना और दो बार नाश्ता करना ठीक होता है।
- सुबह नाश्ता, 4 घंटे पश्चात खाना लंच, दोपहर हल्का नाश्ता, एवं तीन से 4 घंटे पश्चात शाम या रात का हल्का खाना डिनर।
- एक बार में अधिक मात्रा में न खाएं, ओवरइंटिंग से बचें।
- खाने के बाद तुरंत सोने ना जाएं। खाने एवं सोने के समय में कम से कम 2 घंटे का अंतर अवश्य होना चाहिए।
- ज्यादा गरिष्ठ, मिर्ची मसालेदार एवं तला हुआ भोजन का सेवन ना करें।
- फीका खाना ना खाएं, स्वाद अनुसार कम मिर्ची का प्रयोग करें।
- बिना डॉक्टर की सलाह व्यर्थ का परहेज ना करें क्योंकि अक्सर यह देखा गया है कि ज्यादा परहेज करने वाले मरीज ज्यादा दुखी रहते हैं।
- सुबह नाश्ते के साथ दो या तीन तरह के फ्रूट्स का सेवन अवश्य करें।
- नाश्ते में अंकुरित पदार्थों का सेवन भी कर सकते हैं।
- दोनों समय खाने से पहले भरपूर मात्रा में सलाद का सेवन करें।
- खाने में कम से कम एक हरी सब्जी अवश्य हो।
- पानी का सेवन भी अधिक मात्रा में करें।
- एसिडिटी गैस के मरीजों को विशेष रूप से उपवास नहीं करना चाहिए एवं कुछ कुछ समय के अंतराल से खाते रहना चाहिए।
- शराब सिगरेट एवं ज्यादा मिर्ची मसालेदार भोजन का सेवन ना करें।
- दूध पर निर्भरता से कुछ बच्चों में कब्ज की शिकायत हो सकती है। बच्चों को भी शुरू से ही यह खाने की अच्छी आदतें डलवाए एवं ज्यादा दूध ना दे।
- कब्ज ना हो क्योंकि कब्ज ही पाइल्स, बवासीर एवं गुदाद्वार की अन्य बीमारियों का मूल कारण है।
- ज्यादा ब्रेड बिस्किट मैदे से बनी चीजों का सेवन ना करें।
- देर तक शौचालय में बैठने तथा अधिक जोर लगाने से बचें। अपने साथ न्यूजपेपर, मैगजीन या मोबाइल अंदर ना ले जाएं।

अगर आप उक्त निर्देशों का नियमित रूप से पालन करते हैं तो महीने में एक या दो बार अपनी पसंद के खाने का भरपूर आनंद ले सकते हैं। ■



सुपर-दुपर साक्षात्कार

बड़ी दौड़-धूप के बाद वो आज ऑफिस पहुँचा। उसका पहला इंटरव्यू था। घर से निकलते हुए वह सोच रहा था, काश! इंटरव्यू में आज कामयाब हो गया तो अपने पुश्टैनी मकान को अलविदा कहकर यहीं शहर में सेटल हो जाऊंगा। मम्मी-पापा की रोज की चिक-चिक, मगजमारी से छुटकारा मिल जायेगा। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक होने वाली चिक-चिक से परेशान हो गया हूँ। जब सोकर उठो, तो पहले बिस्तर ठीक करो, फिर बाथरूम जाओ, बाथरूम से निकलो तो फरमान जारी होता है- “नल बंद कर दिया? तौलिया सही जगह रखा या यूँ ही फेंक दिया?” नाशता करके घर से निकलो तो डाँट पड़ती है- “पंखा बंद किया या चल रहा है?” क्या-क्या सुनें यार। नौकरी मिले तो घर छोड़ दूँगा।

ऑफिस में बहुत सारे उम्मीदवार बैठे थे। बॉस का इंतजार कर रहे थे। दस बज गए। उसने देखा पैसेज की बत्ती अभी तक जल रही है। माँ याद आ गई, तो बत्ती बुझा दी। ऑफिस के दरवाजे पर कोई नहीं था। बगल में रखे वाटर कूलर से पानी टपक रहा था, पापा की डाट याद आ गई। पानी बन्द कर दिया। बोर्ड पर लिखा था, इंटरव्यू दूसरी मैट्रिक्स पर होगा।

सीढ़ी की लाइट भी जल रही थी, बंद करके आगे बढ़ा तो एक कुर्सी



सिंघाड़े का लड्डू

» श्रीमती रंजना पटोरिया



सिंघाड़े का आटा	400 ग्राम
काजू-बादाम	50 ग्राम
गुड़	200 ग्राम
देसी घी	250 ग्राम
सोंठ पाउडर	1 चम्मच

» इज्जत और तारीफ माँगी नहीं जाती, कर्माई जाती है।

रास्ते में थी, उसे हटाकर ऊपर गया तो देखा पहले से मौजूद उम्मीदवार जाते और फौरन बाहर आते। पता किया तो मालूम हुआ बॉस फाइल लेकर कुछ पूछते नहीं, वापस भेज देते हैं।

मेरा नंबर आने पर मैंने फाइल मैनेजर की तरफ बढ़ा दी। कागजात पर नजर दौड़ाने के बाद उन्होंने कहा- “कब ज्वाइन कर रहे हो?” उनके सवाल से मुझे यूँ लगा जैसे मजाक हो। वो मेरा चेहरा देखकर कहने लगे, “ये मजाक नहीं हकीकत है। आज के इंटरव्यू में किसी से कुछ पूछा ही नहीं, सिर्फ सीसीटीवी में सबका बर्ताव देखा। सब आये लेकिन किसी ने नल या लाइट बंद नहीं किया। धन्य हैं तुम्हारे माँ-बाप, जिन्होंने तुम्हारी इतनी अच्छी परवरिश की और अच्छे संस्कार दिए। जिस इंसान के पास स्व-अनुशासन नहीं वो चाहे कितना भी होशियार और चालाक हो, मैनेजमेंट और जिन्दगी की दौड़धूप में कामयाब नहीं हो सकता। घर पहुँचकर मम्मी-पापा को गले लगाया और उनसे माफी मांगकर उनका शुक्रिया अदा किया। अपनी जिन्दगी की आजमाइश में उनकी छोटी-छोटी बातें पर रोकने और टोकने से मुझे जो सबक हासिल हुआ, उसके मुकाबले, मेरे डिग्री की कोई हैसियत नहीं थी और पता चला जिन्दगी के मुकाबले में सिर्फ पढ़ाई-लिखाई ही नहीं, तहजीब और संस्कार का भी अपना मकाम है।

संसार में जीने के लिए संस्कार जरूरी है।

संस्कार के लिए माँ-बाप का सम्मान जरूरी है।

जिन्दगी रहे ना रहे, जीवित रहने का स्वाभिमान जरूरी है।

» प्रेषक : अनुपमा जैन

विधि

- सबसे पहले सिंघाड़े के आटे को छान लीजिए। अगर सिंघाड़े का आटा थोड़ा मोटा रहेगा तो लड्डू सोंधे बनेंगे।
- गुड़ को अच्छी तरह से फोड़ लीजिए। गुड़ में गांठ नहीं रहनी चाहिए।
- कटे हुए मेवे को तवे पर हल्का सा भून लीजिए। कड़ाही में करीब 150 ग्राम घी गर्म कर लीजिए। आपका करीब 100 ग्राम घी बचा रहेगा, इसका बाद में इस्तेमाल करेंगे।
- गैस की आंच मीडियम करके सिंघाड़े के आटे को अच्छी तरह से भून लीजिए। जब आटे से सोंधी खुशबू आने लगे और ये गुलाबी हो जाएं तो समझिए की ये भून गया है।
- अब पिटे हुए गुड़ के ऊपर गरम-गरम सिंघाड़े के आटे को इस तरह से डालिए कि गुड़ पूरी तरह से ढक जाए। आटे की गर्मी से गुड़ नरम हो जाएगा और सिंघाड़े का लड्डू बनाने में आसानी होगी।
- आटे के ऊपर अब सोंठ, घी और मेवे डालकर चम्मच की मदद से अच्छी तरह मिला लीजिए। ध्यान रहे कि मिश्रण ठंडा होने से पहले ही आप इसे मिला लें।
- जब मिश्रण इतना गरम रह जाए कि आप इसे हाथ से छू सकें, तब इसे एक बार हाथ से भी अच्छी तरह मिक्स कर लीजिए।
- अब आपको फटाफट लड्डू बनाना है। क्योंकि अगर मिश्रण ठंडा हो गया तो लड्डू बनाने मुश्किल हो जाएगा।
- दोनों हाथ से लड्डू बनाने की कोशिश करें इससे ये मिश्रण के गर्म रहते ही बन जाएंगे। ■



मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज मुझे प्रेरणा देने वाले मेरे गुरु



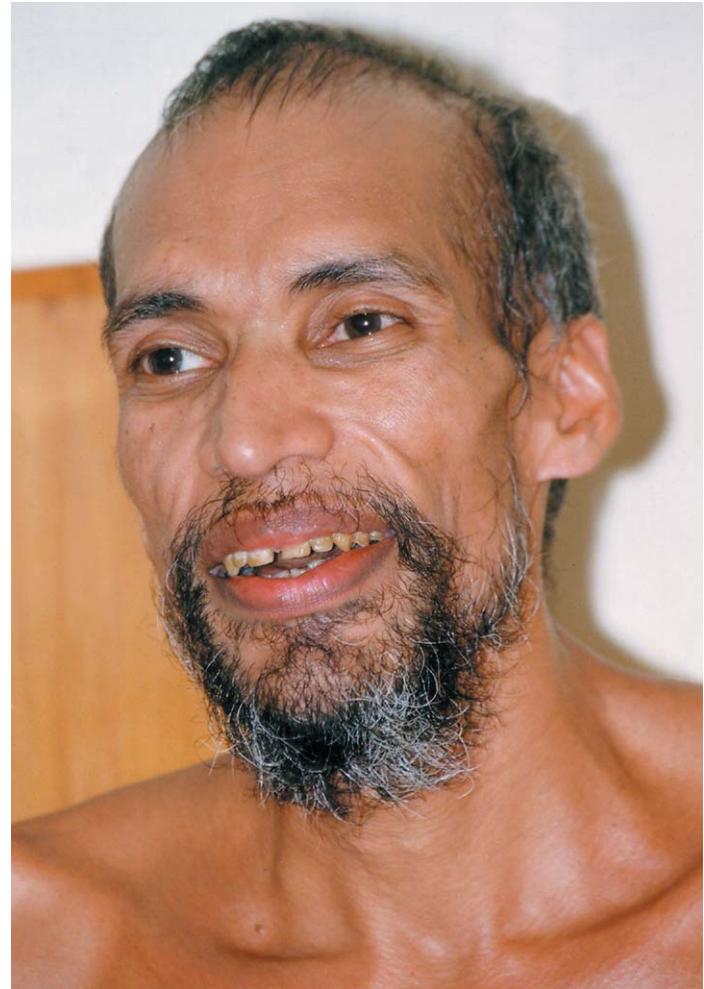
» डॉ. श्रीमती रंजना पटोरिया
सिविल लाईन, कटनी (म.प्र.)

पञ्जनीय गणेशप्रसादजी वर्षों की पारदर्शी निश्छलता एवं पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के कठोर साधना संकल्पों का अद्भुत सामंजस्य मुनिश्री के व्यक्तित्व को रूपायित करता हैं। संपूर्ण जैन जगत के लिए शीतल चंद्रमा की भौति अपनी शीतलता से संपोषित करने वाले मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज, मुनिश्री समयसागरजी, मुनिश्री योगसागरजी तथा मुनिश्री नियमसागरजी महाराज के बाद आचार्य महाराज से दीक्षित शिष्यों में चौथे क्रम में रहे।

अपनी आत्मा को साधने में निरंतर लगे रहने वाले वे अनोखे साधु थे। उन्होंने अपने जीवन को बाहर-भीतर एक सा सहज, सरल व निर्विकार बना लिया था। आपके जीवन के अंतिम सात वर्षों में अपने कर्मोदय से हुई दैहिक-पानसिक पीड़ा को अंतिम सांस तक समर्पूर्वक सहन करने की अद्भुत क्षमता प्राप्त कर ली थी। मेरी स्मृति मंजूषा खजाने के अमूल्य रत्न है मुनिश्री। मेरे लिये वो हमेशा प्रेरणास्रोत रहे हैं। उन्होंने हमेशा कहा- “इस बी प्रैक्टिकल संसार में रहना है तो परिस्थितियों से समझौता करो। जो सच है, उसे ग्रहण करो और सामंजस्य बनाकर चलो।” सच वह दिन, वह क्षण उसके बाद मेरे जीवन का दृष्टिकोण ही बदल गया। मैंने हमेशा अपने मन की हर एक बात उन्हें बताई, उन आत्मीय क्षणों की स्मृति मुझे हमेशा संबल प्रेरणा देती है।

मुनिश्री का सबसे बड़ा योगदान नयी युवा पीढ़ी के जीवन को धार्मिक आधार पर संस्कारों के साथ गुणात्मक शिक्षा का रहा है। अपने चिंतन-मनन से भरपूर उपदेशों द्वारा श्रावक की आत्मा में छाये अज्ञान अंधकार को दूर किया। युवा पीढ़ी को बड़े ही सरल शब्दों में मंदिर जाने हेतु प्रेरित किया। उन्हीं की कविता-

ये मंदिर
इसलिए कि हम आ सके
बाहर से अपने भीतर
ये मूर्तियाँ
अनुपम सुंदर इसलिए कि



हम पा सके कोई रूप
अपने में अनुत्तर
और श्रद्धा से झुककर
गलाते जाएँ अपना मान-मद
पर्त-दर-पर्त निरंतर ताकि
कम होता जाए
हमारे और प्रभू
के बीच का अंतर।

इन पंक्तियों ने हर एक व्यक्ति के भीतर बंद पड़े कपाट पर दस्तक दी और हर एक व्यक्ति अध्यात्म जगत से जुड़ता गया। जब भी उनकी वाणी से झारते अमृत वचन सुनने को मिलते हैं, हृदय भर आता है। परंतु अंतस की ज्योति न बुझने देने का सहारा व विश्वास मन में बढ़ जाता है।

उन्होंने हमेशा सिखाया अशुभ से बचकर शुभ कार्यों में कैसे प्रवृत्त हो। दैनिक कार्यकलापों में कैसे सावधानी रखी जायें, अपने पुरुषार्थ को कैसे दिशा दी जायें? हम अपने जीवन को अच्छा बनाएँ। हमारी वाणी और हमारे विचार श्रेष्ठ होवें। उनकी लोककल्याण की इस महती भावना को उनसे जुड़े भक्त समुदाय ने मैत्री समूह नाम के संगठन के माध्यम से साकार कर दिया। उनका मुख मण्डल हर घड़ी उनके आंतरिक आनंद का परिचय देता था। जो भी उनके संपर्क में आता उसका मन जीत लेने की विलक्षण क्षमता उनमें थी।

10 जनवरी सन 1980 में मेरे नानाजी, मामाजी, मम्मी सभी नैनागिर से बापस लौटे तब मैं सात साल की थी तीनों एकदम ही शांत, हाथों में कपड़े लिये आकर बैठ गए तब नानी ने पूछा “काए मुत्रा कहाँ गओ” तब मामाजी ने अपने आपको संभालते हुए दृढ़ होकर कहा- “तुमाओं मोड़ा चलो गओ, उने दीक्षा लेलाई।” इतना सुनते ही रात भर सभी रोते रहे और सभी परिजन व स्नेहीजनों में वियोग छा गया था। जब क्षुल्लकजी के कानों में भनक पड़ी तो उन्होंने पत्र लिखा।

“अपने परिणामों की संभाल आपको स्वयं करना है, हम तो निमित्त मात्र है। अपने मन को छोटा न बनाए। संसार में किसी के गुणों के प्रति हर्ष का भाव आना विरले लोगों में ही होता है। आत्मचिंतन का समय निकालें। आर्त-ध्यान से बचने का प्रयास करें। आत्मावलोकन करें और अपने पर्याय को सफल बनाएँ।” जब सबने होश संभाला तो यहाँ सुनने मिला कि उन्होंने तो अपना कल्याण कर लिया अब हमें सन्मार्ग पर चलना है।

जब मैं बड़ी हुई तब नानाजी से अनेक प्रश्न किया करती थी। नानाजी ने एक बार बताया कि जब वे आचार्यश्री व यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर तीनों साथ में बैठे थे तब प्रोफेसरजी ने कही- आचार्य श्री नेजी, विद्यार्थी विरेन्द्र कुमार के एम.टैक. डिपार्टमेंट से पृथक हो जाने से हमारा विभाग लूजर हो गया है तब आचार्य श्री जी ने कहा- आप ऐसा कहते हैं, सिंघई जी कहते हैं हमारे परिवार से कुछ खो गया है और मैं कहता हूँ मैं गेनर हूँ। मैंने पत्थर उठाया है कुछ समझ के उठाया है उस पत्थर में प्रतिमा उकेरूँगा।” और वह लाइन आज सच ही हुई है। वाकई उस पत्थर में से प्रतिमा उभर कर आयी है। जो मेरे आदर्श हैं। आचार्य श्री की ही पक्कियाँ हैं-

“इस युग के दो मानव
अपने को खोना चाहते हैं
एक भोग राग और मद्यपान को चुनता है, और
एक योग, त्याग और आत्मध्यान को धुनता है
कुछ ही क्षणों में दोनों होते
विकल्पों से मुक्त
फिर क्या कहना

एक शब्द के सामान निरा पड़ा है और एक
शिव के सामान खरा उत्तरा है।”

सच यहीं है वह श्रमण संस्कृति जिसे मुनि श्री ने एक विशिष्ट ऊँचाई प्रदान की है। ग्रंथ के हर गूढ़ रहस्य को सहज ही सुलझा देना और अपने जीवन को एक जीवंत ग्रंथ बना देना उनकी निर्ग्रथता की शान थी। उन्होंने जो लिखा वह अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य की रोशनी से लिखा।

“सदियों का संताप सहते-सहते देह थक गयी पर
विचारों के संस्कारों का कारबां नहीं रुकेगा कभी।”

वह दिगंबर तो दिगंबरत्व में लीन हो गया। उन्होंने जितना हमें दिया वह हमें सबको देना है। उनके विचार संस्कार संदेश जन-जन तक पहुँचाना है। सभी का जीवन उच्चता की ओर अग्रसर होवे ऐसी भावना के साथ-
“कोई है जो हमारे आसपास रहता है सदा
अपने संस्कार अपनी उपस्थिति को दर्शाता है सदा
मुनिश्री के पास होने का अहसास मात्र ही
तनहा नहीं होने देता कभी।” ■

मध्यप्रदेश के खंडवा जिले के न्यायाधीश ने सरकारी सुविधाओं से किया इंकार, वेतन भी आधा करवाया

सादगी

स

बंगला, कार छोड़ एक कमरे में रहते हैं जज



साकारी कार, बंगला, नौकर-चाकर पाना लोगों की हस्सरत होती है। लेकिन मध्यप्रदेश के खंडवा जिले के अपर सत्र न्यायाधीश अक्षय कुमार द्विवेदी ने इन सुविधाओं को लेने से मना कर दिया। वह बंगला ठुकराकर एक कमरे में रहते हैं। पैदल ही कोर्ट जाना पसंद करते हैं। नौकर मिले हैं, लेकिन खाना वह खुद ही बनाते हैं। अक्षय मूल रूप से रीवा जिले के रहने वाले हैं। पत्रा जिले से 26 सितंबर 2014 को अक्षय द्विवेदी की तैनाती खंडवा में की गई थी। करीब ढाई साल के कार्यकाल में लोग उनकी सादगी के कायल हो गए। उन्होंने म.प्र. हाईकोर्ट में आवेदन देकर अपना वेतन आधे से कम करने की गुजारिश भी की थी। हाल ही में तबादले को लेकर उनसे पूछा गया कि आप कहाँ जाना चाहते हैं। तो उन्होंने कहा, कहाँ पर भी भेज दो। सरकारी सुविधाएँ न के बराबर ही लूँगा। इस पर उनका तबादला श्लोपुर किया। जब उनसे बात करने की कोशिश की तो वह भावुक हो गए। बोले, ‘‘मेरी तो दुनिया ही अलग है।’’ अक्षय के जज बनने की कहानी भी बड़ी रोचक है। वे बताते हैं, ‘‘छात्र जीवन में माँ के साथ पैतृक संपत्ति के विवाद के निराकरण के लिए कोर्ट आता-जाता था। तारीख पर तारीख और चक्कर लगाकर माँ परेशान हो गई। यह मुझसे देखा नहीं गया। तभी मैंने जिद कर ली कि वकील बनूँगा। इसके बाद वकालत की पढ़ाई शुरू की। वकील बना तो देखा कि फैसलों में देरी से लोगों को कितनी मानसिक पीड़ा और आर्थिक नुकसान होता है। फिर मैंने ठान लिया कि अब तो जज ही बनूँगा।’’

(साभार : दैनिक भास्कर, खंडवा)

मोबाइल फोन है संपत्ति

अक्षय के पास संपत्ति के नाम पर सिर्फ एक मोबाइल है। इसे उनकी माँ ने दिया था। उनके पास टेलीफोन कनेक्शन भी नहीं है। दिन में तीन बार अपनी माँ से बात करते हैं। उन्होंने शादी भी नहीं की है। अक्षय ने यूँ तो कई चर्चित फैसले सुनाए हैं लेकिन मामला जब जमीन और जायदाद से जुड़ा होता है तब उनका फैसला और भी त्वरित होता है।



विद्यार्थियों में बढ़ता तनाव और समाधान



» डॉ. विशाल जैन

लेप्रो-स्कोपिक सर्जन एवं वेट लॉस स्पेशलिस्ट
ब्लोबल एसएनजी हॉस्पिटल, इंदौर
मो. 9893773266

कृष्णा में आत्महत्या करने वाली छात्रा ने अपने सुसाइड नोट में लिखा था कि बच्चों पर पढ़ाई का इतना दबाव होता है कि वह इस के बोझ तले दब जाते हैं। उस छात्रा ने लिखा था वह स्वयं कई छात्रों को डिप्रेशन और स्ट्रेस से बाहर निकाल कर सुसाइड से रोकने में सफल हुई थी लेकिन खुद को ना रोक सकी। बहुत लोगों को विश्वास नहीं होगा कि मेरे जैसी लड़की जिसके 90% से अधिक मार्क्स हो वह सुसाइड भी कर सकती है लेकिन मैं आप लोगों को समझा नहीं सकती कि मेरे दिमाग और दिल में कितनी नफरत भरी है।

उस छात्रा ने अपनी मां के लिए लिखा- आपने मेरे बचपन और बच्चा होने का फायदा उठाया और मुझे विज्ञान पसंद करने के लिए मजबूर करती रही। मैं भी विज्ञान पढ़ती रही ताकि आपको खुश कर सकूँ लेकिन मैं आपको बता दूँ कि मुझे आज भी अंग्रेजी साहित्य और इतिहास बहुत अच्छा लगता है क्योंकि यह मुझे मेरे अंधकार के बक्क में मुझे बाहर निकालते हैं। वह अपनी मां को चेतावनी देती है कि इस तरह चालाकी और मजबूर करने वाली हरकत उसकी छोटी बहन से मत करना। वह जो बनना चाहती है और जो पढ़ना चाहती है वह उसे करने देना क्योंकि वह उस काम में सबसे अच्छा कर सकती जिससे वह प्यार करती है।

यह सब पढ़कर मन विचलित हो गया है कि इस भागदौड़ में हम अपने बच्चों के सपनों को छीन रहे हैं। हम उन्हें असफलताओं या समस्याओं से लड़ना नहीं सिखा पा रहे हैं। उनके जेहन में सिर्फ एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा के भाव भरे जा रहे हैं जो जहर बन कर उनकी जिंदगी को लील रहे हैं।

स्कूल और कॉलेज के स्टूडेंट्स में टेंशन या तनाव काफी बढ़ गया है। एक दूसरे से आगे निकलने की अंधी दौड़ में हम बेतहशा भागे जा रहे हैं। इस आपाधापी में स्टूडेंट्स अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रख पाते हैं। आजकल के पैरेंट्स चाहते कि उनका बच्चा पढ़ाई के अलावा खेलकूद में, डांस में, पैंटिंग में तथा अन्य कई गतिविधियों में भी हमेशा आगे रहे। अपनी इन उम्मीदों को पूरा करने के लिए वे बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूल में डलवाते हैं और साथ ही साथ स्कूल से आने के पश्चात ट्यूशन एवं कई अन्य तरीके की क्लासेस ज्वाइन करवा देते हैं। आजकल इन क्लासेस के चक्र में कुछ पैरेंट्स ने अपने बच्चों को दादा नाना के घर भी छुट्टियों में भेजना बंद कर दिया है ताकि उनकी क्लास मिस ना हो।

इन परिस्थितियों में बच्चे को अपने लिए समय ही नहीं मिल पाता और वह दिनभर मशीन की तरह दौड़ भाग करते रहता है। वे अपने खाने का ठीक से ध्यान नहीं रख पाते हैं ना ही किसी तरह के फिजिकल खेलकूद में पार्टिसिपेट कर पाते हैं। थोड़ा समय अगर उन्हें मिलता है तो फिर वह



गैजेट्स जैसे मोबाइल और लैपटॉप में बिजी हो जाते हैं। पैरेंट्स को गुस्सा आता है कि हमारा बच्चा तो कुछ खेलता ही नहीं है दिनभर मोबाइल और टीवी में लगा रहता है।

काफी हद तक इस परिस्थितियों के लिए हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हमें समझना आवश्यक है कि की हर बच्चा क्लास में फर्स्ट नहीं आ सकता है। इसका यह मतलब नहीं है कि बाकी लोग अपने जीवन में सफल नहीं होते हैं। आप अपने बच्चों के दोस्त बन कर उनसे बातचीत करते रहे। उनकी सफलता का जश्न मनाएँ एवं उनकी असफलता को उनकी कमज़ोरी मत बनने दें।

कि बाकी लोग अपने जीवन में सफल नहीं होते हैं। अपेक्षा और आकांक्षाओं का कोई अंत नहीं है। मेरे एक परिचित से कुछ दिन पहले ही बातचीत हो रही थी। उनकी बच्ची पढ़ाई में काफी होशियार थी और अमूनन अपनी क्लास में फर्स्ट या सेकंड ही आती थी। इस वर्ष भी उसे मैथ्स में हंड्रेड में से हंड्रेड मार्क्स हासिल हुए थे किंतु इसके बावजूद भी उसकी मम्मी खुश नहीं थी। मैंने पूछा कि अब प्रॉब्लम क्या है तो बच्ची की मम्मी ने कहा कि उसी क्लास के दो और बच्चों के हंड्रेड में से हंड्रेड मार्क्स है इसलिए वह खुश नहीं है।

एक बच्चा टेस्ट में 20 में से साढे 19 मार्क्स लेकर आया। घर पर आते से ही उससे पहला प्रश्न किया कि आधा नंबर कम क्यों आया। किसी महान व्यक्ति ने कहा है कि ऐसी स्थिति मैं हमें अलमारी से निकाल कर अपनी पुरानी मार्कशीट चेक कर लेना चाहिए कि उस दौरान हमने कितने नंबर हासिल किए थे।

मैं अपना उदाहरण देना चाहूंगा। वर्ष 1993 में मैंने पीएमटी टॉप किया था और आज मैं लेप्रोस्कोपिक सर्जन और वेट लॉस स्पेशलिस्ट के रूप में कार्य कर रहा हूं किंतु मैं यह बताना चाहता हूं कि मुझे यह सफलता पहले प्रयास में नहीं मिली थी। मैंने 1 वर्ष ड्रॉप लेकर फिर से तैयारी की और अगले वर्ष पीएमटी में टॉप किया।

मैं केवल इतना कहना चाहता हूं की मां बाप अपने बच्चों की क्षमताओं को पहचाने, क्योंकि हर बच्चा अलग होता है। हमारी अधिक अपेक्षाओं के कारण वह कोई ऐसा कदम ना उठा ले जिससे हमें जीवन भर पछताना पड़े। यह परीक्षा का समय काफी तनाव भरा होता है तो इस दौरान हमें बच्चों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए और स्पेशली उनके स्वास्थ्य के प्रति भी हमें जागरूक होना चाहिए ताकि वह शारीरिक

मानसिक रूप से स्वस्थ रहें और अपना हंड्रेड परसेंट परफॉर्म कर सकें।

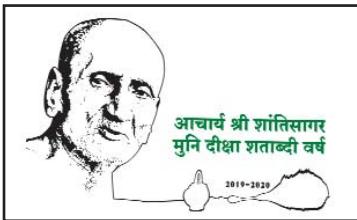
हर बच्चा क्लास में फर्स्ट नहीं आ सकता है अतः अपनी क्षमताओं को समझते हुए जिस फील्ड में आप की अधिक रुचि है उसी में आप अधिक प्रयास करें। बच्चे एवं उनके माता-पिता अवश्य समझे कि आपका बच्चा हर कुछ नहीं कर सकता है अतः उसकी रुचि पहचाने और उसे उसी चीज के लिए प्रोत्साहित करते रहे ना कि उसे दिनभर ताने देते रहें।

मदद मांगने में संकोच ना करे- जब भी आपको आवश्यक हो तो आप अपने या अपने परेंट्स से मदद मांगने में या अपने मित्रों से मदद मांगने में संकोच ना करें। अपने करीबियों से अपनी परेशानी को साझा करें और ऐसा कदम ना उठा ले जिससे हमें जीवन भर या अपने परिवार को पछताना पड़े। अपने दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताएं और खुश रहें। आप जीवन में हर समय हर किसी को खुश नहीं कर सकते हैं अतः सबसे पहले खुद को खुश करें, आप पाएंगे कि आपके जीवन के बहुत सारे तनाव और परेशानी अपने आप खत्म हो गए हैं।

अपने आत्मविश्वास का निर्माण करें- यदि आप महसूस करते हैं कि आप कुछ चीजों में या कुछ फील्ड में अच्छे हैं तो आप अपने दोस्तों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय अपने गुणों के प्रति ध्यान केंद्रित कर अपने आत्मविश्वास में इजाफा कर सकते हैं।

लक्ष्य निर्धारित करें - लक्ष्य निर्धारण में यह ध्यान रखें की प्रैक्टिकल अप्रोच हो और अपनी क्षमताओं के अनुरूप हो।

मेरा पैरंट से निवेदन है कि आप अपने बच्चों के दोस्त बन कर उनसे बातचीत करते रहें। उनकी सफलता का जश्न मनाएँ एवं उनकी असफलता को उनकी कमज़ोरी मत बनने दें। ■



- » बचपन से मेलों और तमाशों में न जाकर केवल धार्मिक उत्सवों में लेते थे भाग लेते
- » दुकान में खाली समय में पढ़ते थे पुस्तकें
- » गाँव में कोई भी दिग्म्बर साधु आने पर करते थे उसकी तन-मन से सेवा

ऐसे थे आचार्य शांतिसागर

अपने से झगड़ने वाले को भी बड़े प्रेम से समझाते थे सातगौड़ा

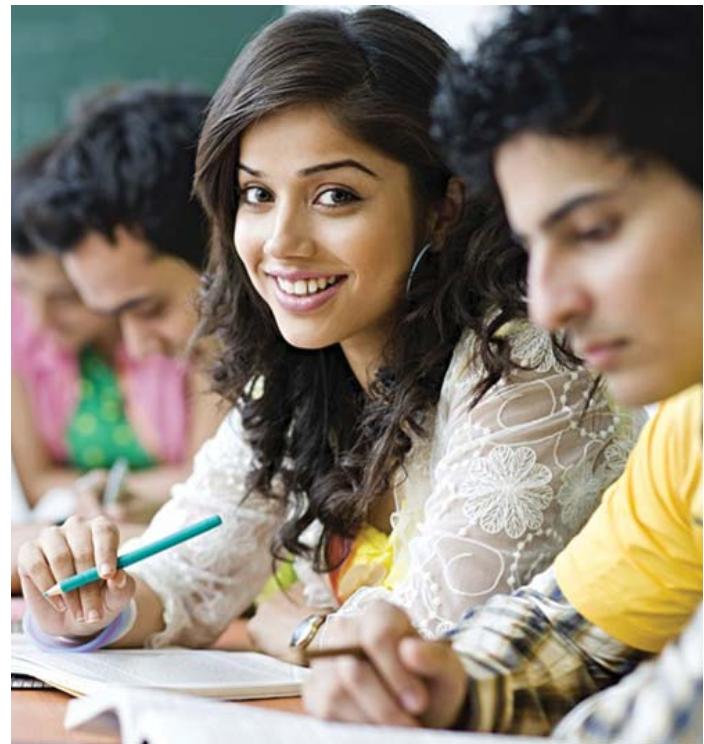
सातगौड़ा बहुत ही शांत प्रकृति के थे। चाहे खेल हो या अन्य कोई कार्य, हमेशा प्रथम रहते थे। वह किसी से झगड़ते नहीं थे, बल्कि अपने से झगड़ने वाले को भी बड़े प्रेम से समझाते थे। वह अपने संगी-साथियों को समझाते थे कि बुग काम नहीं करना चाहिए। वह नदी में तैरना तक जानते थे। वह शारीरिक रूप से बहुत बलशाली भी थे। वह बहुत सरल थे लेकिन कभी मेलों और तमाशों में नहीं जाते थे। सातगौड़ा केवल धार्मिक उत्सवों में भाग लेते थे। वह सभी से कहते थे कि अपना काम ठीक से करना चाहिए और फालतू की बातों में नहीं पड़ना चाहिए। सातगौड़ा की माता सत्यवती भी बच्चों को कभी चोरी नहीं करने, झूठ न बोलने और अर्धम न करने की शिक्षा देती थी। माँ की इन्हीं शिक्षाओं का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। गाँव में कोई भी दिग्म्बर साधु आता तो वह उसकी सेवा तन-मन से करते थे। सातगौड़ा केवल भोजन करने घर आते थे और बाकी समय दुकान में ही रहते थे। सातगौड़ा का भोजन भी बहुत मर्यादित रहता था। वह अभक्ष्य नहीं खाते थे। बचपन से ही उनके हृदय में वैराग्य का भाव छिपा हुआ था। ■



देश और विदेश में नौकरी के लिए पढ़िए संस्कृत

विश्व की सबसे प्राचीनतम भाषा संस्कृत फिर से अपने पुराने गौरव की ओर लौट रही है और साहित्य, दर्शन या अध्यात्म से आगे बढ़कर अलग-अलग क्षेत्रों में अच्छे अवसर उपलब्ध करवा रही है। वर्तमान में भारत के विश्वविद्यालयों के अलावा 200 से भी ज्यादा विदेशी यूनिवर्सिटीज में संस्कृत पढ़ाई जा रही है। “संस्कृत से छात्रों में प्रतिभा का विकास होता है। यह उनकी वैचारिक क्षमता को निखारती है, जो उनके बेहतर भविष्य के लिए सहायक है” ये पंक्तियाँ भारत के किसी संस्कृत विद्यालय की नहीं बल्कि लंदन के सेंट जेम्स नामक कॉन्वेंट स्कूल के फोरम से ली गई हैं। जाहिर है, विश्व की सबसे प्राचीनतम भाषा संस्कृत फिर से अपने पुराने गौरव की ओर लौट रही है। वर्तमान में यह भाषा केवल साहित्य, दर्शन या अध्यात्म तक सीमित न रहकर गणित, विज्ञान, औषधि, चिकित्सा, इतिहास मनोविज्ञान, भाषा विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में भी अपनी जगह बना रही है।

यूनिवर्सिटी में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत पढ़ाई जाती है, जहाँ मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। संस्कृत के प्रोफेशनल कोर्स जैसे आचार्य, शिक्षा आचार्य या शिक्षाचार्य के लिए प्रवेश परीक्षा देनी होती है। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान और लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ जून में प्रवेश परीक्षा आयोजित करते हैं। ■



यहाँ से करें पढ़ाई

- राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली
- लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली
- जगतगुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
- राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति संपूर्णानंद संस्कृत विवि, वाराणसी

इन क्षेत्रों में बना सकते हैं कॅरियर

■ अकादमिक क्षेत्र : देश के साथ ही ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज और कोलंबिया जैसे प्रतिष्ठित विदेशी विश्वविद्यालय भी संस्कृत विशेषज्ञों को अध्यापन का अवसर देते हैं। केंद्रीय विद्यालयों में संस्कृत को तृतीय भाषा बनाने के फैसले से विद्यालय स्तर पर संस्कृत अध्यापन में कॅरियर के अवसर बढ़ गए हैं।

■ शोध : भाषाओं में शोध के लिहाज से संस्कृत दुनिया भर में पहले पायदान पर है। भाषा विज्ञान, इतिहास और मेडिसिन के साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कम्प्यूटिंग क्षेत्र में भी संस्कृत के प्रयोग की संभावनाओं पर

दुनिया भर में शोध जारी है। भारत के साथ ही जर्मनी, इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के प्रतिष्ठित संस्थानों और विश्वविद्यालयों से भी बतौर रिसर्च स्कॉलर जुड़ सकते हैं।

■ सेना : संस्कृत में स्नातक या शास्त्री की उपाधि के साथ भारतीय सेना में धर्मगुरु के पद के लिए आवेदन कर सकते हैं।

■ फार्मेसी और कॉम्प्यूटिक्स : हर्बल कॉम्प्यूटिक का और आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के प्रचलन से संस्कृत के छात्रों के लिए कॅरियर संभावनाओं के नए रास्ते खुले हैं। आयुर्वेद पद्धतियों का ज्ञान संस्कृत में लिपिबद्ध होने

के कारण सभी आयुर्वेदिक फार्मेसी और कॉम्प्यूटिक कंपनियाँ संस्कृत के छात्रों को नियुक्त करती हैं।

■ अध्यात्म, ध्यान, योग संस्थान : भारतीय अध्यात्म, दर्शन और योग पर आधारित प्राचीन ग्रंथ संस्कृत भाषा में मौजूद हैं इसलिए इस क्षेत्र में काम करने वाले सभी संस्थान संस्कृत भाषा विशेषज्ञों को रोजगार के अच्छे अवसर मुहैया कराते हैं।

■ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व रेडियो : संस्कृत में उच्चारण, समझ अच्छी होने पर आकाशवाणी, रेडियो व दूरदर्शन पर संस्कृत न्यूज रीडर के रूप में

काम कर सकते हैं या संस्कृत नाटकों और संस्कृत श्लोकों की रिकॉर्डिंग के लिए वॉइस आर्टिस्ट का काम भी कर सकते हैं।

■ प्रकाशन और पत्रकारिता : भारत, अमेरिका, जर्मनी और ब्रिटेन में कई संस्कृत पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है जिनमें लेखक, अनुवादक या पत्रकार के तौर पर कॅरियर बना सकते हैं। संस्कृत साहित्य प्रकाशन संस्थानों में भी काम किया जा सकता है।

■ स्पीच थैरेपी : अपनी सुस्पष्ट और शुद्धात्मक उच्चारण पद्धति के चलते संस्कृत भाषा को स्पीच थैरेपी इसके रूप में मान्यता मिल रही है।

महासभा के नए सदस्य

क्र.	नाम	प्रकार
1.	श्रीमंत सेठ राजेंद्र कुमार, मयंक जैन (सेसई वाले), सागर	संरक्षक सदस्य
2.	श्री डॉ. जितेंद्र कुमार जैन 'फौजदार', सागर	संरक्षक सदस्य
3.	श्री मनीष जैन, आशीष जैन सरकंडा, बिलासपुर (छ.ग.)	विशिष्ट सदस्य
4.	श्री सिद्धार्थ सतीषचंद्रजी जैन, मुंबई	विशिष्ट सदस्य
5.	श्री सुनील प्रसन्न शास्त्री, नागौद, सतना	आजीवन सदस्य
6.	डॉ. महेंद्र कुमार जैन (सौरई वाले), सागर	आजीवन सदस्य
7.	श्री प्रेमचंद जैन शास्त्री, डीमापुर, नागलैंड	आजीवन सदस्य
8.	श्री अजय कुमार जैन, सागर	आजीवन सदस्य
9.	श्री रीतेश कुमार जैन (सेसई वाले), सागर	आजीवन सदस्य
10.	श्री ऋषभ कुमार जैन, सागर	आजीवन सदस्य
11.	श्रीमती वंदना सिंघई पत्नी श्री राजीव सिंघई	आजीवन सदस्य
12.	श्री सोनू जैन (बम्हौरी वाले), सागर	आजीवन सदस्य
13.	श्री सेठ संजय पिता स्व. सेठ रविचंद्र जैन, दमोह	आजीवन सदस्य

निसर्ग ने मानव शरीर की रचना केवल शाकाहार के लिए की है।
शरीर रचना और आहार

माँसाहारी प्राणी	शाकाहारी प्राणी	मानव प्राणी	
दाढ़, दाँतों की रचना	नुकीले, गस्सा तोड़नेवाले	जुगाली करनेवाले	दृढ़ एवं चौड़े मुँहवाले
जबड़े का जोड़	केवल ऊपर-नीचे कब्जे के जैसे	आगे पीछे तथा बाजू में	आगे पीछे तथा बाजू में
नाखूं की रचना	नुकीले अंदर धूंसनेवाले	चौड़े मुँहवाले, घने एवं फैले हुए	चौड़े मुँहवाले, फैले हुए
पानी पीनेका ढँग	जबानसे चाटकर पीते हैं।	होठों से खींचकर पीते हैं।	होठों से गिलास से पीते हैं।
मनके एवं आँतकी लंबाई का अनुपात	1 : 6	1 : 12	1 : 12
रक्त की रासायनिक स्थिति	अम्लताकी तरफ झुकी हुई	अल्कली की ओर झुकी हुई	अल्कली की ओर झुकी हुई
पमड़ा और पसीना	पसीना नहीं	पसीना आता है।	पसीना आता है।

समृद्धि शेष

- श्रीमती केशरबाई धर्मपत्नी श्री चुनीलाल सिंघई, नागपुर
- श्री सेठ ताराचंद जैन (बम्हौरी वाले), सागर
- श्रीमती आशा जैन धर्मपत्नी श्री निर्मल कुमार जैन, सागर
- श्री हुकुमचंद जैन, सागर
- श्रीमती केशरबाई धर्मपत्नी स्व. राजारामजी जैन, सागर
- श्री सतेंद्र जैन, नेहानगर, सागर
- सेठ मनोहरलाल जैन, नदी पार, गढ़कोटा
- श्री श्रीचंद जैन, श्रीपाइप, सागर
- श्रीमती सुमंत्राजी (रतिबाई) जैन धर्मपत्नी स.सि. दरबारीलाल जैन, सागर
- श्रीमती रुक्मणी जैन (अमरमऊ वाले), शाहगढ़
- श्रीमती सुशीला जैन, ध.प. स्व. श्री लक्ष्मीचंद्रजी जैन, अहमदाबाद
- श्री रमेशचंद्र जैन (प्राइम सिटी), इंदौर
- श्रीमती कंचनबाई जैन धर्मपत्नी श्री बसंत कुमार जैन, सागर
- श्रीमती शीलाबाई जैन धर्मपत्नी स्व. सिं. जीवनलाल जैन (चक्की वाले), गढ़कोटा
- श्रीमती चंद्रबाई जैन धर्मपत्नी स्व. सिं. कोमलचंद्रजी जैन, बड़ोदरा
- श्रीमती नथीबाई जैन धर्मपत्नी स्व. सिं. नन्हेवीरजी जैन (बिलहरा वाले), इंदौर
- श्रीमती पुष्पलता जैन ध.प. श्री मोतीलाल जैन (बिनेकावाले), सागर
- श्री राजेश कुमार जैन (राजू) पुत्र श्री सव. उत्तमचंद्र जैन (सेसई वाले), सागर
- श्रीमती मुक्ती जैन (रुखवन वाले), बंडा
- श्रीमती लक्ष्मीबाई जैन धर्मपत्नी स्व. कपूरचंद्र जैन, दमोह
- श्रीमती कस्तूरीबाई धर्मपत्नी स्व. राजाराम जैन (बिलाई), दमोह
- श्री कोमलचंद्र जैन (बाँसातारखेड़ा), दमोह
- श्री दिनेश सिंधंदी पुत्र श्री स्व. मुन्नालाल जैन (दिनेश प्रेस), सागर
- श्रीमती कंचनबाई जैन धर्मपत्नी स्व. श्री राजेंद्र कुमार जैन, सागर
- श्रीमती शांतिदेवी धर्मपत्नी स्व. सेठ नाथराम जी जैन, अमरमऊ
- श्री डॉ. अशोक कुमार जैन, ए.पी. बाम, बरायठा
- श्री लक्ष्मीचंद्र जैन सिहोरा, जिला जबलपुर
- श्रीमती शांतिदेवी धर्मपत्नी स्व. सबाई सिंधंदी फूलचंद्र जैन, बरायठा
- श्री फूलचंद जी जैन, मगरदा
- श्री एस.सी.जी. जैन (रिटा. डिवी. मैनेजर ओरियंटल इंश्योरेंस)
- श्रीमती सरोज जैन धर्मपत्नी श्री चौ. रमेशचंद्र जैन, गढ़कोटा
- श्रीमती कमला जैन धर्मपत्नी श्री निर्मल कुमार जैन, गंभीरिया
- श्री सेठ टेकचंद जी जैन (बलेह वाले) गढ़कोटा
- श्रीमती शीलाबाई जैन, सागर
- श्रीमती दुर्गबाई ध.प. श्री नेमिचंद जी जैन विनम्र संधेलिया सागर
- श्री राजेश कुमार जैन पुत्र श्री स्व. हुकुमचंद्र जैन, मड़ देवरा

मेरे आइने में श्री महेन्द्र चौधरी

» श्री सुरेश सरल जैन

गढ़ाफाटक, जबलपुर (म.प्र.) मो.: 9425412374

श्री महेन्द्र चौधरी का जन्म जैन धर्म के महत्वपूर्ण पर्व अष्टमी के दिन हुआ था, 22 सितंबर 1947 को। उनके धर्मसेवी एवं समाजसेवी पिता स्व. श्री चौधरी दरबारीलालजी एवं माता गृहिणी रत्न श्रीमती हीराबाई जैन थे, जिन्होंने पुत्र के जीवन में बाल्यकाल से ही श्रेष्ठ संस्कार और धर्म के सूत्र बो दिए थे। यही कारण था कि बालक महेन्द्र शिक्षा क्षेत्र में सदा मेधावी छात्र का स्तर पा चुके थे। यदि उनकी बाल्यकाल और युवा अवस्था की, संयुक्त चर्चा करें तो मात्र पंद्रह वर्ष की उम्र में छहद्वाला की परीक्षा उत्तीर्ण करने में चर्चित हो गए थे। फिर स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय का रणक्षेत्र उनके समक्ष आया तब वे शाला सचिव और हर वर्ष कक्षा के मॉनीटर चुने जाते रहे। धीरे-धीरे उन्होंने छात्र जीवन में ही भारी ख्याति प्राप्त की। वे विश्वविद्यालय प्रतिनिधि भी बने। ऐसे प्रिय युवक को समाज ने हाथोंहाथ लिया। फलतः उनसे समाज जुड़ती चली गई। इस क्रम में जैन नवयुवक सभा जबलपुर के सहसचिव पद पर चयनित किए गए। उनकी ऊर्जा से युवकों में संगठन एकता, समाज सेवा और धर्मसेवा की भावना पुष्टि हुई।

चूँकि माता-पिता का घर धन-धान्य से पूर्ण था, सो शीघ्रता से सन् 1971 में उनकी शादी सागर के प्रसिद्ध मलैया परिवार श्री जिनेन्द्र कुमार और श्रीमती गुलाबबाई की सुपुत्री सुश्री मणि चौधरी के साथ कर दी।

सौभाग्य से मणिजी भी महेन्द्र कुमार की तरह गुण-संपत्र निकली। वे उच्च शिक्षित हैं- एम.ए। आज भी धार्मिक और सामाजिक कार्यों में अग्रणी पाई जाती है। कुशल संगठन, कार्यकर्ता हैं। वर्तमान में समाज के महिला मंडल में एक दशक से अध्यक्ष हैं। उनके कारण महिला तो महिला कन्याओं में भी शिक्षा और संस्कार की भावना दृढ़ हुई है। वे मंदिर के कार्यों में अपनी मंडली सहित सक्रिय रही हैं। काव्य-लेखन श्रेष्ठ गुण है। उनकी कविताएँ जब-तब पत्रिकाओं में पढ़ने को मिल जाती हैं।

श्री महेन्द्र कुमार जी का जीवन भी प्रारंभ से प्रकाशवान रहा है। जब प्रदेश में जनता दल का गठन हुआ तो वे कोषाध्यक्ष चुने गए। जबलपुर जिला के उपाध्यक्ष रहते हुए एक कुशल कार्यकर्ता की पहचान बनाई। इसी तरह व्यवसायिक क्षेत्र में म.प्र. बस ओनर एसोसिएशन के उपाध्यक्ष बनाए गए जो जबलपुर जिले के एसोसिएशन के महासचिव एक-दो वर्ष नहीं बीस वर्ष रहे। उनके संगठन के सूत्रों से प्रदेश के बस ऑपरेटरों की स्थिति विकसित हुई। जबलपुर स्थित श्री पाश्वर्नाथ दिग्म्बर जैन मंदिर (बरियावाला) के अध्यक्ष बने और समाजोन्नति में सहायक हुए।

उनकी समाजसेवा की भावना से प्रेरित होकर कई संगठनों ने उन्हें अनुरोध पूर्वक संगठन में लिया फलतः वे अनेक तरह जाने जाते हैं। संरक्षक श्री बोहरीबंद तीर्थ क्षेत्र, कोषाध्यक्ष जबलपुर जैन पंचायत सभा, शिरोमणि संरक्षक अखिल भारतीय दिग्म्बर जैन गोपलापूर्व महासभा, कार्यसमिति के उपाध्यक्ष भी। वे वर्तमान में भी धर्म और समाजसेवा में संलग्न हैं। परिवार में चार पुत्रियाँ एवं एक पुत्र हैं, सभी विवाह के पश्चात अपने-अपने कार्य क्षेत्र में निमग्न हैं। चार में से दो पुत्रियाँ अमेरिका में हैं एवं दो दिल्ली में हैं। पुत्र इंजीनियर है। इस नूतन पीढ़ी का उद्देश्य भी समाजोत्थान और धर्म-सेवा है। ■

प्राप्त सहयोग राशि

क्र.	नाम	प्राप्त राशि
1.	श्री अजित कुमार जी शिक्षक (पहुंचा वाले)	1000 रुपये
2.	श्री अमन जैन/कु. बरखा जैन (नरवां वाले) पिता श्री दिलीप जैन (आयकर अधिकारी) सागर	10000 रुपये
3.	चि. विशेष संग सृष्टि के परिणय पर श्री देवेंद्र कुमार संतोष कुमार लुहारी	2100 रुपये
4.	सौ.कां. सृष्टि संग विशेष पिता श्री सुरेशचंद्र जी पटवारी द्वारा विवाह उपलक्ष्य में	2200 रुपये
5.	श्री दिग्म्बर जैन गोलापूर्व महिला संगठन इंदौर द्वारा दान राशि	500 रुपये
6.	श्री ताराचंद नाहर की पुण्य स्मृति में पुत्र श्री अजय कुमार नाहर की ओर से	1100 रुपये
7.	संदीप जैन नाहर की पुण्य स्मृति में पुत्र श्री नाथूराम जी जैन बड़ामलहरा की ओर से	500 रुपये
8.	सौ.कां. रोशनी जैन पुत्र श्री धर्मचंद जी जैन	500 रुपये
9.	श्री आर.पी. पाल कानपुर (उ.प्र.) की ओर से पुत्री की शादी के उपलक्ष्य में	1100 रुपये
10.	श्री शोभित जैन (कोठा वाले) भंगव की ओर से पुत्र शम्भू की सगाई के उपलक्ष्य में	500 रुपये
11.	श्री एड. अशोक फुसकेले सागर की ओर से पुत्र आयुष की शादी में	2100 रुपये
12.	श्रीमती गीता जैन इंदौर की ओर से पुत्र अंकित जैन की शादी के उपलक्ष्य में	500 रुपये
13.	श्री राजेश कुमार मुकेश कुमार जैन सुपर बाजार भिलाई की ओर से पुत्र चि. अभिषेक की सगाई में	5100 रुपये
14.	श्री देवेंद्र कुमार संतोष कुमार जैन लुहारी वालों सागर की ओर से पुत्र सौ.कां. सुरभि जैन की सगाई के उपलक्ष्य में	1500 रुपये
15.	श्री नरेंद्र कुमार जैन कर्पोरेप्यार वालों की ओर से पुत्र आदित्य की शादी के उपलक्ष्य में	555 रुपये
16.	श्री मानक लाल जैन मुनीम दमोह की ओर से पुत्री सोनाली की शादी के उपलक्ष्य में	255 रुपये



अखिल भारतवर्षीय दि. जैन गोलापूर्व महासभा का 14वाँ परिचय सम्मेलन एवं शताब्दी समारोह दिनांक 20, 21 एवं 22 अक्टूबर 2018 को संपन्न



विगत वर्षों में लगातार तेरह सफल परिचय सम्मेलन के बाद 14वाँ परिचय सम्मेलन एवं शताब्दी वर्ष समारोह बुंदेलखण्ड की पावन धरती सागर नगर में त्रिदिवसीय कार्यक्रम के साथ सानंद संपन्न हुआ।

इस वर्ष भी दशहरा के तुरंत बाद त्रिदिवसीय कार्यक्रम रामसरोज, महावीर वाटिका में अपार भीड़ एवं गरिमामयी उपस्थिति के साथ हुआ। 20 अक्टूबर को प्रथम दिन श्री गौराबाई दि. जैन मंदिर की पाठशाला के 100 बालक-बालिकाओं के ध्वजारोहण पर मनमोहक नृत्य एवं आकर्षक कार्यक्रम के साथ शुरुआत हुई। सभी बच्चे अपने एक से गणवेश में नृत्य करते हुए रंगोली सजाते हुए कार्यक्रम का शुभांभ हुआ। ध्वजारोहण के समय महासभा के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने नगर विधायक श्री शैलेंद्र जैन के साथ ध्वज वंदन, ध्वज गीत के साथ ध्वजारोहण श्रीमती शांतिबाई, स्व. श्री कोमलचंद जैन, मनोज कुमार, अजय कुमार, नवीन कुमार, नवनीत कुमार बंगेला परिवार सागर द्वारा संपन्न किया गया। वह अद्भुत झाँकी थी। महासभा के शताब्दी वर्ष में कई आयोजनों के साथ कार्यक्रम हुआ जो अभूतपूर्व रहा। ध्वजारोहण के पश्चात् वाद्ययंत्रों के साथ मंच का उद्घाटन किया गया। साथ ही प्रथम दिवस के अध्यक्ष, स्वागताध्यक्ष ने विश्व वंदनीय भगवान महावीर वर्तमान शासन नायक के चित्र का अनावरण किया गया। इस महाकुंभ के प्रथम दिवस का दीप प्रज्वलन कु. शुभ्रा पुत्री श्रीमती दीपा राजेश सिंहई सागर द्वारा किया गया। तत्पश्चात् मंच पर सभी अतिथियों को सम्मान यथायोग्य स्थान पर बैठाकर महासभा के पदाधिकारियों द्वारा सभी का सम्मान किया गया। इसके बाद संस्कार पत्रिका का 14वाँ संस्करण जिसमें लगभग 1450 प्रविष्टियों के साथ अनेक उदारमना व्यक्तियों द्वारा दिए गए शुभ संदेश, प्रतिष्ठानों द्वारा विज्ञापन के साथ इस बार एक अनूठा प्रयोग कर युवक प्रविष्टि एवं युवती प्रविष्टि की दो प्रतियों में मल्टीकलर में समाज के सामने विमोचन करते हुए विमोचनकर्ता लगातार तीन वर्षों से करते आ रहे अभयकुमार, आलोक कुमार, अरुण कुमार, अरविंद कुमार जी छिंदवाड़ा वालों द्वारा संपन्न हुआ। पत्रिका विमोचन के तत्पश्चात् हमारे सभा के द्वारा महानुभावों को किट वितरण की सुचारू



व्यवस्था संभालते हुए दो प्रति एक महासभा के तत्वावधान में थैला सौजन्यकर्ता श्री सन्मति जैन 'जैन चश्मा घर' सागर के बहुआकर्षक थेले में प्रविष्टि रसीद दिखाकर सभी को देने का कार्य तीव्र गति से शुरू हुआ जो लगातार तीन दिवस तक चलता रहा।

हमारे प्रथम दिवस के मुख्य अतिथि श्रीमती संगीता अशोक कुमार पडेले, कार्यक्रम अध्यक्ष देवेंद्रकुमार जिनेंद्र कुमार जैन घड़ी वाले उज्जैन, स्वागताध्यक्ष श्री साकेत कुमार, समीप कुमार जी, सुनील पाहप इंडस्ट्रीज सागर, स्वागत मंत्री श्री चौ. नेमिचंद सुनीलकुमार जी, स्वल्पाहार सौजन्य श्री अशोक कुमार जैन महावीर ट्रांसपोर्ट सागर, प्रातः भोजन श्री राजेंद्र कुमार, प्रदीप कुमार, हेमंत कुमार, सुभाष कुमार, संजय कुमार खाद वाला परिवार

सागर एवं सायं भोजन श्री सुरेंद्र कुमार, संतोष कुमार घड़ी, शैलेंद्र कुमार इंजी. सत्येंद्र कुमार, संदीप कुमार जैन बी.टीआईआरटी परिवार द्वारा हुआ। इन सभी महानुभावों ने अपनी उदारता का परिचय देते हुए अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग किया। अतः सभी साधुवाद के पात्र हैं। इसी के साथ ही प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी मालवांचल समिति द्वारा निःशुल्क नेत्र परीक्षण एवं चश्मा वितरण कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन नगर विधायक शैलेंद्र जैन एवं महासभा के पदाधिकारियों द्वारा गरिमामयी उद्घाटन किया गया। इस दो दिवसीय नेत्र शिविर में अपार भीड़ लगातार बनी रही जिसमें 5300 लोगों का नेत्र परीक्षण एवं

4100 लोगों को निःशुल्क चश्मा एवं 2000 लोगों को दवा वितरण की गई। इस नेत्र शिविर में लंबी लाइनों में लोग अपने परीक्षण के लिए खड़े रहे इससे सभी समाज के लोगों ने भरपूर लाभ उठाया, जिसकी नगर एवं समाज में भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। इसी के साथ ही प्रथम दिवस का परिचय सम्मेलन शुरू हुआ। इस पूरे कार्यक्रम के संचालन में डॉ. अरविंद जैन, श्रीमती रश्मि ऋष्टु, श्रीमती आरती सिंहई, श्रीमती सरिता आदित्य भोपाल, देवेंद्र लुहारी, श्रेयांस जैन द्वारा सफल संचालन तीन दिवस तक किया गया। परिचय सम्मेलन की तैयारी में युवक एवं युवतियों के लिए मंच पर जाने के लिए दो रजिस्ट्रेशन काउंटर बनाए गए जिसमें सागर नगर के विभिन्न महिला

मंडलों की सदस्यों एवं पुरुष वर्ष महासभा के सदस्यों द्वारा विधिवत व्यवस्था की गई। मंच पर प्रत्याशियों को सम्मान बुलाया गया। मंगलाचरण किया गया एवं पाठशाला एवं नगर के अलग-अलग महिला मंडलों ने अनपी सांस्कृतिक प्रस्तुति दी जो अनुकरणीय रही। साथ ही प्रथम दस प्रत्याशियों जो मंच पर अपना परिचय दें उनको पुरस्कृत किया जाना निश्चित हुआ। सभी प्रत्याशियों ने बारी-बारी से अपना परिचय दिया और संचालन समिति ने उनसे प्रश्नोत्तर कर जन समुदाय को विधिवत अवगत कराया। इस महाकुंभ कार्यक्रम में बुंदेलखंड से नहीं वरन् म.प्र., उ.प्र., राजस्थान, महाराष्ट्र, बिहार, छत्तीसगढ़ एवं अनेक प्रांतों की अपार भीड़ के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। यह परिचय सम्मेलन अनवरत शाम तक चलता रहा। बाहर से आए हुए महानुभावों को रुचिकर भोजन की समुचित व्यवस्था की गई थी जिसका आनंद समाज के लोगों ने प्राप्त किया। चाय का स्टॉल भी निःशुल्क चलता रहा। शाम को मंगल आरती की। अनेक वर्षों से चला आ रहा समाज के प्रतिभावान छात्रों का चेतना संगठन एवं महासभा द्वारा उन सभी को श्रेणी के आधार पर सम्मानित किया गया। साथ ही नगर के एवं बाहर से पधारे हुए कुशल नेतृत्व द्वारा बालक- बालिकाओं को कैरियर कार्डिनिंग के माध्यम से 12वीं के बाद अनेक क्षेत्रों में कैरियर बनाने की अनेकों विधियाँ समझाते हुए प्रतिभावान छात्रों को आकर्षक किया गया जो सफल रहा। कैरियर कार्डिनिंग के कुशल बुद्धिजीवियों के क्रमशः डॉ. अशोक जी सिप्प, श्रीवास्तव जी, श्री तरुणसिंह जी एवं डी.एस.पी. श्री डी.के. जैन की सुपुत्री ने अपनी हिंदी एवं बुंदेली में अपनी बात रखी गई, जिसकी काफी सराहना की गई।

द्वितीय दिवस का प्रथम सत्र में युवा सम्मेलन किया गया जिसकी शुरुआत मंगलाचरण से हुई। दीप प्रज्ज्वलन हुआ और युवाओं ने अपने-अपने विचार रखे। समाज के विकास में अपना हर समय साथ रहने का वादा किया और नई तकनीक से भी समाज को अवगत कराया जाएगा। युवा सम्मेलन के उपरांत हमारे द्वितीय दिवस के पदाधिकारियों को मंचासीन किया गया, साथ ही दीप प्रज्ज्वलन श्री अशोककुमार गोंदरे नरसिंहगढ़ द्वारा किया गया। चित्र अनावरण अंकुर जैन, डॉ. आशीष जैन के सपरिवार के साथ संपन्न हुआ। आज के कार्यक्रम मुख्य अतिथि सवाई सिंघई देवेंद्रकुमार जैन पडवार वाले सागर, अध्यक्षता श्रीमती मैनारानी जी मातेश्वरी, राजेश कुमार दिलीप कुमार पडवार वाले, स्वागताध्यक्ष श्रीमती मोतीबाई खुर्देलीय मातेश्वरी, सुरेंद्र कुमार खुर्देलीय सागर, स्वागत मंत्री श्री मनोज कुमार, मोहित कुमार, अक्षय कुमार पनवारी वाले बड़ामलहरा वाले थे। सुबह का नाश्ता श्री मुकेश जैन एवं पूर्व सरपंच हीरापुर परिवार द्वारा किया गया। सुबह का भोजन श्री गोलापूर्व समाज बैंक

निवेदन

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा ने अपने 100 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। 101वें गौरवपूर्ण वर्ष में हम जिनके कारण 'गोलापूर्व' के रूप में जाने जाते हैं उन 'पूज्य गोललाचार्य' के बारे में हमें जानकारी होनी चाहिये। हमारे विद्वानों, लेखकों ने गोललाचार्यजी पर तथ्यपूर्ण प्रामाणिक दस्तावेज एकत्रित किये हैं जो बहुत ही सराहनीय हैं। हमारी त्रैमासिक पत्रिका का अगला अंक हम 'पूज्य गोललाचार्यजी' को समर्पित कर रहे हैं। गोलापूर्व समाज, गोललाचार्यजी के बारे में सारांशित प्रकाशन योग्य आलेखों का स्वागत है। कृपया अपने लेख सामग्री 15 जून तक भिजवाएँ, जिन्हें प्रकाशित किया जा सके।



अधिकारी संघ द्वारा हुआ। शाम का भोजन श्री पदमकुमार जैन आर.टी.ओ. ऑफिस परिवार द्वारा किया गया। आप सबकी उपस्थिति में निःशुल्क अतिथि भोजन का आनंद उठाया गया और द्वितीय दिवस तो भोजन सुबह 10.30 से 6 बजे तक अनवरत चलता रहा। वहाँ दूसरी ओर नेत्र परीक्षण शिविर पर अपार भीड़ लगी रही। भीड़ को काबू करने के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सभी हमारे सौजन्य कर्ताओं का शॉल, श्रीफल, प्रतीक चिह्न से सम्मानित किया गया। बैंक अधिकारियों ने सभी को क्रमशः शॉल, श्रीफल, प्रतीक चिह्न से बैंक अधिकारी अपनी जोड़ी से पगड़ी पहनाकर मंचासीन थे। सुसज्जित मंच पर शोभायमान हो रहे थे। साथ ही भारतवर्ष में विभिन्न उपजातियों के अध्यक्ष, महामंत्री भी उपस्थित थे।

पल्लीवाल समाज के अध्यक्ष श्री रमेशचंद्रजी जैन रिटा. आई.ए.एस. जयपुर, महामंत्री राजीव रतन इंदौर, तारण समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमंत सेठ अशोक कुमार काकाजी एवं महामंत्री श्री सिंघई ज्ञानचंद जी बीना, बरैया समाज के अध्यक्ष श्री माताप्रसाद जी भंडरी इंदौर, महामंत्री श्री नरेंद्रकुमार जी सोनू ग्वालियर से पधारे थे। हमारे मंच को शोभायमान कर हम गौरान्वित हो रहे थे। सभी महानुभावों ने अपने-अपने विचार रखे। अपनी-अपनी समाज के विकास और उत्थान से सभी को अवगत कराया और कहा कि उपजातियों को एक साथ मंच पर लाने का अच्छा प्रयास है। भारतवर्ष में जितनी उपजातियाँ हों उनको एक मंच पर आकर संपूर्ण जैन समाज को संगठित होकर अपना कार्य करें जो एक इतिहास बने। आगे भी प्रत्येक समाज अपने वार्षिकोत्सव में सभी समाज के अध्यक्ष- मंत्रियों को आमंत्रित करें और संपूर्ण जैन समाज के विकास हेतु दिशा-निर्देश दें।

इन महानुभावों को भी शॉल, श्रीफल, माला, प्रतीक चिह्न से सम्मानित किया गया। बीच-बीच में सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा छोटी-छोटी नाटिकाएँ प्रस्तुत की गईं। द्वितीय दिवस अपार भीड़ थी। इस भारी भरकम पंडाल में बैठने की तो छोड़ें, खड़े होने की भी जगह कम पड़ रही थी। दोपहर में महासभा का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष जी घड़ी ने की। महासभा के इतिहास के बारे में ब्र. जय निशांत ने समाज का गौरवपूर्ण इतिहास बताया, साथ ही गोमटेश बाहुबलि स्वामी के महामस्तकाभिषेक के समय परमपूज्य 108 आचार्य वर्धमान सागरजी महाराज संसंघ एवं कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्ति जी महाराज के संसद सान्त्रिध्य में अखिल भारतवर्षीय दि. जैन गोलापूर्व महासभा का एक विशाल नैमित्तिक अधिवेशन श्रवणबेलगोला में गरिमापूर्ण ढंग से अपार भीड़ के साथ सानंद संपन्न हुआ। गोलापूर्व के बारे में सभी को अवगत कराया। साथ में पूरे 5 घंटे आचार्य

संघ एवं चारूकीर्ति जी ने सभी के वक्तव्यों को सुनकर अपने उद्बोधन में गोलापूर्व महासभा की प्रशंसा की एवं कहा कि जब तक गोलापूर्व उपजाति अभिषेक नहीं करती तब तक इसे पूर्ण नहीं समझा जाता आज पूर्ण हुआ और आश्वस्त किया कि जब भी कोई बड़ा आयोजन श्रमण बेलगोला में आयोजित होगा। गोलापूर्व समाज को प्रतिनिधित्व अवश्य दिया जाएगा।

पं. विनोद जी रजवांस ने महासभा के समय से कार्यकाल की जानकारी देते हुए महासभा के गौरवशाली इतिहास का विवरण प्रस्तुत किया और उक्त समय में किए गए गौरवपूर्ण कार्यों का उल्लेख किया गया। चक्रेशजी शास्त्री भोपाल ने उपजातियों के अध्यक्ष/मंत्री के अभिनंदन के संयोजक के रूप में



अपने विचार व्यक्त किए। 2001 में दि. जैन उपजातियों का सम्मेलन हुआ था उसके पश्चात गोलापूर्व महासभा द्वारा आज हुआ है। 54 उपजातियों का इतिहास ज्ञात हुआ है जिसमें से 22-23 उपजातियों के प्रतिनिधियों से संपर्क कर उन्हें आमंत्रित किया गया था। श्री डॉ. भागचंद जी भागेंदु दमोह ने कहा कि इस देश के इतिहास में हमारी समाज का योगदान के बारे में बताया एवं कहा कि हम आर्थिक रूप से भले ही समृद्ध नहीं रहे, लेकिन चरित्र एवं ज्ञान में समृद्धशाली इतिहास रहा है। महासभा के महामंत्री श्री सुभाष जी चौधरी ने अपनी प्रगति रिपोर्ट से सबको अवगत कराया।

कार्यकारी महामंत्री श्री देवेंद्र लुहारी ने संचालन किया और राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोषजी घड़ी ने विगत वर्ष में चल रहे कार्यक्रम एवं अन्य कार्यक्रमों की जानकारी दी। बुंदेलखण्ड भवन शिखरजी के निर्माण की जानकारी दी एवं महासभा द्वारा दो समाज के गणमान्य महानुभावों को गौरव सम्मान से सम्मानित किया। समाज गौरव सम्मान श्री ब्र. भैया जय निशांतजी टीकमगढ़ एवं श्री चौधरी महेंद्रकुमार जी जबलपुर वालों को सम्मानित किया। समाज गौरव सम्मान का संचालन संयोजक श्री पं. विनोद जी रजवांस ने किया।

बीच-बीच में सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम होते रहे, तत्पश्चात परिचय सम्मेलन शुरू हुआ। युवक-युवतियों ने निरंतर से अपना-अपना परिचय दिया। हमार संचालन समिति ने उनसे प्रश्नोत्तर कर विस्तृत जानकारी सदन को दिलवाई जो अनुकरणीय रही। परिचय सम्मेलन लगभग 2 बजे से 5 बजे तक अनवरत चलता रहा। शाम का भोजन सभी लोगों ने आनंदपूर्वक किया। रात्रि में एक विशाल कवि सम्मेलन श्री अजय अहिंसा वाकल के नेतृत्व में विधिवत संपन्न हुआ।

तृतीय दिवस मंगलाचरण, दीप प्रज्जवलन, चित्र अनावरण इत्यादि के सात आज के समस्त पदाधिकारियों को मंचासीन कर सबको सम्मानित किया गया। आज चित्र अनावरण श्री लक्ष्मी जैन लक्ष्मी टेंट हाउस सागर, मुख्य अतिथि श्री अपूर्व सिंघई एल्डरमेन नगर पालिक निगम सागर, कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ऋषभकुमार दीपककुमार चंद्रिया कोतमा, स्वागताध्यक्ष श्रीमती

अर्चना राकेश जैन चूना मलाई सागर, स्वागत मंत्री श्री सवाई सिंघई जिनेंद्रकुमार जैन इंदौर द्वारा किया गया। सुबह का स्वल्पाहार श्री निर्मल कुमार जी जैन राजिम नवापारा, सुबह का भोजन स्व. श्री बाबू बालचंद्रजी मलैया एवं श्री महेश सरोजरानी मलैया, श्री कपिल मलैया एवं समस्त मलैया परिवार सागर की ओर से एवं सायंकालीन भोजन अखिल भारतवर्षीय दि. जैन गोलापूर्व महासभा की महिला इकाई से संपन्न हुआ।

सुबह से हमारी समाज के आई.ए.एस. एवं आई.पी.एस. अधिकारियों को सम्मानित किया जिसमें श्री सुरेश जैन आई.ए.एस. भोपाल एवं न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन का शॉल, श्रीफल, प्रतीप चिह्न से सम्मान कर गौरव का अनुभव प्राप्त किया एवं श्री सुरेशजी एवं श्रीमती विमला जी अपने-अपने विचार रखकर सभी को विधिवत अवगत कराया, जिसे पूरे सदन ने उनके विचारों की सराहना की। समस्त मंचासीन अतिथियों का सम्मान शॉल, श्रीफल, प्रतीक चिह्न से किया गया। तदूपरांत परिचय सम्मेलन का दौर फिर से शुरू हुआ और बीच में समाज के 80 वर्ष से अधिक उम्र के पुरुष एवं महिलाओं का मंच के सभीप एक स्टेज बनाकर उनको उनके परिवार को आमंत्रित कर सभी को शॉल, श्रीफल, प्रतीप चिह्न से सम्मानित किया गया जो लगातार 2-3 घंटे अनवरत चलता रहा। भारत देश के सभी वरिष्ठ नागरिकों का विधिवत सम्मान किया गया। बीच में सांस्कृतिक कार्यक्रम की जांकियाँ प्रस्तुत की गईं। साथ ही इंदौर से आई टीम ने सीताजी का अग्नि परीक्षा नाटिका का मंचन कर सभी के मन को मोह लिया।

उसके बाद संस्कार पत्रिका में जो प्रविष्टियाँ दी जाती हैं उनके संकलनकर्ता जो अपना अमूल्य समय देते हैं उन सभी को भी सम्मानित किया गया। सभी कार्यकर्ताओं जिन्होंने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से महासभा के प्रत्येक कार्यक्रमों में तन-मन-धन देकर जो अमूल्य सेवाएँ प्रदान की, उन सभी को महासभा के पदाधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया। परिचय सम्मेलन में 10-15 समितियाँ होती हैं जिनके बिना इतना बड़ा कुंभ नहीं संभल पाता। भोजन, पानी, आवास, किट वितरण, रजिस्ट्रेशन इत्यादि अनेकों समितियों के सभी पुरुष एवं महिलाओं को सम्मानित किया गया और उसके बाद ही महिला सम्मेलन शुरू हुआ। महिला सम्मेलन में पूरे देश के अनेक प्रांतों से पधारी हुई महिलाओं ने भाग लिया और अपने-अपने विचार रखे। अखिल भारतवर्षीय दि. जैन गोलापूर्व महासभा के अंतर्गत महिला इकाईयों का कहीं-कहीं गठन किया गया, जिसके संयोजक श्री चक्रेश शास्त्री भोपाल, श्री विनोद जी कोतमा, श्री सुरेश जी मारौरा हैं। चक्रेशजी शास्त्री द्वारा महिला सभा के कर्तव्यों एवं दायित्वों को विस्तारपूर्वक बताया गया, साथ ही में जहाँ-जहाँ महिला सभा का गठन हुआ उन सबकी जानकारी विधिवत दी। सभी गठित पदाधिकारियों के नाम विवरण सहित जानकारी दी। इस बार का महिला सम्मेलन अभूतपूर्व रहा। सभी ने समाज के विकास एवं महिला सभा के अलग-अलग प्रांतों प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी बात रखी जो गौरवपूर्ण रही। उक्ताशय की जानकारी कार्यकारी महामंत्री श्री देवेंद्र लुहारी ने दी। संपूर्ण कार्यक्रम को संगीत के साथ श्री राजीव सिंघई एंड पार्टी ने अपने वाद्ययंत्रों के साथ परिचय सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी कला के माध्यम से महासभा के इस कुंभ में अपनी प्रस्तुति देकर कार्यक्रम को ऊँचाई प्रदान की।

● देवेंद्र लुहारी (का. महामंत्री)
अ. भा. दि. गोलापूर्व महासभा, सागर

शताब्दी वर्ष पर महासभा द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन



सागर। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा का शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में कटरा नमक मंडी स्थित पद्माकर स्कूल में निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किया गया। जिला चिकित्सालय से डॉ. एम.के. पॉल, डॉ. मधु जैन, डॉ. विजय सोधिया, डॉ. आर.डी. गायकवाड़ और आयुष विभाग से डॉ. अंजलि सिंघई, डॉ. माधवी, डॉ. निधि जैन मौजूद रहीं।

डॉ. शचीन्द्र मोदी तेंदूखेड़ा, डॉ. प्रकाश जैन तेंदूखेड़ा, डॉ. प्रमोद गोदरे, डॉ. राजेश जैन, डॉ. कमल जैन, डॉ. पवन जैन, डॉ. संतोष जैन, डॉ. महेन्द्र जैन, डॉ. महेश जैन, डॉ. सौरभ जैन, डॉ. विनीत सेठ, डॉ. जिनेन्द्र जैन, डॉ. आयुषी जैन, डॉ. अश्रुता जैन, डॉ. मधुर जैन, डॉ. पीयुष जैन, डॉ. विशाल जैन, डॉ. तोला सिंह, नीलम अहिवार, प्रगति दांगी, विद्या वारिधि शर्मा के अलावा सागरश्री हॉस्पिटल से केशव कुशवाहा, संदीप मडैया, कामाक्षी, सरिता, रागिनी, इंदल, सुरेन्द्र, रोशनी ने भी शिविर में अपनी सेवाएँ दीं। शिविर में एम्स भोपाल से सीनियर रेजीडेंट डॉ. मधुर जैन ने कहा कि अनियमित जीवन शैली और खानपान के चलते मधुमेह और थायराइड के मरीज बढ़ रहे हैं। संतुलित खानपान और व्यायाम के माध्यम से दोनों रोगों से बचा जा सकता है। शिविर के उद्घाटन सत्र का संचालन देवेन्द्र लुहारी और आभार श्रेयांस जैन ने व्यक्त किया।

महासभा के महामंत्री चौ. सुभाष जैन एवं सुरेन्द्र खुरदेलिया ने महासभा

के शताब्दी वर्ष में कराए जा रहे सामाजिक कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। शिविर में महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष जैन घड़ी, पद्मचंद जैन, अशोक शाह, अशोक पिढ़रुआ, राकेश चच्चाजी, कमलकांत चौधरी, अशोक वीर, अनिल चंदेरिया, मुकेश बालाकोट, पी.सी. जैन, अनिल नैनधरा, प्रदीप रांधेलिया, राजेश सिंघई, महेन्द्र महरोल, राजेश सरस, मनोज बंगेला, जयकुमार जैन, सुनील पड़वार, विकास जैन, अखिल जैन, सौरभ जैन, सचिन जैन, आशीष मरैया, नवीन जैन, संदीप जैन, अभय जैन, आदेश जैन, राजीव कपासिया, रविकांत सिंघई, अमित चौधरी, श्रीमती सुधा चौधरी, सुषमा जैन, मीना जैन, आरती सवाई, आशा अजय सेसई, अंजना जैन, दीप्ति चंदेरिया उपस्थित थे। शिविर में 1150 लोगों ने अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराया। शिविर में तत्कालीन वित्तमंत्री जयंत मलैया और नगर विधायक शैलेन्द्र जैन ने भी पहुँचकर निरीक्षण किया। शिविर में 130 ईसीजी, 360 ब्लड शुगर और 100 लोगों की हिमोग्लोबीन की निःशुल्क जांच की गई। वहीं एक ही प्रांगण में तीनों प्रकार की विधियों से लोगों का परीक्षण हुआ। एलोपैथी के अलावा होम्योपैथी और आयुर्वेद चिकित्सकों द्वारा मरीजों का परीक्षण किया गया। 126 लोगों ने होम्योपैथिक तो 218 लोगों ने आयुर्वेदिक उपचार कराया। वहीं आयुष विभाग की ओर से निःशुल्क दवा वितरित की गई। इस अवसर पर होम्योपैथिक विभाग की ओर से मलेरिया से बचाव हेतु दवा भी पिलाई गई जिसमें एक साल तक मलेरिया न होने की बात कही गई। ● सुरेन्द्र खुरदेलिया



गोलापूर्व गौरव सम्मान से सम्मानित

ब्र. जय निशांतजी

प्रतिष्ठा पितामह प्रतिष्ठाचार्य पं.

गुलाबचंदजी 'पुष्ट' की बगिया के 'पुष्ट' होने का गौरव जिन्हें प्राप्त हो, उन्हें परिचय की आवश्यकता नहीं है।

सम्पूर्ण देश में दादा स्व. श्री मन्त्रलालजी प्रतिष्ठाचार्यजी की परम्परा को द्विगुणित किया स्व. पं. गुलाबचंदजी 'पुष्ट' ने, उन्हीं के घर-आंगन में 17 अगस्त 1959 में जन्मे जय भैया ने एम.एस.सी. तक शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत अपने पूज्य पिताश्री गुलाबचंदजी 'पुष्ट' के संस्कारों से ओतप्रोत होकर शासकीय सेवा को तिलांजलि देकर, संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर सम्पूर्ण जीवन धर्म कार्य के लिए समर्पित करने का निर्णय लिया। दो सौ से अधिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने वाले वे देश के एकमात्र प्रतिष्ठाचार्य हैं जिन्हें सर्वाधिक प्रतिष्ठा कराने के साथ देश के सबसे बड़े त्रिलोकीर्थ बड़गाँव में 3000 से अधिक प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित



करने का सौभाग्य मिला है। 84 नवीन जिनालयों का निर्माण आपके मार्गदर्शन में हुआ है। प्रतिष्ठा रत्न, युवा रत्न, वाणी भूषण, प्रतिष्ठा भास्कर, प्रतिष्ठा चूड़ामणि सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित आप प्रतिपल धर्मकार्य में संलग्न हैं। अखिल भारतीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में देश के विद्वानों को निरंतर प्रोत्साहित करने का कार्य भी आपके द्वारा किया जा रहा है। प्रागैतिहासिक तीर्थ, अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (उ.प्र.) के निदेशक के रूप में आपने क्षेत्र को अल्प समय में राष्ट्रीय क्षितिज पर स्थापित किया है।

प्रतिष्ठा, वास्तु शास्त्र, ओजस्वी वक्ता, मंच संचालक, प्रवचनकार के साथ आपने प्रतिष्ठा-पराग, प्रतिष्ठा रत्नाकर जैसे अनेक ग्रंथों का लेखन, सम्पादन, प्रकाशन भी कराया है। आपका हाँसमुख व्यक्तित्व जन-जन के मन में सहज आकर्षण उत्पन्न करता है। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा के शताब्दी वर्ष के अभूतपूर्व आयोजन के अवसर पर आपको गोलापूर्व समाज गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया जो कि समाज के लिए गौरव का विषय है।

हमें प्रसन्नता है कि मंत्रों के माध्यम से 'पाषाण से परमात्मा' की यात्रा के कुशल सारथी बाल ब्रह्मचारी जय निशांत (टीकमगढ़) अपनी तीसरी पीढ़ी तक प्रतिष्ठा के कार्य को सम्पन्न करा रहे हैं।

आपकी सेवाओं को नमन करते हुए महासभा परिवार आपको बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनाएँ प्रेषित करता है।

● राजेन्द्र जैन महावीर

शताब्दी वर्ष पर रजत सिक्के का अनावरण



गोलापूर्व महासभा के 100 वर्ष (1918 से 2017) पूर्ण होने के उपलक्ष्य में रजत सिक्के का निर्माण किया गया। यह

रजत सिक्का 20 ग्राम एवं 10 ग्राम शुद्ध चाँदी पर

निर्मित किया गया है। सिक्के के एक तरफ

अतिशय क्षेत्र बहेरीबंद में विराजमान

10वीं सदी का मूलनायक भगवान

1008 शांतिनाथ की खड़गासन प्रतिमा

उकेरी गई है। दूसरी तरफ जैन ध्वज

उकेरा गया है। अखिल भारतवर्षीय

दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा की स्थापना

1918 में श्री सिद्धकेत्र रंभावर्तजी में की गई

थी। स्थापना के साथ-साथ देश की स्वतंत्र को

महत्व दिया गया। उस समय से ही गोलापूर्व जैन मासिक

पत्रिका का प्रकाशन किया गया। संस्था 1932 तक लगातार प्रगति

के पथ पर रही। आजादी के आंदोलन के कारण संस्था का कार्य धीमा पड़ गया।



पुनः 1942 में पं. मोहनलालजी काव्यतीर्थ के द्वारा सम्पूर्ण भारत की गोलापूर्व समाज की जनगणना कर एवं इस संस्था को गति देने का प्रयास किया गया। संस्था का संचालन संपूर्ण भारत वर्ष में गौराबाई दिगंबर जैन मंदिर के माध्यम से किया गया। इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में नैनागिरिजी में पुनः महासभा का पुनर्गठन कर समाज के विकास हेतु कार्य प्रारंभ हुआ। आज संस्था सुचारू रूप से चल रही है। इसी प्रगति के प्रयास एवं विकास के साथ सामाजिक एकता को स्थापित करने के लिए यह स्मृति रजत सिक्का निकाला गया है। सभी धर्मालुओं से निवेदन है कि इस सिक्के को खरीदकर अपने घर को समृद्ध करें ताकि आने वाली पीढ़ी को हमारे इतिहास की जानकारी मिलती रहे।

● सुरेन्द्र खुर्देलिय

अखिल भारतवर्षीय दि. जैन गोलापूर्व महासभा का नैमित्तिक अधिवेशन संपन्न

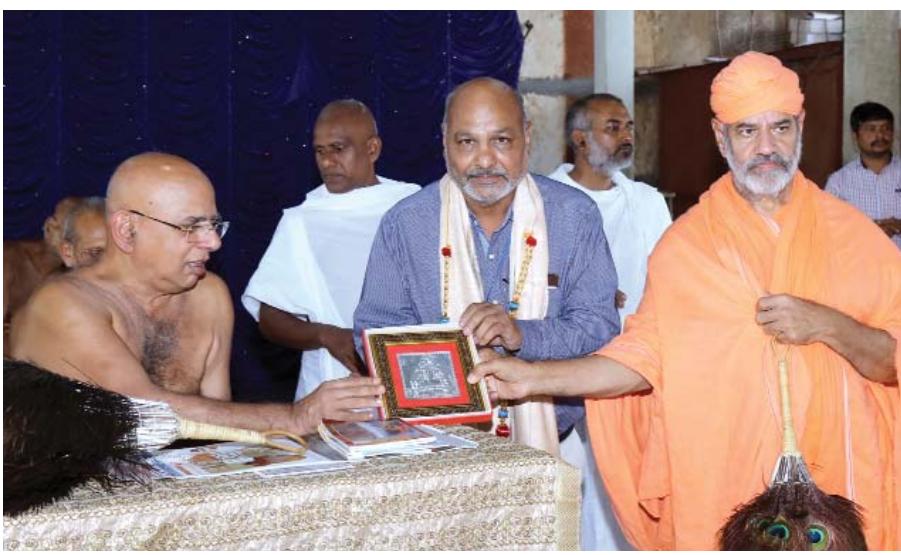


श्रवणबेलगोला। अखिल भारतवर्षीय दि. जैन गोलापूर्व महासभा का नैमित्तिक अधिवेशन परम पूज्य आचार्यश्री वात्सल्य वारिधि 108 वर्धमान सागर महाराज जी के संसंघ एवं कर्मयोगी पूज्य पूज्य स्वामी चारूकीर्तिजी के सान्निध्य में गरिमापूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। स्वामीजी का मार्गदर्शन एवं उनके निर्देशों पर ही समाज का निर्णय हुआ कि गोलापूर्व महासभा के सभी सदस्य 28, 29 अगस्त 2018 को अधिक से अधिक संख्या में गोम्मटेश पहुँचे। गोलापूर्व महासभा के विभिन्न प्रांतों दिल्ली, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, म.प्र., बुद्धेलखंड, मालवांचल के लोगों ने पहुँचकर महासभा का गौरव बढ़ाया। लोगों ने ट्रेन, बस, हवाई यात्रा का भरपूर आनंद उठाया और इसी के साथ ही 28 अगस्त को लगभग 500-600 लोग श्रवणबेलगोला पहुँच गए। आवास एवं भोजन की व्यवस्था में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। 28 अगस्त को सुबह सभी लोगों ने तीर्थ वंदना एवं पूजन चंद्रगिरि पर्वत पर सामूहिक रूप से की। सुबह 11 बजे भोजन किया गया, बाद में लोगों का पंजीयन एवं परिचय दोपहर में कान्जी आश्रम एवं आंतरिक बैठक की गई। रात्रि में अखिल भारतवर्षीय दि. जैन गोलापूर्व महासभा की कार्यक्रमिणी बैठक जिसमें 29 अगस्त के विधिवत कार्यक्रमों पर विचार किया।

29 अगस्त को ऊपर विंध्यगिरि पर्वत पर बाहुबली भगवान का मस्तकाभिषेक भी महासभा की रसीद को ही अभिषेक कूपन की प्राथमिकता दी गई जो बहुत ही शानदार व्यवस्था रही। सभी ने गोम्मटेश स्वामी का जलाभिषेक एवं पंचामृत अभिषेक करके अपने पुण्य उदय की सफलता मानकर क्रमशः अभिषेक किया। अभिषेक परम पूज्य देवनंदी जी महाराज के परम प्रभावक शिष्ट श्री 108 अमरकीर्ति जी महाराज के निर्देशन में उनके मुखारबिंद से अभिषेक मंत्रोचार के

साथ विधिवत संपन्न कराया, महाराज श्री की मुनि दीक्षा बुद्धेलखंड में हुई थी। कृपया सभी से परिचित थे। उन्होंने महासभा के बारे में विस्तार से पर्वत पर ही सबको अवगत कराया। ऐसा लग रहा था कि जैन महासभा का आज के दिन श्रवण बेलगोला विंध्यगिरि पर भरपूर वर्चस्व हो। सभी ने आनंदित होकर नृत्य करते हुए अभिषेक के दृश्य का आनंद उठाया। पंचामृत अभिषेक की प्रथम बोली भी महासभा के सदस्य द्वारा ली गई, जिससे पूरा महासभा का वर्चस्व रहा, वंदना अभिषेक करके भोजन का आनंद लेते हुए, दोपहर 1.30 बजे से चामुंड राय सभा भवन में नैमित्तिक अधिवेशन के लिए तैयारी की गई, जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष जी घड़ी सागर जिसमें मंच पर परम पूज्य वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री 108 वर्धमानसागर संसंघ मंच पर विराजमान हुए, नैमित्क, अधिवेशन में पधारे नर-नारी सिर पर टोपी पहनकर भारतीय संस्कृति का परिचय देते हुए उपस्थित थे। मंगलाचरण, दीप प्रज्ज्वलन हुआ।

उनके पश्चात् आचार्य संघ को श्रेष्ठियों द्वारा एवं संस्थाओं द्वारा श्री फल भेंट किए गए, द्रोणिगिरि, अहारजी, नवागढ़जी, नैनागिरिजी, गिरारगिरि जी पटेरियाजी महासभा के सभी पदाधिकारी, वर्णा चिकित्सा निधि, गौराबाई दि. जैन मंदिर सागर, जैन भ्रातृ संघ सागर एवं अनेक संस्थाओं और नगरों से पधारे महानुभावों ने आचार्य संघ के चरणों में श्रीफल अर्पित किए गए।



कार्यक्रम का संचालन ब्र. जय निशांत जी टीकमगढ़ द्वारा एवं राजेंद्र जी 'महावीर' सनावद द्वारा सफल संचालन किया गया। उसी समय पं. महेंद्रकुमार मनुज इंदौर के महामंत्रिव निर्देशन में एक विद्वत् गोष्ठी बुलाई गई थी। उस विद्वत् गोष्ठी में उच्चकोटि के विद्वान उपस्थित थे जो अधिकांश गोलापूर्व समाज के शीर्षस्थ विद्वान्



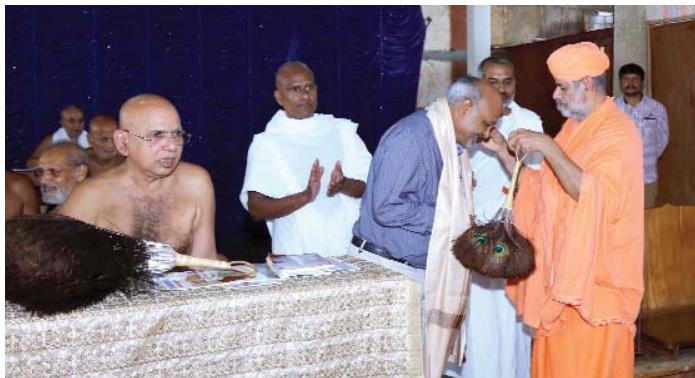
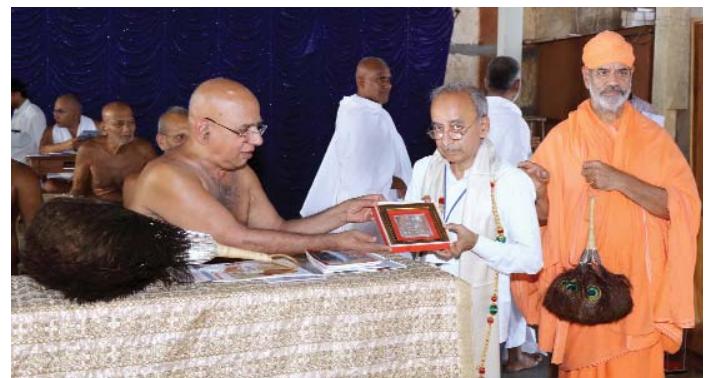
थे। उन्होंने हमारे नैमित्तिक अधिवेशन में अपनी गरिमामयी उपस्थिति प्रदान कर इस अधिवेशन को ऊँचाइयाँ प्रदान की। गोलापूर्व समाज का उद्भव एवं परिचय डॉ. भागचंद जी भास्कर जी ने लगभग साठवीं-आठवीं शताब्दी से अब तक का विस्तार पूर्वक परिचय दिया, जो काफी प्रभावशाली रहा। गोलापूर्व समाज के गैरव महानुभावों के योगदान के बारे में ब्र. जय निशांत जी टीकमगढ़ ने बताया।

गोलापूर्व समाज का स्वतंत्र भारत में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के योगदान का पूरा ब्यौरा पं. श्री विनोद जी रजवांस द्वारा दिया गया। गोलापूर्व महासभा का गठन एवं उद्देश्य के बारे में संपूर्ण जानकारी कार्यकारी महामंत्री देवेंद्र लुहारी सागर ने दी। महामंत्री सुभाष चौधरी जी ने अपनी प्रगति रिपोर्ट दी। पं. महेंद्रकुमार जी मनुज ने भी सुरेश जी मारौरा, पं. सनतकुमार रजवांस उद्बोधन दिया एवं अनेक विद्वानों एवं महानुभावों ने अपने-अपने विचार रखें। तीन पुस्तकों का लोकार्पण किया गया जिसमें (1) ब्र. सम्मेलन सारिका, (2) त्रैमासिक गोलापूर्व जैन पत्रिका बाहुबली विशेषांक, (3) पं.

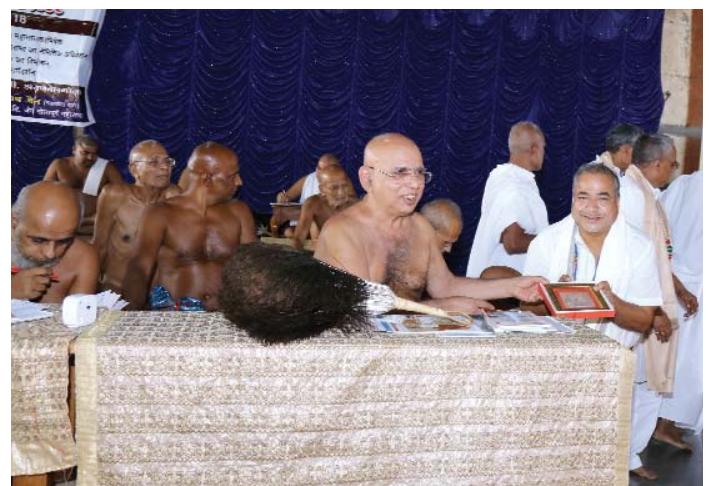
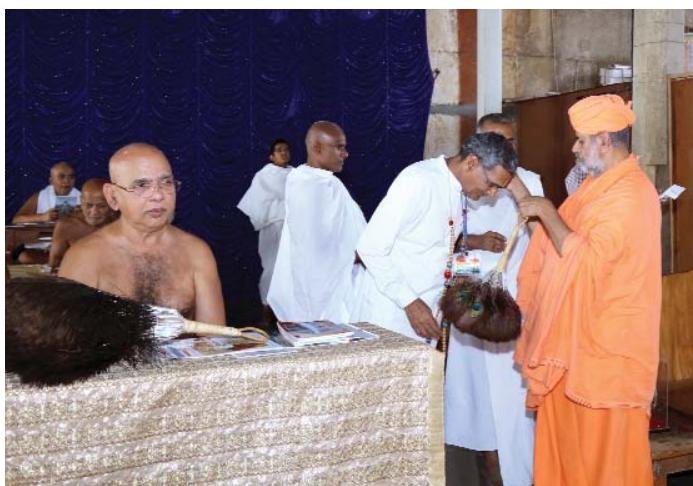
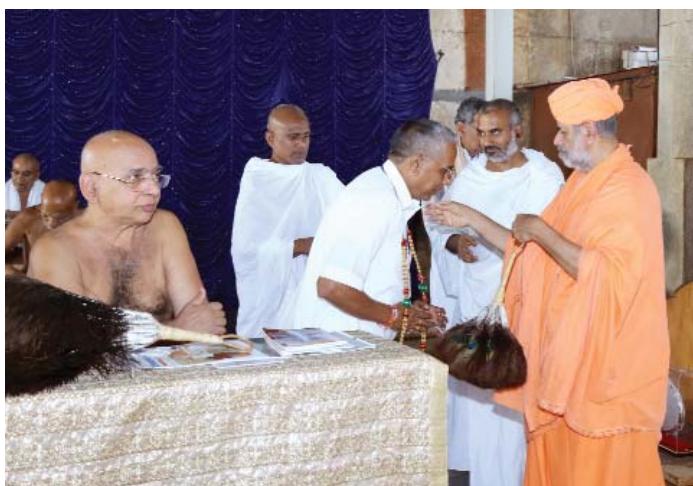
पत्रालालजी साहित्याचार्य द्वारा रचित बाहुबली छंदस्वामी जी द्वारा महासभा के पदाधिकारियों को शॉल, प्रतीक चिह्न से स्वयं स्वामीजी द्वारा सम्मानित किया गया। कर्मयोगी चारूकीर्तिजी ने कहा कि जब तक गोलापूर्व समाज मस्तकभिषेक नहीं कर लेती, तब तक हम इसे पूर्ण नहीं समझते। आज आप सभी ने अभिषेक किया, अब पूर्णता की ओर है। अभी तक कई गोष्ठियाँ हुई, सम्मेलन हुए हैं लेकिन एक अनूठा नैमित्तिक अधिवेशन हुआ जिसके आचार्य संघ और स्वयं में 5 घंटे तक मंच पर उपस्थित नहीं रहा। आज गोलापूर्व महासभा का अधिवेशन में सराहनीय कार्य रहा है।

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि वर्धमान सागरजी ने भी गोलापूर्व महासभा के अधिवेशन में इसके गैरवशाली इतिहास को जानकर प्रसन्नता हुई और जो विद्वानों ने गोलाचार्य की बात की थी वह भी सराहनीय है। गोलापूर्व समाज के भारत में सर्वाधिक विद्वान है। जिनके ज्ञान और समाज के योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। सभी को मंगल आशीर्वाद दिया एवं रात्रि में एक विराट कवि सम्मेलन हुआ।





» भरोसा करते वक्त होशियार रहिये क्योंकि फिटकरी और मिश्री एक जैसे ही नजर आते हैं।



» गिरते हुए पत्तों ने मुझे यह सिखाया हैं जब बोझ बन जाओगे तो अपने ही तुम्हें गिरा देंगे।



» अच्छी आदतों से शक्ति की बचत होती है और अवगुणों से बर्बादी होती है।

गोलापूर्व महासभा के शताब्दी वर्ष में श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में आयोजित नैमित्तिक अधिवेशन पर एक विशेष टिपोर्ट

आत्मा की स्वतंत्रता के लिए अंतरंग शत्रुओं पर विजय

» सुषमा जैन

मिलाइ

वर्तमान शासन नायक तीर्थकर महावीर के आठवें उत्तराधिकारी श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी ने श्रवणबेलगोला में समाधि ली। उनके शिष्य चँद्रगुप्त मोर्य ने भी यहाँ पर सल्लेखना समाधि ली। उसी काल में प्रस्थापित धर्मचार्य पीठ आज भी यहाँ धर्म तथा समाज की सुरक्षा एवं साहित्य तथा कलाओं के संरक्षण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। पूज्य आचार्य भद्रबाहु के बाद पूज्य आचार्य कुन्दकुन्द देव की चरणरज से भी यह क्षेत्र पवित्र हुआ।

गंगराज्य के सेनापति महामात्य चामुण्डराय ने 981 ई. मे भगवान बाहुबली स्वामी की 57 फीट ऊँची प्रतिमा उत्कीर्ण कराई तभी उन्होंने यहाँ एक मठ की स्थापना कराई। चामुण्डराय के अनुरोध पर आचार्य श्री नेमीचंद्राचार्य स्वामी ने उन्हें मार्गदर्शन दिया। पूज्यमुनि शुभचंद जी ने होयसल राजवंश के राजा का मार्गदर्शन किया, राजा ने चारुकीर्ति स्वामी उपाधि से उन्हें सम्मानित किया तब से श्रवणबेलगोला मठ के धर्मपीठ पर भट्टरकों का नाम चारुकीर्ति स्वामी होता है। वर्तमान पीठाधीश जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति स्वामी जी ने धर्मचरण में आधुनिक दृष्टिकोण अपनाकर जनसामान्य को शिक्षा एवं स्वास्थ्य सँबंधी सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराई। स्वामी जी धार्मिक सिद्धांतों एवं परम्पराओं के साथ आधुनिकतम तकनीकी का अनूठा समागम करते हैं। श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला मे होने वाले हर समारोह अनुपम और गरिमामय होते हैं। स्वामी जी के जीवन में सादगी एवं समता के साथ इनकी विनय, भक्ति भावना इन्हें अलौकिक गरिमापूर्ण व्यक्तित्व की छवि देती है। स्वामी जी के पास एक अनूठा जादुई गुण है वे सबमें अच्छाईयां ढूँढ़ लेते हैं। इनकी सहनशीलता, सहदयता से ही श्री बाहुबली भगवान महामस्तकाभिषेक महोत्सव वैभवशाली गरिमा के साथ सम्पन्न हो रहा है। महोत्सव में सानिध्य मिला वात्सल्य वारिधि परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ससँघ एवं

परम पूज्य आचार्यों, पूज्य मुनिराजों पूज्य आर्थिका माता जी एवं अनेक त्यागी जनों का।

हम सभी का परम सौभाग्य है कि आज 29-8-2018 को अखिल भारतीय दिग्म्बर जैन गोलापूर्व महासभा के शताब्दी वर्ष समारोह में महासभा के नैमित्तिक अधिवेशन के निमित्त वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के संसंघ सानिध्य में एवं कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टरक स्वामी जी के नेतृत्व में युगपुरुष श्री गोमटेश बाहुबली के चरणों एकत्रित हुए हैं। जिस समाज को संगठन के प्रारंभिक प्रयासों में ही पूज्य मानवतावादी संत श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी का आशीर्वाद एवं दिशानिर्देश मिलता रहा। उस समाज का निरंतर उन्नति के पथ पर बढ़ते जाना निश्चित है। समाज की वर्तमान अवस्था तक की यात्रा पर दृष्टि डालें तो इसका गैरवपूर्ण इतिहास जानने के लिए अनेक प्रशस्तियाँ और शिलालेख उपलब्ध हैं। इतिहास की इस धरोहर का अवलोकन करने पर हमें लगता है कि हमारे पूर्वज कितने कर्तव्य परायण, धर्म निष्ठा, स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने ज्ञान के साथ साथ चरित्र को प्रधानता देते हुए जीवन के हर क्षेत्र में अपने व्यापक दृष्टिकोण और सूझबूझ से अपनी वैचारिक और भौतिक संपदा का उपयोग किया। जब मैं समाज के गैरवशाली अतीत को निहारती हूँ तो किसी सुविज्ञय की ये पैकियाँ स्मरण आती हैं।

शानदार था भूत भविष्यत भी महान है।

गर संभालें आप उसे, जो वर्तमान है

बुजुर्गों का अनुभव, जवानों का उत्साह, नारी की समझदारी एवं पुरुषों का पराक्रम ये मिलकर चलें तो समाज में चमत्कार हो जाये। समाज के चहुंमुखी विकास के लिए हम सब कटिबद्ध रहेंगे। आज गोलापूर्व महासभा के शताब्दी वर्ष में श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला के चामुण्डराय मंडप में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी सहित 126 साधू संतों एवं पूज्य आर्थिका माता जी एवं अनेक त्यागी जनों की उपस्थिति में जगत गुरु स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टरक स्वामीजी के नेतृत्व में मुझे सहभागिता का अवसर मिला।

मां भारती की परतन्त्रता के समय देश के स्वतन्त्रा संग्राम में गोलापूर्व समाज के महानुभावों की सहभागिता। मैं पहले स्वतन्त्रता शब्द से अपनी बात प्रारंभ करूँगी। युगपुरुष बाहुबली भगवान जिनका महामस्तकाभिषेक महोत्सव 2018 का अवसर पर हम सभी को यहाँ आने का और 29-8-2018 को आज प्रातः महामस्तकाभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उन्हें गोमटेश बाहुबली की बात करें जिन्होंने अपनी आत्मा की स्वतन्त्रता के लिए अपनें अंतरंग शत्रुओं पर विजय पाने के लिए जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर एक वर्ष तक एक आसन से तपस्या करी और स्वतन्त्र हो गए मोक्ष लक्ष्मी का वरण किया। गंग राज्य के सेनापति महामात्य श्री चामुण्डराय जिन्होंने बाहुबली भगवान की यह मूर्ति सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य महाराज के निर्देशन

में उत्कीर्ण कराई। उन्होंने राष्ट्र की रक्षा के लिए अनेक युद्ध किए कहा जाता है उनके एक हाथ में शस्त्र एवं एक हाथ में शास्त्र हुआ करता था उन्होंने दोनों मर्यादा सुरक्षित रखी। मातृ भक्त चामुण्डराय नें चैबीसों तीर्थकरों की भक्ति स्वरूप पुराण की रचना करी जो चामुण्डराय पुराण है उन महा मनीषी ने सलेखना धारण कर इसी श्रवणबेलगोला क्षेत्र पर समाधि मरण किया। समाज में देश प्रेम और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता से गोलापूर्व समाज के अनेक देशभक्तों की स्वतन्त्रता संग्राम में सहभागिता रही। लोगों ने तन मन धन से सहयोग किया। उनमें से कुछ महानुभावों के नामों का उल्लेख मैं यहाँ कर रही हूँ।

स्व. श्री पण्डित वंशीधर जी व्याकरणाचार्य बीना- स्वतन्त्रता सेनानी रहे। भारत छोड़े आन्दोलन में सक्रिय रहे। अनेकों बार लम्बे समय तक जेल में रहे। स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान के उपलक्ष्य में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी द्वारा सम्मानित किया गया।

स्व. श्री बाबूलाल डी गाडरवारा- अंग्रेजों भारत छोड़े आन्दोलन में बहुत सक्रिय रहे। बहुत समय तक जेल में रहे स्वतन्त्रता के बाद भी राजनीति में रहकर जनसेवा करते रहे।

बाबूलाल जी संघी जबलपुर- इन्होंने मालगुजारी एवं स्व अर्जित संपत्ति को स्वतन्त्रता आन्दोलन में लगाकर सक्रिय रहे।

स्व. श्री बाबूलाल जी गढ़कोटा- स्वतन्त्रता सेनानी होते हुए भी इन्होंने स्वतन्त्र भारत की सरकार से मिलने वाली सुविधा स्वीकार नहीं की।

स्व. श्री बारेलाल जी कटनी- स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया।

प्राकृत शिक्षण शिविर संपन्न



अनूपपुर। तीर्थकर ऋषभदेव विद्वत् महासंघ के तत्वावधान में प्राकृत शिक्षण शिविर 9 से 17 अप्रैल 2019 तक डॉ. अनुपम जैन एवं पर्दित सुरेश जैन मारौरा के मार्गदर्शन में दिग्म्बर जैन समाज कोतमा जिला अनूपपुर (म.प्र.) में लगाया गया। शिविर में ब्र. बहिन समता दीदी मारौरा (इंदौर) ने श्रवणबेलगोला से पत्राचार पाठ्यक्रम एवं प्राकृत की कक्षाएं लगाई। 40 विद्यार्थी प्राकृत की परीक्षाएं भी देंगे। महावीर जयंती के अवसर पर प्राकृत में नाटक एवं कवि सम्मेलन का आयोजन कोतमा में किया गया जिसकी सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। ज्ञात हो ब्र. समता दीदी प्राकृत के लिए समर्पित हैं। तीर्थकर विश्वविद्यालय मुरादाबाद से परमाणु सिद्धांत और जैन दर्शन पर पीएचडी कर रही हैं।

स्व. श्री खेमचंद जी स्वदेशी तेंदूखेड़ा नरसिंहपुर- राष्ट्रीय सत्याग्रह के लिए सेना तैयार कर स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया।

स्व. श्री गिरधारी लाल जी गढ़कोटा- अपने नगर में काँग्रेस कमेटी की स्थापना की। जंगल कानून भंग कर, गांव गांव में महात्मा गांधी के सिद्धांतों का प्रचार करते रहे।

स्व. श्री गोपीलाल जी सांधेलिया सागर- राष्ट्र प्रेम की प्रबल भावना से भारत छोड़े आन्दोलन में संलग्न रहे, बहुत बार जेल गए।

स्व. श्री छोटेलाल जी भास्कर बिलाई- अपनी मां के प्रोत्साहन स्वरूप भारत छोड़े आन्दोलन में सहभागिता कर भारत माता की सेवा की।

स्व. श्री अमृतलाल जी फणीन्द्र बड़गाँव- विद्यार्थियों का संगठन बना कर स्वतन्त्रता संग्राम में संलग्न रहे।

स्व. श्री दयालचंद जी सागर- भारत छोड़े आन्दोलन में अंग्रेज शासन के खिलाफ परचे बांटने पर जेल में कठोर यातनाएं सहीं।

स्व. श्री दयाचंद जी उज्जैन- आप ट्रेन में बैठे अंग्रेजों पर हमला कर भूमिगत हो गए। क्रान्तिकारियों का तन मन धन से सहयोग किया।

ऐसे अनेक महानुभावों ने माँ भारती की सेवा की उन सभी देश प्रेमियों को यहाँ मैं सादर स्मरण करते हुए नमन करती हूँ। गोलापूर्व महासभा के अध्यक्ष श्री संतोषजी (घड़ी) एवं उनकी कार्यकारिणी के सदस्यों को साधुवाद देती हूँ जिन्होंने समस्त समाज को इस अधिवेशन के निमित्त ये अवसर दिया कि सभी ने श्री क्षेत्र पर आकर श्री गोमटेश बाहुबली के दर्शन पूजन अभिषेक कर अपना जीवन धन्य किया। ■

‘गोलापूर्व जैन समाज का भारतीय संस्कृति को अवदान’ ग्रन्थ का विमोचन आचार्य श्री 108 सौभाग्यसागरजी महाराज के सान्निध्य में प्रो. डॉ. टीकमचन्द्र जैन के द्वारा श्री महावीर जयंती-2019 के अवसर पर दिल्ली में किया गया। ग्रन्थ के संपादक प्राचार्य सुरेन्द्र कुमार जैन (9424672731) भगवां (मध्यप्रदेश) हैं।



चारित्र-चक्रवर्ती आचार्यश्री शान्तिसागरजी के मुनिदीक्षा शताब्दी समारोह का शुभारंभ वर्षभर होंगे अनेक आयोजन, हुम्चा ने हुई बैठक



हुम्चा। 20 वीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती 108 श्री शान्तिसागरजी महामुनिराज के मुनि दीक्षा शताब्दी महोत्सव का भव्य शुभारंभ विश्व प्रसिद्ध क्षेत्र हुम्चा में परमपूज्य वात्सल्य वारिधि पंचमपट्टाधीश आचार्यश्री वर्धमानसागरजी संघ के सान्निध्य तथा क्षेत्र के यशस्वी भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति स्वामीजी के निर्देशन में हुआ।

20 मार्च 2019 को प्रातःकाल की शुभबेला में ध्वजारोहण के साथ निदिवसीय आयोजन का आरंभ हुआ। दोपहर 4 बजे श्री क्षेत्र पर आचार्य संघ के मंगल प्रवेश पर भव्य आगवानी श्री क्षेत्र के भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति स्वामीजी एवं श्रावकों ने की। उपरांत आयोजित सभा में सर्वप्रथम भारतीय डाक विभाग (कर्नाटक सर्किल) द्वारा जारी विशेष आवरण का विमोचन किया गया। फालुन शुक्ला चतुर्दशी महामना आचार्यश्री शान्तिसागरजी की दीक्षा तिथि होने से दिव्य अष्ट द्रव्य से संगीतमय पूजन की गई।

आचार्य शान्तिसागरजी ने दिगम्बरत्व के दर्शन सुलभ कराये

आचार्यश्री वर्धमानसागरजी ने अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए कहा कि महामना आचार्यश्री शान्तिसागरजी महामुनिराज ने आज के दिन मुनि दीक्षा लेकर एक नये युग का प्रारंभ किया था। उन्होंने कठिन परिस्थितियों एवं विपरीत समय में मुनि दीक्षा लेकर हम लोगों के लिए मार्ग सुलभ कर दिया। यदि वे दीक्षा नहीं लेते तो शायद भारत में दिगम्बरत्व के दर्शन दुर्लभ ही होते।

21 मार्च 2019 को सुबह क्षेत्र के मूलनायक भगवान श्री पाश्वर्नाथ स्वामी का विशेष पंचामृत महाभिषेक सम्पन्न हुआ। दोपहर में आचार्यश्री वर्धमानसागरजी के संघस्थ मुनिश्री हितेन्द्रसागरजी एवं आचार्यश्री गुरिनंदीजी के सुशिष्य मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी द्वारा रचित आचार्यश्री शान्तिसागर विधान का आयोजन आचार्य संघ के सान्निध्य तथा क्षेत्र के भट्टारक स्वामीजी के निर्देशन में भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। विधान के माध्यम से गुरु भक्ति का लाभ सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने लिया। दोपहर में चौंसठ ऋद्धि विधान सम्पन्न हुआ।

दीक्षा स्थली 'यरनाल' में बनेगा 'शान्ति स्तम्भ'

23 मार्च 2019 को मुख्य कार्यक्रम का प्रारंभ सुबह आचार्य श्री शान्तिसागरजी महाराज के जीवन चरित्र पर आधारित झाँकियों के जुलुस से हुआ। दोपहर 11 बजे से आचार्य शान्तिसागर मुनि दीक्षा शताब्दी महोत्सव आयोजित समिति की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सभा का आयोजन हुआ। जिसमें वर्षभर में होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा, आचार्यश्री की दीक्षा स्थली यरनाल के विकास संबंधी योजनाओं को सभी के सामने प्रस्तुत किया गया। यरनाल में निर्मित होने वाले 'शान्ति स्तम्भ' की रूपरेखा तथा उसकी उपयोगिता की जानकारी भी दी गई। दोपहर 2:30 बजे से मुख्य पाण्डाल में विनयांजलि सभा का आयोजन प्रारंभ हुआ। आचार्य श्री वर्धमानसागरजी की संघस्था बा.ब्र.पूनम दीदी ने मंगलाचरण कर शान्ति भक्ति सभा का प्रारंभ किया। कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य लोगों ने ज्ञान प्रकाश प्राप्त करने हेतु दीप प्रज्ज्वलन किया। मंच पर विराजित किये गये आचार्यश्री शान्तिसागरजी के चरण चिन्हों महाभिषेक किया गया। उक्त चरण श्री क्षेत्र में विराजमान किये जायेंगे। उसके पश्चात् आसपास की समाज से पधारे 108 जोड़े ने भक्तिपूर्वक पूजन सम्पन्न की। सभा में डॉ. श्रेयांस जैन बडौत एवं डॉ. अरुण जैन ने कहा कि आचार्य महाराज ने श्रमण संस्कृति को पुर्णजीवित कर दिगम्बर जैन समाज पर एक बहुत बड़ा उपकार किया। उनके इस अवदान को जन-‘जन तक प्रचारित करने के लिए विद्वत् समाजगण विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख देवें तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों में सेमीनारों का आयोजन करें। पूना से पधारे डॉ. कल्याणजी गंगवाल ने कहा कि महामना आचार्य महाराज का आशीष हमें गर्भावस्था में ही प्राप्त हुआ था, उनके आशीष के कारण ही बचपन से लेकर आजतक रत्नि में चारों प्रकार के आहार त्याग के नियम का परिपालन भलीभांति हो रहा है। उन्होंने गजपंथ क्षेत्र में अपनी ओर से शान्ति स्तम्भ बनाने की भी घोषणा की। भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात जैन, मुम्बई ने कहा कि आचार्य महाराज ने धर्मरक्षा हेतु जो त्याग मार्ग हमें दिखलाया वह अनुकरणीय है। उन्होंने अपनी ओर से एक प्राचीन जिनालय के



जीर्णोद्धार हेतु स्वीकृति प्रदान की। यरनाल में निर्मित होने वाले शान्ति स्तम्भ हेतु कटारिया परिवार अहमदाबाद तथा त्यागी निवास हेतु आर.के.मार्बल परिवार किशनगढ़ ने स्वीकृति प्रदान की।

दिग्म्बरत्व के अस्तित्व को बचाने का कार्य किया

आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ने अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए कहा कि चारित्र चक्रवर्ती आचार्य महाराज ने विषम परिस्थितियों में भी निर्दोष चर्या का पालनकर आगे आने वाले साधुओं के लिए जीवित मूलाचार उपलब्ध कराया। उन्होंने धर्म, शास्त्र और चर्या की रक्षाकर दिग्म्बरत्व के अस्तित्व को बचाया। उनके महान व्यक्तित्व को घर-घर तक पहुँचानें के लिए तथा उनकी स्मृतियों को चिर स्थाई बनाने के लिए इस एक वर्ष में हमें कई कार्यों को करना होगा। आज उनकी दीक्षा को 100 वां वर्ष प्रारंभ हो गया, परन्तु उनकी दीक्षा स्थली की ओर समाज का अभी तक ध्या नहीं नहीं गया, उसके विकास के लिए पूरे देश को मिलकर कार्य करना चाहिए ताकि आगे आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें जान सकें। उन महामना के मुनिदीक्षा शताब्दी वर्ष में होने वाले कार्यों में तन-मन-धन से भाग लेकर गुरुभक्ति कर अपने श्रद्धा सुमन अर्पण करें।

शताब्दी महोत्सव के शुभारंभ अवसर पर अरिहंतगिरि, कनकगिरि, कम्पदहली, वरूर, नांदणी तथा आरतीपुर के भद्रक स्वामीजी की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही। देशभर के गणमान्य समाज श्रेष्ठी श्री अशोक पाटनी आर.के.मार्बल, श्री राजेन्द्र कटारिया अहमदाबाद, श्री विवेक काला जयपुर, श्री अनिल सेठी बोंगलुरु, श्री निर्मल सेठी महासभा अध्यक्ष, श्री हसमुख गांधी इन्दौर, श्री प्रकाश मोदी पारस चेन्नै, श्री राकेश सेठी कोलकाता, श्री भरतजी काला सम्पादक-जैन गजट, श्री डॉ.आर.शाह इण्डी, श्री जयकुमार जैन जयपुर आदि प्रमुख लोग उपस्थित थे। शताब्दी महोत्सव के शुभारंभ पर राष्ट्रीय आयोजन समिति ने देशभर की समाज से आह्वान किया है कि वे अपने-अपने नगरों, गाँवों, शहरों में भी महामना आचार्यश्री शान्तिसागरजी के मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों तथा जन कल्याण के कार्यों को कर अपनी श्रद्धा भक्ति समर्पित कर सकते हैं। कार्यक्रम का हिन्दी में संचालन पं. महावीरजी शास्त्री सोलापुर ने किया।

अत्यंत उत्साह के साथ देशभर से पधारे समाज श्रेष्ठियों ने आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज के मुनिदीक्षा शताब्दी वर्ष को व्यापक तौर पर मनाने व उनके विचार सदेश को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया। हृष्णा क्षेत्र के भद्रक श्री देवेन्द्रकीर्तिजी ने सभी का उत्साहपूर्वक स्वागत सल्कार किया।

उदयपुर विश्वविद्यालय में सुनील व्याख्यानमाला (प्रथम) सम्पन्न

उदयपुर। दिनांक 30 मार्च 2019 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग में प.प. आचार्यश्री आदिसागर 'अंकलीकर' महाराज की पावन स्मृति में प्राकृत शिरोमणि आचार्यश्री सुनीलसागर व्याख्यानमाला (प्रथम) सम्पन्न हुई। प्राकृत जैन एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली-बिहार के निदेशक-प्रो. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार' ने 'अप्पा सो परमप्पा' की सार्वभौमिकता- आचार्य सुनीलसागरकृत प्राकृत साहित्य के सन्दर्भ में' विषय पर प्रमुख व्याख्यान दिया। प्रो. पारसमल कोठरी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जिनेन्द्र जैन ने संयोजन करते हुए आगान्तुक अतिथियों से सरस्वती देवी का माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन करवाया और डॉ. सुमत जैन के साथ संयुक्त रूप से स्वागत वक्तव्य दिया। भारतीय प्राकृत स्कॉलर्स सोसायटी-उदयपुर के अध्यक्ष प्रो. प्रेमसुमन जैन ने सारस्वत अतिथि के रूप

में विषय-भूमिका प्रस्तुत की। श्री अखिल भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन विद्वत् परिषद् के महामंत्री और आचार्य आदिसागर अंकलीकर अन्तर्राष्ट्रीय जागृति मंच के संयोजक डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'-इन्दौर ने अंकलीकर परम्परा का परिचय प्रस्तुत कर जागृति मंच के कार्य व उद्देश्यों को बताते हुए मंच की ओर से यह व्याख्यानमाला इसी रूप में निरन्तर चलाने की घोषणा की। सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय- मो.सुखाड़िया वि.वि. की अधिष्ठाता प्रो. साधना कोठरी ने मुख्य अतिथि के रूप में वक्तव्य दिया। प्रो. फौजदार के मुख्य व्याख्यान व अध्यक्षीय वक्तव्य के उपरान्त डॉ. ज्योतिबाबू ने धन्यवाद ज्ञापित किया। व्याख्यानमाला के इस प्रथम प्रकल्प के पुण्यार्जक जागृति मंच के प्रान्तीय मंत्री श्री बलभद्र जैन-बांसवाड़ा (राज.) थे। कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत एवं समापन राष्ट्रगान से हुआ।

● डॉ. ज्योतिबाबू जैन, उदयपुर

अ.भा. दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा की महिला प्रकोष्ठ का गठन



सरिता आदित्य
अध्यक्ष
महिला इकाई भोपाल



आशा सुदर्शनी
मंत्री
महिला इकाई भोपाल



निधि जैन 'खाद'
अध्यक्ष
महिला इकाई सागर-2



मृदुलता जैन
मंत्री
महिला इकाई सागर-2



सीमा पारस जैन
अध्यक्ष
महिला इकाई दमोह



कविता जैन
मंत्री
महिला इकाई दमोह



आशा सेन
अध्यक्ष
महिला इकाई सागर-1



सुनीता अरिहंत
मंत्री
महिला इकाई सागर-1

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा को मजबूत करने और समाज के सर्वांगीण विकास के लिए महिला सभा (प्रकोष्ठ) का गठन किया गया है जिसके अंतर्गत निम्न स्थानों पर महिला इकाइयों का गठन करते हुए कार्यकारिणी का मनोनयन किया गया जिसमें सागर की दोनों इकाइयों का संरक्षक मंडल निम्नानुसार है :-

संरक्षक :

1- श्रीमती आशारानी मलैया	5- श्रीमती रश्मि रितु जैन
2- श्रीमती शकुंतला जैन	6- श्रीमती क्रांति जैन
3- श्रीमती नूतन नाहर	7- श्रीमती संध्या राधेलिया
4- डॉ आशा गोदेरे	8- श्रीमती संगीता पडले

महिला इकाई सागर-1

पदाधिकारी :

- 1- श्रीमती आशा/श्री प्रदीप सेठ
- 2- श्रीमती हिमांशी/श्री अजय जैन मगरदा
- 3- श्रीमती सुनीता/श्री मुकेश जैन 'अरिहंत'
- 4- श्रीमती सुलेखा / श्री शरद जैन
- 5- श्रीमती रजनी /चौधरी अरविंद जैन
- 6- श्रीमती सीमा / श्री महेंद्र जैन बहरोल
- 7- श्रीमती ज्योति /श्री विनय बम्होरी
- 8- श्रीमती प्रमिला/श्री दिनेश जैन 'शिल्पी'
- 9- श्रीमती आभा/ श्री आशीष चौधरी
- 10- श्रीमती ममता/ श्री प्रमोद जैन
- 11- श्रीमती संध्या/श्री राकेश जैन (प्लास्टिक)
- 12- श्रीमती अर्चना/ श्री हेमंत जैन खाद
- 13- श्रीमती सीमा/ श्री नवीन जैन

- अध्यक्ष
- उपाध्यक्ष
- मंत्री
- कोषाध्यक्ष
- उपमंत्री
- कार्य. सदस्य

14- श्रीमती मुक्ता/ श्री संदीप जैन खट्टौरा

15- श्रीमती आरती/ श्री संजय सर्वाई

16- श्रीमती प्रिया/ श्री मनीष जैन बम्होरी

कार्य. सदस्य

कार्य. सदस्य

कार्य. सदस्य

महिला इकाई सागर-2

पदाधिकारी :

- 1- श्रीमती निधि/श्री सुभाष जैन (खाद)
 - 2- श्रीमती आरती/श्री शैलेन्द्र घड़ी
 - 3- श्रीमती सुषमा/स्व. अरविंद जैन जैन 'गोना'
 - 4- श्रीमती मृदुलता /श्री मनोज जैन (पंडित)
 - 5- श्रीमती मंजू / श्री मनोज जैन
 - 6- श्रीमती अनीता/ डॉ. राकेश विद्वास
 - 7- श्रीमती अंजू/श्री सुरेन्द्र सेठ
 - 8- श्रीमती सुशीला बेबी/ श्री निर्मल जैन
 - 9- श्रीमती सरोज/सेठ श्री सनतकुमार (अजंता)
 - 10- श्रीमती सुषमा /श्री अशोक जैन (पिढ़ुआ)
 - 11- श्रीमती वीणा /मनोज जैन बंगेला
 - 12- श्रीमती किरण /श्री वीरेंद्र जैन सेसई
 - 13- श्रीमती अंजना/श्री मुकेश जैन
 - 14- श्रीमती अनीता/श्री संतोष 'छाया'
 - 15- श्रीमती ऋचा /श्री अनिमेष शाह
 - 16- श्रीमती मंजरी/ श्री दिनेश जैन
 - 17- श्रीमती पूजा/श्री ऋषि सिंघई
- अध्यक्ष
 - उपाध्यक्ष
 - उपाध्यक्ष
 - मंत्री
 - कोषाध्यक्ष
 - उपमंत्री
 - उपमंत्री
 - कार्य. सदस्य
 - कार्य. सदस्य

महिला इकाई भोपाल

संरक्षक : 1- श्रीमती किरण जैन / श्री आर. सी. जैन
2- श्रीमती ममता जैन / श्री अशोक जैन

पदाधिकारी :

- | | |
|--|--------------|
| 1- श्रीमती सरिता आदित्य/ श्री निशिकांत आदित्य | अध्यक्ष |
| 2- श्रीमती मणि जैन /स्व. श्री व्ही. के. जैन | उपाध्यक्ष |
| 3- श्रीमती आशा / श्री अशोक खुरेलीय | मंत्री |
| 4- श्रीमती पुष्पलता जैन / श्री विनोद जैन | कोषाध्यक्ष |
| 5- श्रीमती अंजुलता जैन / श्री महेश जैन | उपमंत्री |
| 6- श्रीमती शकुन जैन / श्री रामचरण जैन | उपमंत्री |
| 7- श्रीमती सुजाता जैन / श्री विजय जैन | कार्य. सदस्य |
| 8- श्रीमती रितिका जैन / श्री कमलेश जैन | कार्य. सदस्य |
| 9- श्रीमती सविता जैन / श्री ब्रतेश जैन | कार्य. सदस्य |
| 10- श्रीमती वर्षा सेठ / श्री सचिन जैन | कार्य. सदस्य |
| 11- श्रीमती अर्चना / श्री राजेंद्र जैन बागमुगालिया | कार्य. सदस्य |

महिला इकाई दमोह

संरक्षक : 1- श्रीमती तारा जैन /स्व. श्री कुंदनलाल जैन
2- श्रीमती रोहिणी जैन / श्री कोमलचंद जैन

- 3- श्रीमती अनीता जैन / डॉ चेतन जैन
- 4- श्रीमती क्रांति जैन / श्री प्रकाशचंद जैन
- 5- श्रीमती उषा जैन / श्री रमेश चंद जैन
- 6- श्रीमती मालती जैन / श्री खेमचंद जैन

पदाधिकारी:

- | | |
|--|--------------|
| 1- श्रीमती सीमा जैन / श्री पारस जैन | अध्यक्ष |
| 2- श्रीमती संध्या जैन / श्री सतीश जैन | उपाध्यक्ष |
| 3- श्रीमती कविता जैन / श्री ऋषभ जैन | मंत्री |
| 4- श्रीमती अर्चना जैन / श्री राजीव जैन | कोषाध्यक्ष |
| 5- श्रीमती ज्योति जैन / श्री मनीष जैन | उपमंत्री |
| 6- श्रीमती अर्चना (मोहिनी) / श्री मनोज जैन | उपमंत्री |
| 7- श्रीमती मंजू जैन / श्री मदन जैन | कार्य. सदस्य |
| 8- श्रीमती कांति जैन / श्री नरेंद्र जैन | कार्य. सदस्य |
| 9- श्रीमती नीलू जैन / श्री ऋषभ जैन | कार्य. सदस्य |
| 10- श्रीमती शोभा जैन / श्री रुपेश जैन | कार्य. सदस्य |
| 11- श्रीमती सुषमा जैन / श्री के. पी. जैन | कार्य. सदस्य |
| 12- श्रीमती मधु जैन / श्री संजय जैन | कार्य. सदस्य |
| 13- श्रीमती प्रमिला जैन / श्री अजित जैन | कार्य. सदस्य |

अ.मा. दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा की महिला प्रकोष्ठ की गतिविधियाँ

महिला इकाई भोपाल



श्रीमती मंजू टी.सी. जैन पारस जन कल्याण संस्थान के वरिष्ठ सदस्य
के सहयोग से रिवचड़ी एवं कम्बल वितरण

गोलापूर्व महिला इकाई भोपाल ने पुलवामा में शहीद हुए
अमर जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित कीं।



गोलापूर्व महिला इकाई भोपाल ने नववर्ष मिलन कार्यक्रम में वरिष्ठजन का
महासभा की ओर से सम्मान किया और विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं

गोलापूर्व महिला इकाई भोपाल ने वृद्धाश्रम में
वृद्धों के साथ दीपावली मनाई

महिला इकाई छिंदवाड़ा



होली मिलन



मतदाता जागरूकता टेली



नववर्ष मिलन समारोह

महिला इकाई दमोह



मूक बधिर बच्चों के साथ नववर्ष मनाया



पुलवामा में हुए शहीदों को श्रद्धांजलि



चन्द्रप्रभु चालीसा का पाठ

महिला इकाई इंदौर



महावीर जयंती पर चाचा नेहरू हॉस्पिटल इंदौर में फल वितरण



महिला दिवस पर महिलाओं का सम्मान

महिला इकाई सागर



मौन जुलूस निकालकर पुलवामा के शहीद सौनिकों को श्रद्धांजलि दी



भक्तामर पाठ का आयोजन

» प्रेषक : चक्रेश शास्त्री, भोपाल

अखिल भारतवर्षीय दि. जैन गोलापूर्व महासभा का 14वाँ परिचय सम्मेलन एवं शताब्दी समारोह



हार्दिक शुभकामनाएँ...



VIP
HAPPY JOURNEY

Aristocrat
LUGGAGE



सनतोष कुमार जयकुमार

वी.आई.पी. एरिस्टोक्रेट, अमेरिकन ट्रूरिस्टर सूटकेस, ब्रीफकेस
स्ट्राली, लेडीज पर्स, विवाह शादी के हारमुकुट, टार्च, ताला
छाता, हौजरी, सौन्दर्य सामग्री व उपहार सामान के विक्रेता

कटरा बाजार, सागर (म.प्र.) 470 002
फोन-07582-243755